खंड

3

पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और विकास

इकाई 7
शब्द : अवधारणा और आयाम 131

इकाई 8
पारिभाषिक शब्दावली : प्रकृति, प्रकार और अभिलक्षण 150

इकाई 9
पारिभाषिक शब्दावली का विकास और मानकीकरण 164

खंड 3 का परिचय

अनुवाद अध्ययन में एम.ए. कार्यक्रम (एम.ए.टी.एस.) के 'कोशविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद' संबंधी पाठ्यक्रम का यह तीसरा खंड है। यह खंड पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा से संबंधित है। यह अवधारणा मोटे तौर पर कोश एवं कोशविज्ञान से ही जड़ी हुई है, क्योंकि इसका संबंध भी शब्दों और उनमें निहित अर्थों-समतुल्य पर्यायों आदि जैसे आयामों से है। हालाँकि तात्त्विक दृष्टि से कोश, कोशविज्ञान और पारिभाषिक शब्दावली मूलतः एक ही हैं, लेकिन पारिभाषिक शब्दावली एक विशिष्ट अवधारणा भी है। इसकी प्रकृति, प्रकार, अभिलक्षण, विकास-प्रक्रिया, विचारधाराएँ-दृष्टिकोण, सिद्धांत, युक्तियाँ/तकनीकें आदि पक्ष अलग से विवेचन की अपेक्षा रखते हैं। इसीलिए इस पाठ्यक्रम में कोशविज्ञान की अवधारणा आदि पक्षों को अध्ययन का विषय बनाने के साथ-साथ पारिभाषिक शब्दावली से संबंधित विभिन्न आयामों पर अलग दो खंडों में चर्चा की जा रही है।

खंड 3 **'पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और विकास'** से संबंधित है। इस खंड में तीन इकाइयाँ हैं।

पारिभाषिक शब्दावली में मूलतः शब्द ही होते हैं। इसलिए इसकी अवधारणा और इससे जुड़े विभिन्न आयामों के बारे में चर्चा करने से पहले यह जानना जरूरी है कि 'शब्द' से क्या तात्पर्य है? इसलिए इस खंड की इकाई 7 में **'शब्द : अवधारणा और आयाम'** को प्रस्तुत किया गया है। इसमें शब्द से तात्पर्य और महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ-साथ शब्दों के स्रोत, प्रकार और निर्माण-प्रक्रिया को विवेचित किया गया है। इकाई में यह भी बताया गया है कि शब्द शक्तियाँ से क्या अभिप्राय है? और अनुवाद में उनकी क्या भूमिका है? वहीं, अंत में शब्द संपदा और अनुवाद पर चर्चा के साथ-साथ अनुवाद में शब्द के महत्त्व को रेखांकित किया गया है।

इकाई 8 का शीर्षक **'पारिभाषिक शब्दावली : प्रकृति, प्रकार और अभिलक्षण'** है। इसमें पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ और उसकी परिभाषा देने के साथ-साथ इसके प्रकारों के बारे में बताया गया है। सामान्य तथा पारिभाषिक शब्द में समानता और अंतर स्पष्ट करने के पश्चात इस इकाई में पारिभाषिक शब्दावली के अभिलक्षणों पर भी सविस्तार चर्चा की गई है।

इकाई 9 **'पारिभाषिक शब्दावली का विकास और मानकीकरण'** से संबंधित है। इस इकाई के जरिए पारिभाषिक शब्दावली की सहज एवं नियोजित विकास प्रक्रिया के बारे में बताया गया है और पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा से परिचित कराया गया है। शब्दावली निर्माण की इस परंपरा को स्वतंत्रता-पूर्व एवं स्वतंत्रता के पश्चात शब्दावली निर्माण के प्रयासों के रूप में देखा गया है। इसके अलावा, इस इकाई में पारिभाषिक शब्दावली के मानकीकरण के प्रयासों और समस्याओं को भी विवेचित किया गया है।

इकाई 7 शब्द : अवधारणा और आयाम

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 शब्द से तात्पर्य

7.3 शब्द का महत्त्व

7.4 भाषा के तत्त्व

- 7.4.1 अर्थ तत्त्व
- 7.4.2 संबंध तत्त्व

7.5 शब्दों के स्रोत

- 7.5.1 तत्सम शब्द
- 7.5.2 तद्भव शब्द
- 7.5.3 देशज शब्द
- 7.5.4 विदेशी शब्द
- 7.5.5 संकर शब्द

7.6 शब्दों के प्रकार

- 7.6.1 रूढ़ शब्द
- 7.6.2 यौगिक शब्द
- 7.6.3 योगरूढ़ शब्द

7.7 शब्द-निर्माण की प्रक्रिया

- 7.7.1 उपसर्ग-प्रत्यय की सहायता से शब्द-निर्माण
- 7.7.2 संधि-समास की सहायता से शब्द-निर्माण

7.8 शब्द शक्तियाँ से अभिप्राय और अनुवाद में उनकी भूमिका

- 7.8.1 शब्द शक्ति : अभिप्राय और प्रकार
- 7.8.2 शब्द शक्तियों की अनुवाद में भूमिका

7.9 शब्द-संपदा और अनुवाद

7.10 अनुवाद में शब्द-चयन का महत्त्व

7.11 सारांश

7.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

7.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- यह बता सकेंगे कि 'शब्द' किसे कहते हैं;
- भाषा और समाज में शब्द के महत्त्व को समझ सकेंगे;
- शब्दों के स्रोत का उल्लेख कर सकेंगे और इनके प्रकारों को जान सकेंगे;
- शब्द-निर्माण की प्रक्रिया को समझ सकेंगे;
- यह जान सकेंगे कि शब्द शक्तियाँ क्या हैं तथा अनुवाद में उनकी क्या भूमिका है; और
- अनुवाद में शब्द-संपदा के महत्त्व को समझ सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

'कोशविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद' शीर्षक इस पाठ्यक्रम के पहले दो खंडों में आप कोश और कोशविज्ञान की अवधारणा के साथ-साथ कंप्यूटर कोश और अनुवाद जैसे पक्षों को जान चुके हैं। अब आप कोश और कोशविज्ञान के अर्थ और स्वरूप के साथ-साथ कोशों के प्रकार और कोश-उपयोग की प्रविधि को भली प्रकार से समझ चुके होंगे। इसके साथ ही आप यह भी समझ चुके हैं कि कोश निर्माण की प्रक्रिया क्या है, कंप्यूटर कोश और ऑनलाइन कोश क्या हैं। इन सभी पक्षों के बारे में जानकारी के साथ-साथ आप यह भी समझ चुके हैं कि अनुवाद में कोशों की क्या उपयोगिता है।

इसके बाद अब हम 'पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और विकास' शीर्षक इस तीसरे खंड के अंतर्गत पारिभाषिक शब्दावली की प्रकृति, प्रकार और अभिलक्षण के साथ-साथ इसके विकास के बारे में जानेंगे। इसके बाद पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद का अध्ययन करेंगे। लेकिन जब हम पारिभाषिक की प्रकृति, प्रकार आदि पक्षों पर विचार करते हैं तो सबसे पहले हमारे समक्ष यह प्रश्न उभरता है कि 'शब्द' क्या है? इसलिए प्रस्तुत इकाई शब्द की अवधारणा एवं उसके आयामों पर केंद्रित की जा रही है।

वैसे तो भाषा की सबसे लघुतम इकाई 'ध्वनि' है, किंतु सार्थक एवं स्वतंत्र रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई 'शब्द' है। अनुवाद-शिक्षण के संदर्भ में वस्तुतः विद्यार्थी सबसे पहले वाक्य से परिचित होते हैं और वाक्य का अर्थ ग्रहण करते हुए शब्दों के माध्यम से लक्ष्य भाषा के पर्याय की ओर बढ़ते हुए लक्ष्य भाषा के शब्दों के जरिए नवीन वाक्य संरचना करते हैं। अनुवादक द्वारा की गई इस वाक्य संरचना में अर्थ एवं भाषा की दृष्टि से एकरूपता होती है। शब्द के अर्थ एवं संबंध तत्त्व हमें यह बताते हैं कि संदर्भ एवं परिस्थितियों के अनुकूल भिन्न-भिन्न अर्थों के लिए एक शब्द अथवा एक ही अर्थ के लिए भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग होता है। इस इकाई में शब्द के तात्पर्य और महत्त्व को स्पष्ट करने के साथ-साथ इस पक्ष पर भी विचार किया जाएगा। साथ ही, इस इकाई में स्रोत, रचना आदि के आधार पर शब्दों की रूप परिवर्तनशीलता एवं उसके अर्थ-विस्तार की विविधता का परिचय भी प्रस्तुत किया जाएगा।

'शब्द' बहु-आयामी छवियों वाला भाषा का वह महत्त्वपूर्ण उपादान है जिसमें शब्द शक्तियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इन शब्द शक्तियों के बारे में भी इस इकाई में जानकारी दी जा रही है। शब्द शक्तियों के बारे में परिचय प्राप्त करके आप अनुवाद में उसकी भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे। इसके साथ-साथ आप अनुवाद में शब्द-संपदा की भूमिका के बारे में भी विस्तार से बता सकेंगे। आइए सबसे पहले यह जानें कि 'शब्द' से क्या तात्पर्य है।

7.2 शब्द से तात्पर्य

विभिन्न ग्रंथों, शब्दकोशों के अध्ययन के पश्चात किसी भी भाषा में 'शब्द' (word) की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है – 'किसी भी भाषा की लघुतम, सार्थक एवं स्वतंत्र इकाई को शब्द कहते हैं।' इस परिभाषा पर ध्यान देने से हम यह पाते हैं कि :

- शब्द भाषा की लघुतम सार्थक इकाई होती है।
- शब्द स्वतंत्र होते हैं।
- प्रत्येक शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है।

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि 'शब्द' भाषा की स्वतंत्र इकाई है। वाक्यों की रचना शब्दों से होती है। लेकिन शब्दों को यथावत हम एक स्थान पर रख दें तो सार्थक वाक्य नहीं बन पाता। उदाहरण के लिए, यदि 'लड़का डंडा कुत्ता मारा' शब्दों को एक-साथ रखकर बोलते हैं तो यह सार्थक वाक्य नहीं कहलाएगा। इन शब्दों से युक्त सार्थक वाक्य होगा – 'लड़के ने कुत्ते को डंडे से मारा'। अर्थात 'लड़का' शब्द को 'लड़के', 'कुत्ता' शब्द को 'कुत्ते', 'डंडा' शब्द को 'डंडे' के रूप में बदलना होगा। कहने का अभिप्राय यह है कि वाक्य को सार्थक बनाने के लिए शब्दों में व्याकरणिक व्यवस्था के आधार पर थोड़ा-बहुत परिवर्तन करना होगा। इस

वाक्य में यह परिवर्तन 'ने', 'को', 'से' परसर्गों के प्रभाव से हो रहा है। इस प्रकार ये शब्द नए नहीं हैं बल्कि 'लड़का', 'कुत्ता', 'डंडा' शब्दों से बने शब्द-रूप हैं। व्याकरण में इन्हें 'पद' (form) कहा जाता है। किसी भी भाषा में पद उसके व्याकरणिक नियमों के आधार पर परिवर्तित होते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि **'वाक्य में प्रयुक्त होने वाले रूप 'शब्द-रूप' अथवा 'पद' कहलाते हैं।'**

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि शब्द की सत्ता वाक्य से बाहर है। वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' कहलाता है। परंतु शब्द तब तक 'पद' नहीं बनता जब तक कि उसमें कोई शब्द रूप बनाने वाला प्रत्यय न लगे। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित शब्द, उनमें लगे प्रत्यय और वाक्यों को देखिए:

लड़का + ए = लड़के	लड़के को बुलाओ।
लड़का + ओं = लड़कों	लड़कों को बुलाओ।

आइए अब हम शब्द और पद की प्रकृति पर थोड़ा और विचार करें।

शब्दों का निर्माण वर्णों के मेल से होता है। उदाहरण के लिए, घ् + ओ + ड् + आ = घोड़ा; भ् + आ + ल् + ऊ = भालू।

लेकिन आपको यह भी ध्यान रखना होगा कि किसी भी वर्ण अथवा ध्वनि समूह को शब्द नहीं कहा जा सकता। जैसे, 'म+क+ल' वर्णों के योग से बना 'मकल' एक ध्वनि समूह तो है किंतु इसका कोई अर्थ नहीं है। इसलिए 'मकल' को शब्द नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसका कोई सुनिश्चित अर्थ नहीं है। इसमें अर्थ की प्रतिष्ठा नहीं की गई है। यदि इन वर्णों का क्रम बदल दिया जाए अर्थात 'क+म+ल' = 'कमल' कर दिया जाए तो उसे शब्द कहेंगे क्योंकि इससे एक निश्चित अर्थ की अभिव्यक्ति हो रही है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि निरर्थक ध्वनि-समूह को शब्द नहीं कहा जा सकता और प्रत्येक शब्द में प्रत्येक वर्ण का एक निश्चित स्थान होता है। वही निश्चित स्थान उसे सार्थक इकाई बनाता है। इस क्रम के अभाव में वह निरर्थक इकाई बन जाता है।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि जब कोई शब्द व्याकरण के नियमों में बंधकर वाक्य में एक निश्चित स्थान पर प्रयुक्त होता है तो वह 'पद' बन जाता है। शब्दों का वाक्य में प्रयोग करते समय व्याकरण के नियमों (यानी लिंग, वचन, कारक आदि) का भी ध्यान रखना पड़ता है। व्याकरणिक आवश्यकताओं के अनुसार इन शब्दों का रूप भी बदल जाता है।

शब्द में संबंध तत्त्व (अर्थात कारक चिह्न, प्रत्यय आदि) जोड़कर 'रूप' अथवा 'पद' की रचना की जाती है। उदाहरण के लिए, ये तीन शब्द देखिए – 'राम', 'आम', 'खाना'। इन तीन शब्दों में से दो शब्द (राम और आम) संज्ञा शब्द हैं और तीसरा शब्द (अर्थात 'खाना') क्रिया शब्द है। परंतु निम्नलिखित वाक्य में प्रयुक्त होने पर परसर्गों तथा प्रत्ययों के साथ जुड़कर ये शब्द बन गए हैं – 'राम ने आमों को खाया।' आपने गौर किया होगा कि अभीष्ट अर्थ की प्राप्ति के लिए व्याकरणिक नियमों में बंधकर इन तीनों शब्दों के रूप में परिवर्तन आ गया है।

आइए इसी तथ्य को एक और उदाहरण की सहायता से समझें। उदाहरण के लिए, 'लड़की', 'गाना' और 'गाना' शब्द देखिए। हालाँकि इनमें से अंतिम (दो) शब्द दो बार प्रयुक्त किए गए हैं यानी पुनरावृत्त हुए हैं, किंतु इनमें से एक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है और दूसरा क्रिया के रूप में। इन तीनों शब्दों से अभीष्ट अर्थ की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित वाक्य देखिए :

लड़कियों		ने		गाने		गाए।
लड़की + (यों)	+	ने (परसर्ग)	+	गाना+(ए)	+	गाना+(ए)
↓		↓		↓		↓
बहुवचन		परसर्ग		बहुवचन		भूतकाल

इस प्रकार आपको यह पूरी तरह से स्पष्ट हो गया होगा कि अभीष्ट अर्थ की प्राप्ति के लिए परसर्गों और प्रत्ययों का किस प्रकार प्रयोग किया जाता है और शब्द को पद के रूप में कैसे परिवर्तित किया जाता है।

7.3 शब्द का महत्त्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर वह अपने भावों और विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है। विचारों का यह आदान-प्रदान 'संप्रेषण' कहलाता है। इस संप्रेषण के कई साधन हैं। कभी ये साधन सांकेतिक होते हैं, कभी मौखिक और कभी लिखित। हमारा यहाँ तात्पर्य संप्रेषण के मौखिक एवं लिखित रूप से ही है।

संप्रेषण के मौखिक एवं लिखित रूप में शब्दों का विशेष महत्त्व है। शब्द ही वाक्य रूपी माला में व्याकरणिक नियमों के अनुसार गूंथकर सार्थक भावों और विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। शब्द के बिना दुनिया की किसी भी भाषा की कल्पना नहीं की जा सकती। शिशु जन्म लेने के बाद अपने भाषिक कौशल का आरंभ कुछ निरर्थक ध्वनियों से करता है। हालाँकि किसी भी माँ के लिए ये ध्वनियाँ निरर्थक नहीं होती हैं क्योंकि वह बच्चे की जरूरत एवं आवश्यकता को भली प्रकार से समझती है। किंतु भाषाई दृष्टि से ये ध्वनियाँ निरर्थक ही कही जा सकती हैं। समय के साथ-साथ जब बच्चा बड़ा होता चलता है तो वह शब्द का वाचन करना शुरू करता है और फिर कालक्रम के अनुसार शब्द से वाक्य एवं वाक्य से अनुच्छेद बनाना तथा उनका वाचन करना सीख लेता है। शिशु की सीखने या भाषा-अर्जन की यह प्रक्रिया स्वतःस्फूर्त होती है। वह अनुकरण के द्वारा भाषा का प्रयोग करना सीखता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा में सार्थक शब्दों के उच्चारण और लेखन में मनुष्य अपने जन्म से ही दक्षता प्राप्त करता चला जाता है।

भाषाई आधार पर हम शब्दों का निर्माण वर्णों से करते हैं और शब्दों तथा व्याकरणिक पदों की सहायता से वाक्य संरचना की ओर आगे बढ़ते हैं। इससे सिद्ध होता है कि शब्दों का वाक्यों में कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है और शब्दों की अनुपस्थिति में भाषा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हालाँकि कुछ शब्द एकल होते हुए भी अपने अर्थ के द्वारा भाव की संपूर्ण अभिव्यक्ति करते हैं। दूसरी ओर ऐसा भी हो सकता है कि कुछ भावों और विचारों के लिए शब्दों की एक लंबी शृंखला की जरूरत पड़े। उदाहरण के लिए, एक शब्द लीजिए – 'ठहरिए'। इस एकल शब्द से ही अर्थ का पूरी तरह से बोध हो जाता है। किंतु, यदि इसके स्थान पर 'ठहराव' शब्द का प्रयोग किया जाए तो हमें यह पता नहीं चल पाएगा कि यह ठहराव 'जीवन का है', 'प्रगति का है', बीच रास्ते में कहीं रुकने का है', 'भाषा में रुकने का है' आदि। ऐसे में यदि पूर्ण अर्थ को व्यक्त करना है तो इसके लिए हमें और अधिक शब्दों का प्रयोग करना होगा और वह भी व्याकरणिक नियमों की एक शृंखला में।

भाषा में शब्दों का क्रम भी बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। यदि शब्दों का यह क्रम व्याकरणिक ढाँचे में न हो या अपने निश्चित स्थान पर न हो तो हम अभीष्ट अर्थ को पकड़ नहीं पाएँगे और अर्थ का अनर्थ कर सकते हैं। इसे स्पष्ट करने के लिए हम तीन अन्य शब्दों का एक उदाहरण लेते हैं। ये तीन शब्द हैं – 'राम', 'रावण' और 'मारा'। अगर हम इन तीनों शब्दों का वाक्य में प्रयोग करते हुए स्थान बदल दें तो वाक्य में अर्थ-दोष उत्पन्न हो जाएगा। उदाहरण के लिए, इन तीनों शब्दों की सहायता से निर्मित निम्नलिखित वाक्य देखिए :

1. राम ने रावण को मारा।
2. रावण को राम ने मारा।
3. मारा रावण ने राम को।
4. ने राम रावण को मारा।
5. मारा रावण को राम ने।
6. रावण ने राम को मारा।
7. को रावण राम ने मारा।

उक्त सभी वाक्यों में से व्याकरणिक दृष्टि से पहला, तीसरा और चौथा वाक्य ही अभीष्ट अर्थ को अभिव्यक्त करने वाला कहा जा सकता है। वैसे, इनमें से चौथा वाक्य संदर्भों एवं परंपरा के अनुसार अशुद्ध है क्योंकि भारतीय मिथक के अनुसार राम ने रावण को मारा था, न कि रावण ने राम को। इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा में संदर्भों और परिस्थितियों का कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः वाक्यों में हम संदर्भों और परिस्थितियों का ध्यान रखकर ही अभीष्ट शब्दों का प्रयोग करते हैं। शब्दों के इन्हीं सही पर्यायों का चयन एवं उनका सुंदर प्रयोग भाषा को एक उपयुक्त अर्थ-छवि एवं गरिमा प्रदान करता है। शब्दों के इन सटीक चयनों के कारण ही हम भाषा के माध्यम से अपने भावों और विचारों का प्रभावपूर्ण संप्रेषण कर सकते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि भाषा में सटीक शब्द-चयन का विशेष महत्त्व है। यही स्थिति अनुवाद में भी है। इसी को वहाँ 'selection of appropriate word' कहा जाता है।

भाषा में लाखों प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है, लेकिन भाषिक प्रयुक्ति में शब्दों का चयन और उसका स्थान निर्धारण, कथन की अर्थवत्ता और व्याकरणिक नियमों के आधार पर किया जाता है। इस दृष्टि से संदर्भ एवं सामाजिक प्रयुक्ति का भी विशेष ध्यान रखा जाता है, क्योंकि थोड़ी-सी चूक से अर्थ का अनर्थ हो सकता है। भाषाई व्यवहार में प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने स्तर एवं व्यवसाय के अनुसार भाषिक शब्दों का चयन या शब्द के पर्यायों का चयन करता है तथा व्याकरणिक नियमों में आबद्ध कर उसकी अभिव्यक्ति करता है। मातृभाषा और बोलचाल की भाषा में शब्दों का यह चयन स्वतःस्फूर्त होता है। किंतु अनुवाद में शब्दों के चयन में विशेष सावधानी की जरूरत होती है। इसके लिए शब्दों का बृहद ज्ञान और लक्ष्य भाषा की व्याकरणिक संरचना का ज्ञान अनुवादक के लिए अपेक्षित होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा और अनुवाद में शब्द एवं शब्द चयन कितना महत्त्वपूर्ण होता है।

शब्द को वेदों में 'ब्रह्म' कहा गया है। शब्दों में बड़ी शक्ति है – जोड़ने की भी और तोड़ने की भी। शब्द अक्षर, अजर-अमर और अनादि-अनंत हैं। शब्द की पहुँच संसार के प्रत्येक क्षेत्र में है, प्रत्येक विषय में है। शब्दों के बिना न ज्ञान है, न विज्ञान। शब्द के बिना न मनुष्य है, न समाज, न देश। जो व्यक्ति शब्द पर अपना अधिकार जमा लेते हैं वे दूसरों पर अपना प्रभुत्व, सहज ही जमा लेते हैं। वे हर कार्य में सफल होते हैं। जिनका शब्द-सामर्थ्य सबसे अधिक होता है, वही एक कुशल वक्ता, कुशल लेखक, अच्छा नेता या कुशल अनुवादक हो सकता है। दरअसल 'शब्द' गठित वाक्यों में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा ही व्यक्ति के व्यक्तित्त्व की पहचान बनती है। ठीक वैसे ही जैसे किसी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा होती है।

समाज में भी शब्दों का विशेष महत्त्व है। सामाजिक विचार एवं भाव-विनिमय का आधार शब्दों पर ही टिका है। चूँकि भाषा, शब्दों के बिना नहीं हो सकती है इसलिए शब्दों के बिना समाज की भी कल्पना नहीं की जा सकती।

7.4 भाषा के तत्त्व

भाषा के दो तत्त्व होते हैं – अर्थ तत्त्व; और संबंध तत्त्व। हर सार्थक शब्द का जो अर्थ होता है, वही अर्थ तत्त्व होता है। संबंध तत्त्व से अभिप्राय शब्दों के आपसी संयोजन और जुड़ाव से है।

7.4.1 अर्थ तत्त्व

प्रत्येक सार्थक शब्द अपने में एक विशिष्ट अर्थ को समाहित किए हुए होता है। हर सार्थक शब्द का अपना एक निश्चित अर्थ होता है। एक प्रकार के शब्द विभिन्न अर्थों के लिए प्रयुक्त होते हैं। साथ ही, एक ही अर्थ के लिए विभिन्न प्रकार के शब्द प्रयुक्त होते हैं। वस्तुतः शब्द प्रयोग में संदर्भ एवं परिस्थितियों की विशेष भूमिका होती है अर्थात जीवन की विविध स्थितियों, प्रसंगों और संदर्भों के अनुकूल शब्दों का विविध प्रयोग होता है। उदाहरण के तौर पर हम 'जल' शब्द को ले सकते हैं, जिसका अर्थ है -'पानी'। इसी प्रकार 'वारि' शब्द का अर्थ भी 'पानी' ही होता है। 'पानी', 'जल' और 'वारि', ये तीनों ही शब्द एक-दूसरे के पर्याय हैं। किंतु ध्यान देने की बात यह है कि हम इनका प्रयोग संदर्भ एवं परिस्थितियों के अनुसार ही करते हैं। शब्दों की यह विशिष्टता उसके अर्थ-तत्त्व के कारण ही उत्पन्न होती है। इस आधार पर यह कहना सर्वथा अनुचित न होगा कि कोई शब्द किसी दूसरे शब्द का पर्याय नहीं होता। प्रत्येक शब्द का संदर्भगत अर्थ ही उसे विशिष्ट प्रायोगिक पहचान प्रदान करता है।

इसी कारण, अलग-अलग संदर्भों में समान शब्दों का भी अलग-अलग अर्थ होता है। इसे और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम सोदाहरण चर्चा करते हैं। जैसे, निम्नलिखित वाक्यों को देखिए, जिसमें 'बाल' शब्द भिन्न-भिन्न अर्थ में प्रयुक्त हुआ है :

(क) गेहूँ के बाल पुष्ट हो गए।

(ख) कृष्ण की बाल लीलाएँ मनोहारी हैं।

(ग) नाई ने बाल शीघ्रता से काट दिए।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि किसी भी शब्द का अर्थ बोध करते समय उसके कोशगत अर्थ और संदर्भगत प्रयोग, दोनों का ध्यान रखना आवश्यक है।

7.4.2 संबंध तत्त्व

संबंध तत्त्व उसे कहते हैं जो दो अथवा उससे अधिक शब्दों को आपस में संबद्ध करे अथवा जोड़े। शब्द में संबंध तत्त्व जोड़कर ही पद या रूप (form) की रचना की जाती है। इसके कई आधार हो सकते हैं। जैसे, शब्द स्थान, ध्वनि प्रस्थापन, बलाघात, संहिता आदि। आइए, अब इनपर क्रमशः विचार करें।

शब्द स्थान : शब्दों का स्थान कभी-कभी संबंध तत्त्व का काम करता है। उदाहरण के लिए, जब हम यह कहते हैं कि 'राजसदन' तो इसका अर्थ होता है – 'राजा का घर' और यदि हम इन दोनों शब्दों (राज सदन) का स्थान बदलकर 'सदन राज' कर दें तो इसका अर्थ हो जाएगा – 'घरों का राजा' (अर्थात बहुत अच्छा अथवा बड़ा घर)। इसी प्रकार, 'ग्राम मल्ल' और 'मल्ल ग्राम' शब्दों को लिया जा सकता है, जिनका क्रमशः अर्थ है – 'गाँव का पहलवान' और 'पहलवानों का गाँव'। और, 'धनपति' का अर्थ है – 'धन का पति' जबकि 'पतिधन' का अर्थ है – 'पति रूपी धन' या 'पति का धन'।

अभिप्राय यह है कि शब्दों का स्थान निर्धारण ही संबंध तत्त्व का काम करता है। भाषा में शब्दों के स्थान का विशेष महत्त्व होता है। अनुवाद में भी शब्द का स्थान-विशेष महत्त्वपूर्ण होता है। अनुवादक को इस ओर विशेष ध्यान देना होता है। उदाहरण के लिए, अगर हम 'राजसदन' शब्द को ही लें तो इसका अनुवाद होगा – 'House of King' और 'सदनराज' का अनुवाद होगा – 'King of House'। इसी प्रकार 'धनपति' का अनुवाद होगा – 'Owner of wealth' और 'पतिधन' का अनुवाद होगा – 'Wealth of Husband'। इसी तरह के कुछ अन्य उदाहरण भी देखे जा सकते हैं :

Power House	: विद्युत गृह	Light House	: प्रकाश स्तंभ
House Power	: गृह शक्ति	House Light	: गृह-प्रकाश

उक्त उदाहरण शब्दों के स्थान के संबंध में थे। शब्द-स्थान के संदर्भ में यही स्थिति वाक्यों में प्रयुक्त होने पर भी होती है। इसे स्पष्ट करने के लिए हम शब्दों के स्थान-परिवर्तन को वाक्य में प्रयुक्त करके देखते हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य देखिए :

- Ram killed Sohan.
- Sohan killed Ram.

स्पष्ट है कि पहले वाक्य में राम और सोहन का संबंध दूसरा है, पर शब्द के स्थान परिवर्तन मात्र से ही अर्थ बदल गया है।

शब्दों को ज्यों का त्यों छोड़ देना या शून्य संबंध जोड़ना : कभी-कभी कोई संबंध तत्त्व न लगाकर शब्दों को ज्यों का त्यों छोड़ देना भी संबंध तत्त्व का बोधक होता है। अंग्रेजी में सामान्य वर्तमान में प्रथम पुरुष एकवचन (जैसे, I go) तथा बहुवचनों (जैसे We go, You go आदि) में क्रिया को ज्यों का त्यों छोड़ दिया जाता है। अंग्रेजी में 'sheep' का बहुवचन 'sheep' ही है।

स्वतंत्र शब्द : संसार की अनेक भाषाओं में स्वतंत्र शब्द भी संबंध तत्त्व का कार्य करते हैं। हिंदी के सभी परसर्ग अथवा कारक चिह्न (ने, को, से, पर, में, का, की, को) इसी वर्ग के हैं और उनका कार्य दो या दो से अधिक शब्दों का वाक्य या वाक्यांश या शब्द समूह में संबंध दिखलाना ही है। अंग्रेजी के to, from, on तथा in आदि इसी श्रेणी के शब्द हैं। संस्कृत में इति, आदि, एवं, तथा, च आदि भी ऐसे ही शब्द हैं। कभी-कभी दो स्वतंत्र शब्दों का भी प्रयोग संबंध तत्त्व के लिए होता है। उदाहरण के लिए, हिंदी के 'अगर कॉलेज बंद रहा तो मुझे घर जाना पड़ेगा।' वाक्य देखिए। इस वाक्य में 'अगर' और 'तो' इसी प्रकार के शब्द हैं जो कॉलेज बंद रहने और घर जाना पड़ेगा के संबंध को दर्शाते हैं। हालाँकि, मगर, न, ज्यों, त्यों, यदि, तो, तथा, यद्यपि आदि हिंदी के एवं if, than, neither, nor आदि अंग्रेजी के इसी प्रकार के उदाहरण हैं।

ध्वनि प्रतिस्थापन : ध्वनि प्रतिस्थापन से भी संबंध तत्त्व प्रकट किए जा सकते हैं। ध्वनि प्रतिस्थापन स्वर के स्तर पर भी देखा जा सकता है, व्यंजन के स्तर पर भी और इन दोनों के स्तर पर भी। इस प्रकार ध्वनि प्रतिस्थापन के तीन उपभेद किए जा सकते हैं – (1) स्वर प्रतिस्थापन, (2) व्यंजन प्रतिस्थापन; और (3) स्वर-व्यंजन प्रतिस्थापन।

'sing' से 'sang' तथा 'sung'; 'tooth' से 'teeth'; 'find' से 'found' आदि में स्वर प्रतिस्थापन है। इसी प्रकार हिंदी में 'दशरथ' से 'दशरथी', 'पुत्र' से 'पौत्र', 'मामा' से 'मामी' आदि इसी श्रेणी के उदाहरण हैं। जबकि 'send' से 'sent' या 'advice' से 'advise' के रूप में शब्द परिवर्तन व्यंजन प्रतिस्थापन के उदाहरण हैं। और तीसरे प्रकार, अर्थात स्वर-व्यंजन प्रतिस्थापन में 'जा' से 'गया', 'be' से 'am या 'is'; 'go' से 'went' आदि शब्द-परिवर्तन उदाहरण के तौर पर देखे जा सकते हैं।

बलाघात : बलाघात भी संबंध तत्त्व का कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के 'conduct' (कंडक्ट) शब्द को उच्चरित करते समय यदि 'क' पर बलाघात हो तो यह शब्द संज्ञा होगा और यदि 'ड' शब्द पर बलाघात हो तो यह क्रिया हो जाएगा। इसी प्रकार 'present' शब्द में 'र' पर बलाघात होने से वह संज्ञा हो जाएगा और 'ज़े' पर बलाघात होने से क्रिया।

इनके अलावा, पूर्वसर्ग अथवा उपसर्ग (prefix), प्रत्यय (suffix) आदि भी संबंध तत्त्व का निर्वाह करते हैं। इनके बारे में हम आगे अध्ययन करेंगे।

संहिता : ध्वनि प्रतिस्थापन, बलाघात आदि के अतिरिक्त भाषा में शब्दों के प्रयोग में संहिता का ध्यान रखना भी जरूरी होता है। यहाँ आपके मन में यह प्रश्न उठ रहा होगा कि 'संहिता' किसे कहते हैं। वास्तव में उच्चारण के अंत में सीमा संकेतों को संहिता कहते हैं। अगर ये संकेत न हों तो शब्दों का अर्थ ही बदल जाता है। इसे निम्नलिखित उदाहरणों की सहायता से आसानी से समझा जा सकता है:

(क) घास फिर से उग आई है।
घास फिर से उगाई है।

(ख) हल की चोट ठीक है।
हलकी चोट ठीक है।

(ग) कीमत जान-बूझकर बढ़ आई है।
कीमत जान-बूझकर बढ़ाई है।

7.5 शब्दों के स्रोत

विश्व की कोई भी भाषा तभी समृद्ध और विकसित होती है जब उसकी शब्द-संपदा समृद्ध एवं संपन्न हो। कई बार उसकी भाषा संपदा के शब्द उसकी अपनी निर्मिति होते हैं और कई बार सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के घात-संघात से शब्दों को आयातित भी किया जाता है। यह प्रक्रिया अनायास भी होती है और सामाजिक-वैज्ञानिक आवश्यकताओं के लिए भी इन्हें अपनी भाषा के शब्द-परिवार में शामिल कर लिया जाता है ताकि ज्ञान-विज्ञान का प्रसार हो सके।

जब हम हिंदी भाषा के शब्दों के स्रोत पर विचार करते हैं तो सबसे पहले यह पाते हैं कि चूँकि हिंदी का विकास संस्कृत से हुआ है इसलिए अनेक शब्द ऐसे हैं जो संस्कृत से लिए गए हैं। इसके अलावा, संस्कृत के कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो हिंदी में आकर परिवर्तित होकर प्रयुक्त होते हैं। इसके साथ-साथ, हिंदी शब्द-भंडार में अनेक शब्द ऐसे भी हैं जो अन्य भाषाओं से आए हैं और जिन्हें हिंदी ने बड़ी सहजता से अपना लिया है। अनुवाद की दृष्टि से भी हिंदी की यह ग्रहणशीलता काफी उदार है। इस प्रकार हिंदी के शब्दों के स्रोत पर विचार करें तो हम इन्हें पाँच वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। ये हैं – तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द, विदेशी शब्द; और संकर शब्द। आइए अब इन सभी पाँचों प्रकार के शब्दों के बारे में थोड़ा-बहुत जानें।

7.5.1 तत्सम शब्द

तत्सम शब्द, तत् + सम से मिलकर बना है। 'तत्' का अर्थ है – 'उसके' और 'सम' का अर्थ है – 'समान'। अर्थात उसके समान। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि किसके समान? इसका उत्तर है – संस्कृत के समान। हिंदी भाषा के अधिकांश शब्दों की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। जिस प्रकार माता-पिता के आनुवंशिक गुण उसकी संतति में पाए

जाते हैं, उसी प्रकार संस्कृत के शब्दों के गुण ज्यों के त्यों हिंदी के शब्दों में पाए जाते हैं। इस दृष्टि से संस्कृत के जो शब्द बिना किसी परिवर्तन के हिंदी भाषा में व्यवहृत होते हैं, उन्हें 'तत्सम शब्द' कहते हैं। उदाहरण के लिए, अंगुष्ठ, अंधकार, अमृत, अश्रु, अग्नि, आशा, उच्च, कुपुत्र, कार्य, क्षीर, गंथ, गृह, छिद्र, ज्ञान, जीर्ण, तीक्ष्ण, दुर्बल, प्रभुत्व आदि। यहाँ हम तत्सम शब्दों का उल्लेख केवल संकेत मात्र के लिए कर रहे हैं। वैसे, किसी भी अच्छे शब्दकोश को देखें तो उसमें तत्सम-तद्भव शब्दों का उल्लेख मिलता है।

7.5.2 तद्भव शब्द

'तद्भव' शब्द तत् + भव के योग से बना है जिसका अर्थ है – उससे होने वाले (बिगड़कर या बदलकर बनने वाले)। हिंदी भाषा के शब्द भंडार में कई ऐसे शब्द हैं जो सांस्कृतिक-ऐतिहासिक कारणों तथा अन्य भाषाओं की निकटता आदि के कारण या फिर मुख-सुख के कारण संस्कृत भाषा के शब्दों से बिगड़कर बने हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा के वे शब्द जो परिवर्तित रूप में हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, 'तद्भव शब्द' कहलाते हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित कुछ तत्सम शब्द और उनके तद्भव रूप देखिए :

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	तत्सम शब्द	तद्भव शब्द
एकल	अकेला	श्रावण	सावन
अमूल्य	अमोल	सत्य	सच
अक्षि	आँख	हरित	हरा
अद्य	आज	शत	सौ
उज्ज्वल	उजाला	हस्ती	हाथी
ओष्ठ	ओंठ	कोकिल	कोयल
स्कंध	कंधा	कूप	कुआँ
ग्राम	गाँव	सर्प	साँप
कर्पूर	कपूर	संध्या	साँझ
गोधूम	गेहूँ	स्वप्न	सपना

7.5.3 देशज शब्द

हिंदी भाषा के अनेक शब्द ऐसे हैं जिनके स्रोत के बारे में कोई जानकारी नहीं है। विशेष बात यह है कि इस प्रकार के शब्दों का मूल रूप संस्कृत में भी प्राप्त नहीं होता। ये शब्द हिंदी में अनेक बोलियों के प्रभाव के कारण आवश्यकता के अनुसार पैदा हो गए हैं। इस प्रकार के शब्दों को 'देशज शब्द' कहते हैं। देशज ऐसे शब्द हैं जो हिंदी की अपनी प्रकृति के अनुसार विभिन्न भारतीय भाषाओं, प्रादेशिक बोलियों और क्षेत्रीय प्रभाव के कारण विकसित हुए हैं या फिर परिस्थितिजन्य बनकर प्रचलित हो गए हैं। उदाहरण के लिए, कुछ प्रचलित देशज शब्द हैं – खटखटाना, खुरप, झुग्गी, गड़बड़, भोंदू, झक-झक, थप्पड़, घोंसला, भरोसा, झंझट, अटकल, चिड़िया, कटरा, अंटा, ठेठ, कटोरा, खिड़की, चसक, फुनगी, खिचड़ी, पगड़ी, लोटा, लाठी आदि।

7.5.4 विदेशी शब्द

भारत प्राचीनकाल से ही व्यापार के आकर्षण का केंद्र रहा है। संसार की अनेक सभ्यताओं और देशों के साथ भारत का व्यापारिक संबंध रहा है। इसलिए विदेशी जातियों के साथ निरंतर व्यापारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संपर्क एवं प्रभाव के कारण उनकी भाषाओं (जैसे, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, तुर्की, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, चीनी, जापानी आदि) के कुछ हिंदी भाषा में प्रयुक्त होने लगे। ऐसे शब्दों को हम विदेशी या विदेशज शब्द कहते हैं। विदेशी-भाषावार कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

अंग्रेजी : रेडियो, कंपनी, डॉक्टर, प्लेटफॉर्म, टिकट, फुटबॉल आदि।

अरबी : तारीख, किताब, वकील, कानून, ग़रीब, इज़्ज़त आदि।

फारसी : खुबसूरत, गुलाब, दरोगा, गिरफ्तार, कागज़, बर्फ आदि।

पुर्तगाली : अचार, तौलिया, तिजोरी, तंबाकू, आलू आदि।
तुर्की : बावर्ची, तोप, चाकू, बारूद, कुली आदि।
फ्रांसीसी : कूपन, इंजीनियर, कार्टन, पुलिस आदि।
चीनी : चाय, पटाखा, लीची, तूफान आदि।
जापानी : रिक्शा आदि।

7.5.5 संकर शब्द

हिंदी में अनेक शब्द ऐसे भी हैं जो दो अलग-अलग भाषाओं के मेल से बने हैं। ऐसे शब्द आवश्यकता के अनुसार समाज में धीरे-धीरे व्यवहृत होने लगे हैं। उदाहरण के लिए, जापानी शब्द 'रिक्शा' के साथ हिंदी शब्द 'चालक' के योग से बना शब्द 'रिक्शाचालक' संकर शब्द है। इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं :

रेल + गाड़ी = रेलगाड़ी
(अंग्रेजी + हिंदी)

थाने + दार = थानेदार
(हिंदी + फारसी)

जाँच + कर्ता = जाँचकर्ता
(हिंदी + संस्कृत)

बीमा + पॉलिसी = बीमापॉलिसी
(अरबी + अंग्रेजी)

7.6 शब्दों के प्रकार

जब हम शब्दों के प्रकार पर चर्चा करते हैं तो उन्हें हम कई प्रकार की व्याकरणिक कोटियाँ, अर्थ, प्रयोग, उत्पत्ति आदि के आधार पर विभाजित कर सकते हैं। किंतु हम यहाँ केवल शब्द की व्युत्पत्ति/रचना/बनावट आदि के आधार पर शब्दों के प्रकार पर चर्चा करेंगे। एक अच्छे अनुवादक से यह तो अपेक्षा अवश्य की जाती है कि उसे 'स्रोत भाषा' और 'लक्ष्य भाषा' के व्याकरणिक नियमों का भली प्रकार से बोध हो।

रचना/बनावट/व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के तीन भेद माने जाते हैं। ये हैं – (क) रूढ़ शब्द, (ख) यौगिक शब्द; और (ग) योगरूढ़ शब्द। आइए अब इनपर अलग-अलग विचार करें।

7.6.1 रूढ़ शब्द

'रूढ़' का अर्थ होता है – 'प्रसिद्ध'। रूढ़ शब्द वे हैं जो किन्हीं अन्य शब्दों के योग से न बने हों या जिनके खंड किए जाने पर उनका कोई अर्थ नहीं हो किंतु किसी विशेष वस्तु के लिए वे रूढ़ अथवा प्रसिद्ध हो जाएँ। उदाहरण के लिए, फल, स्याही, मेज़, कुर्सी, शेर, घोड़ा, पौधा, पेड़, बिस्तर, अखबार, खिड़की, चाभी आदि।

7.6.2 यौगिक शब्द

यौगिक शब्द दो शब्दांशों के मेल से बनते हैं और इनके सार्थक खंड किए जा सकते हैं। ये शब्दांश दो भी हो सकते हैं और दो से अधिक भी। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि दो या अधिक शब्दांशों के योग से बने वे शब्द जिनके सार्थक खंड किए जा सकें 'यौगिक शब्द' कहलाते हैं। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित यौगिक शब्द और उनके सार्थक खंड देखिए :

बैलगाड़ी : बैल + गाड़ी
रसोईघर : रसोई + घर
वर्षगाँठ : वर्ष + गाँठ
तहसीलदार : तहसील+दार
मेजपोश : मेज+पोश
दवाखाना : दवा+खाना

यहाँ हम आपको यह भी बताना चाहते हैं कि यौगिक शब्द केवल शब्दांशों से ही नहीं बनते, इनकी रचना उपसर्ग, प्रत्यय, संधि-समास अथवा किसी अन्य विधि से भी की जा सकती है। उदाहरण के लिए 'शील' शब्द के आरंभ में 'सु' उपसर्ग लगाकर बना यौगिक शब्द – 'सुशील'। इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण देखिए:

पारिवारिक : परिवार + इक
महेंद : महा + इंद्र
नरेश : नर + ईश
दुर्व्यवहार : दुर् + व्यवहार

7.6.3 योगरूढ़ शब्द

कुछ यौगिक शब्द ऐसे होते हैं जो सामान्य अर्थ को प्रकट न करके रूढ़ शब्दों के समान किसी अन्य निश्चित अर्थ को प्रकट करते हैं। दूसरे शब्दों में, जो शब्द यौगिक होते हुए भी अपने सामान्य अर्थ को त्याग कर किसी विशेष अर्थ के लिए रूढ़ हो जाएँ उन्हें 'योगरूढ़ शब्द' कहते हैं। उदाहरण के लिए 'चतुर्भुज' शब्द का सामान्य अर्थ है – चार भुजाओं वाला, किंतु यह शब्द सामान्य अर्थ में प्रयुक्त न करके 'विष्णु' के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है। इसी प्रकार के कुछ अन्य योगरूढ़ शब्द देखिए :

योगरूढ़ शब्द	सामान्य अर्थ	रूढ़ अर्थ
गजानन	हाथी के मुँह वाला	गणेश
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका	शिव
पीतांबर	पीला है जिसका अंबर	कृष्ण
चक्रपाणि	चक्र है हाथ में जिसके	विष्णु
वीणावादिनी	वीणा का वादन करने वाली	सरस्वती
कमलासना	कमल रूपी आसन पर विराजित	लक्ष्मी
एकदंत	एक है दंत जिसका	गणेश
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका	गणेश
महावीर	महान वीर	हनुमान

7.7 शब्द-निर्माण की प्रक्रिया

शब्दों की रचना में रूढ़ शब्दों (root words) का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि रूढ़ शब्द, शब्द निर्माण प्रक्रिया का आधार होते हैं। इन्हीं रूढ़ शब्दों में उपसर्ग, प्रत्यय, समास, संधि आदि के द्वारा नए शब्दों का निर्माण किया जाता है, शब्दों का विस्तार किया जाता है। शब्द निर्माण की यह प्रक्रिया कभी अनायास होती है तो कभी सायास। सुदीर्घ समय से आवश्यकता के अनुसार ये हमारे समाज में व्यवहृत होते रहे हैं तथा धीरे-धीरे हिंदी में इनके रूप स्थिर हो गए हैं। इसके अतिरिक्त नए ज्ञान-विज्ञान के प्रभाव के कारण भी हमने अपनी भाषा में उपसर्गों-प्रत्ययों, संधि, समास आदि के द्वारा नए शब्द गढ़ लिए हैं। अनुवाद की दृष्टि से ये नए शब्द अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

हमारी शैक्षिक एवं प्रशासनिक आवश्यकताओं के रूप में विकसित हुई पारिभाषिक शब्दावली वास्तव में शब्द निर्माण की सायास प्रक्रिया का उत्तम उदाहरण है। शब्द निर्माण के इस पहलू को मूर्त रूप प्रदान करने में पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दों के मानकीकरण का प्रयास किया तथा इसी संदर्भ में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गई। इस आयोग ने विविध विषयों के विद्वानों के सहयोग से हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कार्य शुरू किया। शब्द निर्माण की यह प्रक्रिया निरंतर तीव्र गति से आगे बढ़ रही है और हिंदी भाषा में नए-नए शब्दों को अर्थ की विविध भाव-भंगिमाओं से आभूषित कर रही है।

जैसा कि उल्लेख किया जा चपका है कि नए शब्दों का निर्माण उपसर्गों, प्रत्ययों, समास, संधि आदि के द्वारा किया जाता है, इसलिए इन पर थोड़ा विचार करना उपयुक्त रहेगा।

7.7.1 उपसर्ग-प्रत्यय की सहायता से शब्द-निर्माण

उपसर्ग (Prefix) शब्द दो शब्दों 'उप' और 'सर्ग' से योग से बना शब्द है। 'उप' का अर्थ है – समीप और 'सर्ग' का अर्थ है – सृष्टि करना । इस प्रकार 'उपसर्ग' का अर्थ है – समीप बैठाकर दूसरे नए अर्थ वाला शब्द बनाना। वस्तुतः उपसर्ग ऐसे शब्दांश होते हैं जो शब्दों के आरंभ में लगकर नए-नए शब्दों का निर्माण करते हैं। हालाँकि इन उपसर्गों का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता, किंतु ये जिस शब्द के पहले जुड़ते हैं, उसके अर्थ में परिवर्तन अथवा विशिष्टता ला देते हैं। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित उपसर्ग, उनका अर्थ और शब्दों के साथ उन्हें प्रयुक्त करके बनाए गए नए शब्द देखिए :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द	नए शब्द
अ	अभाव/निषेध	कथनीय	अकथनीय
अति	अधिक/ऊपर	भोग	अतिभोग
अधि	प्रधान/मुख्य/अधिक	कृत	अधिकृत
अनु	पीछे/प्रत्येक	कूल	अनुकूल
निर्	बिना/निषेध	दया	निर्दय

हिंदी में संस्कृत, उर्दू-फारसी, अंग्रेजी आदि विभिन्न भाषाओं के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है। इन्हें मुख्य रूप से पाँच प्रकार से प्रयुक्त किया जाता है। ये उपसर्ग हैं :

(क) संस्कृत के उपसर्ग : अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, उद् (उत्), उप, दुक्ष, निस्, नि, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम्, सु, अ/अन, दुर्, निस् आदि।

(ख) उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के शब्दांश : अध, कु, सत्, पुनः, अंत, बहिर्, स्व, स्वयं, पुरा, प्राग्, चिर, सह, सम आदि।

(ग) हिंदी के उपसर्ग : अ, अन, अध, औ, उन, क/कु, स/सु, दु, भर, बन, चौ आदि।

(घ) उर्दू-फारसी के उपसर्ग : बे, बद, खुश, ना, गैर, ला, कम, दर, बा, बिला, हम, हर, ब, ऐन आदि।

(ङ) अंग्रेजी के उपसर्ग : सब, डिप्टी, हेड, चीफ, जनरल, असिस्टेंट, वाइस, हाफ आदि।

प्रत्यय :

प्रत्यय (Suffix) दो शब्दों के योग से बना है – प्रति + अय। 'प्रति' का अर्थ है – 'साथ में, पर बाद में' और 'अय' का अर्थ है – 'चलने वाला'। इस प्रकार 'प्रत्यय' शब्द का अर्थ है – शब्दों के साथ, पर बाद में चलने वाला या लगने वाला। वस्तुतः प्रत्यय वे शब्दांश होते हैं जो शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में नवीनता अथवा परिवर्तन अथवा विशेषता ला देते हैं। शब्दों के साथ प्रत्ययों को जोड़कर नए शब्दों का निर्माण किया जाता है। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं – (क) रूपसिद्धि प्रत्यय; और (ख) व्युत्पादक प्रत्यय।

(क) रूपसिद्धि प्रत्यय : लिंग, वचन, कारक आदि की दृष्टि से जो प्रत्यय लगाए जाते हैं उन्हें 'रूपसिद्धि प्रत्यय' कहा जाता है। जैसे 'लड़का' से 'लड़की' शब्द बनाते समय 'ई' प्रत्यय लगाया जाता है। इसी प्रकार 'बकरी' शब्द से 'बकरियाँ' शब्द बनाते समय 'इयाँ' प्रत्यय लगाया जाता है। यहाँ आपको यह बताना भी अनुचित न होगा इन रूपसिद्धि प्रत्ययों के लगने के बाद बना नया शब्द अपनी ही व्याकरणिक कोटि में रहता है यानी प्रत्यय लगा शब्द यदि संज्ञा है तो वह प्रत्यय लगने के बाद भी संज्ञा शब्द ही बना रहेगा। इसी तरह, यदि प्रत्यय लगने से पूर्व कोई शब्द-विशेष विशेषण है तो प्रत्यय लगने के बाद भी विशेषण ही बना रहता है।

(ख) व्युत्पादक प्रत्यय : जिन प्रत्ययों के प्रयोग से नए शब्दों की व्याकरणिक कोटि में बदलाव आ जाता है वे 'व्युत्पादक प्रत्यय' कहलाते हैं। व्याकरणिक कोटि के बदलने का अर्थ यह है कि मान लीजिए कि प्रत्यय लगने से पूर्व यदि कोई क्रिया शब्द है और प्रत्यय लगने के बाद वह विशेषण बन जाता है तो उस प्रत्यय-विशेष को 'व्युत्पादक प्रत्यय' कहेंगे। यह परिवर्तन भाषा की किसी भी एक व्याकरणिक कोटि से दूसरी व्याकरणिक कोटि की दिशा में हो सकता है (जैसे, संज्ञा से क्रिया, क्रिया से विशेषण आदि)। उदाहरण के लिए 'लड़ना' क्रिया से 'लड़ाई' विशेषण बन जाना या फिर 'बूढ़ा' संज्ञा से 'बुढ़ापा' विशेषण। इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं :

प्रत्यय	प्रत्यय-युक्त शब्द
आलू	दयालु, कृपालु, झगड़ालू
ना	ओढ़ना, खाना, गाना
आव	चढ़ाव, फैलाव, बिखराव

आर	सुनार, लुहार, गँवार
इया	बुढ़िया, रसोइया, दुखिया
वाला	घरवाला, रिक्शावाला, सब्ज़ीवाला

हिंदी भाषा में इस प्रकार के प्रत्ययों की संख्या काफी अधिक है। फिर भी उनमें से कुछ इस प्रकार हैं – अक, ऊ, अक्खड़, आड़ी, ऐरा, ऐया, आका, इया, इयल, वाला, औनरा, ना, नी, आवना, आवट, आहट, इया, ई, वान, दार, आई, पा, शाली, स्थ, ता, दान आदि।

इस प्रकार हमने देखा कि उपसर्ग-प्रत्ययों की सहायता से अनगिनत शब्दों का निर्माण किया जाता है। किंतु इनका प्रयोग करते समय यथासंभव सावधानी बरतनी आवश्यक होती है। जैसे,

- उपसर्ग-प्रत्ययों का प्रयोग, प्रचलन को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। कहने का अभिप्राय यह है कि जो उपसर्ग अथवा प्रत्यय जिस अर्थ में रूढ़ हो गए हैं, उसे उसी अर्थ में प्रयुक्त करना चाहिए। ऐसा न करने पर स्थिति हास्यास्पद हो जाती है। उदाहरण के लिए, 'वान' प्रत्यय का प्रयोग हम 'समय' शब्द के साथ करें अर्थात 'समयवान' लिखें तो वह अटपटा लगेगा।
- इसके अतिरिक्त, शब्दों के स्रोत पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसे हमें यों भी कह सकते हैं कि जिस स्रोत का शब्द हो, उपसर्ग-प्रत्यय भी उसी स्रोत का ही हो। यदि हमें किसी तत्सम शब्द में उपसर्ग अथवा प्रत्यय लगाकर शब्द निर्माण करना हो तो कोशिश यही होनी चाहिए कि प्रयुक्त किया जाने वाले उपसर्ग/प्रत्यय भी तत्सम ही हो।

7.7.2 संधि-समास की सहायता से शब्द-निर्माण

संधि और समास की सहायता से भी शब्द-निर्माण होता है। इसपर विचार करने से पहले आइए पहले यह जानें कि संधि और समास से क्या तात्पर्य है।

संधि : जब शब्दों के निकटवर्ती दो वर्ण पास आते हैं तो उनके मेल से शब्द में जो विकार होता है, उसे 'संधि' (joining) कहते हैं। व्याकरण में संधि शब्द पास-पास के अक्षरों को आपस में मिलाने के लिए प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'विद्या' + 'आलय' शब्दों का मिलाने से 'विद्यालय' शब्द बनता है। स्पष्ट है कि इस प्रकार के विकार के परिणामस्वरूप संधि हुए शब्दों से एक नया शब्द-रूप बन जाता है। संधि तीन प्रकार की होती है – (क) स्वर संधि; (ख) व्यंजन संधि; और (ग) विसर्ग संधि।

जब स्वर में स्वर के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है तो वह 'स्वर संधि' कहलाती है। इनमें विशेष बात यह रहती है कि दो स्वरों के मेल से संधि होती है और स्वरों के मेल ही से शब्द में विकार उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए रवि + इंद्र = रवींद्र, सूर्य + उदय = सूर्योदय, सदा + एव = सदैव, प्रति + एक = प्रत्येक। इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण देखिए :

भारत (अ)+(इ) इंदु=(ए)	भारतेंदु (स्वर संधि)
ने (ए) + (अ) अन =(अय)	नयन (स्वर संधि)

जब स्वर और व्यंजन के मेल होने से शब्द में विकार उत्पन्न होता है तो वह 'व्यंजन संधि' कहलाता है। यह विकार व्यंजन और स्वर के मेल की वजह से भी हो सकता है (जैसे वाक् + ईश= वागीश), स्वर और व्यंजन का मेल भी हो सकता है (जैस आ + छादन = आच्छादन) और व्यंजन का व्यंजन से मेल से भी हो सकता (जैसे उत् + ज्वल = उज्ज्वल)। इसके कुछ निम्नलिखित उदाहरण देखिए :

दिक् + गज = दिग्गज (व्यंजन संधि)
सत् + वाणी = सद्वाणी (व्यंजन संधि)
सम् + तोष = सन्तोष (व्यंजन संधि)

वहीं, जब विसर्ग (अर्थात :) के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'विसर्ग संधि'

कहते हैं। विसर्ग संधि के परिणामस्वरूप विसर्ग का लोप हो जाता है। विसर्ग संधि वाले निम्नलिखित शब्द उदाहरण के तौर पर देखिए :

निः + संदेह = निस्संदेह	दुः + गुण = दुर्गण
मनः + रंजन = मनोरंजन	दुः + बल = दुर्बल
निः + छल = निश्छल	तमः + गुण = तमोगुण

समास : 'समास' का अर्थ है -'संक्षेप'। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना 'समास' का मुख्य प्रयोजन है। समास में दो अथवा दो अधिक शब्दों के मूल से नए शब्द की रचना होती है। इसे हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि परस्पर संबंध रखने वाले दो अथवा दो से अधिक शब्दों के मेल को 'समास' (Compound) कहते हैं। समास करने के बाद जो एक शब्द बन जाता है उसे 'समस्त पद' अथवा 'सामासिक पद' भी कहा जाता है।

आपको ध्यान दिला दें कि समास बनाने की प्रक्रिया में शब्दों के आपसी संबंध को बताने वाली कारक विभक्तियों/परसर्गों का लोप हो जाता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित समस्त पदों को देखिए :

रसोई के लिए घर	=	रसोईघर (रसोई + घर)
धन से हीन	=	धनहीन (धन + हीन)
राजा का सिंहासन	=	राजसिंहासन (राज + सिंहासन)
युद्ध के लिए भूमि	=	युद्धभूमि (युद्ध + भूमि)

जब समस्त पदों को फिर से पूर्व वाली अवस्था में लाया जाता है तो यह प्रक्रिया 'समास-विग्रह' कहलाती है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित समस्त पद और उनके समास-विग्रह देखिए :

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
दाल-रोटी	दाल और रोटी	मुँहमाँगा	मुँह से माँगा (जो भी माँगा)
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	घुड़सवार	घोड़े पर सवार
अकाल-पीड़ित	अकाल से पीड़ित	चरणकमल	कमल के समान चरण
शरणागत	शरण में आया	यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
रेखांकित	रेखा से अंकित	निडर	डर के बिना

संधि और समास के बारे में संक्षेप में जानकारी देने का उद्देश्य आपको यह बताना है कि इनके जरिए भी अनगिनत शब्दों का निर्माण किया जाता है। अगर हम अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद के संदर्भ में विचार करें तो यह पाते हैं कि अंग्रेजी में व्यक्त विचारों का हिंदी में अनुवाद करते समय आम तौर पर सामासिक शब्दावली का ही प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी की निम्नलिखित शब्दावली और उनके हिंदी पर्याय देखिए :

source of light	प्रकाशस्रोत	Head of Department	विभागाध्यक्ष
policy of the nation	राष्ट्रनीति	Head of State	राष्ट्राध्यक्ष
free from the disease	रोगमुक्त	Head of Government	शासनाध्यक्ष
House for the experiments	प्रयोगशाला		

7.8 शब्द शक्तियाँ से अभिप्राय और अनुवाद में उनकी भूमिका

अब तक आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि 'शब्द' का क्या अर्थ और महत्त्व है। इसी तरह, आप यह भी जान चुके हैं कि शब्दों के स्रोत, प्रकार और निर्माण-प्रक्रिया क्या है। अब हम शब्द शक्तियों और अनुवाद में उनकी भूमिका पर विचार करेंगे। इस संबंध में सबसे पहले यह जानते हैं कि शब्द शक्तियों से क्या तात्पर्य है और ये कितने प्रकार की होती हैं।

7.8.1 शब्द शक्ति : अभिप्राय और प्रकार

इस इकाई के भाग 7.4 में आप यह पढ़ चुके हैं कि शब्द और अर्थ एक-दूसरे के पूरक होते हैं। बिना अर्थ के शब्दों का कोई अस्तित्व नहीं होता। एक ही शब्द अनेक अर्थ-छवियों की भंगिमा वाला हो सकता है तथा अनेक शब्द एक ही अर्थ को प्रकट कर सकते हैं। शब्दों के अर्थ-तत्त्व संदर्भों और प्रसंगों के अनुकूल बदलते रहते हैं। उदाहरण के लिए, 'गधा' एक पशु है परंतु इस शब्द का प्रयोग मंदबुद्धि और मूर्ख व्यक्ति के लिए भी किया जा सकता है। इसे स्पष्ट करने के लिए हम 'गधा घास चर रहा है।' और 'रमेश तो निरा गधा है।' वाक्य उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं। आपने गौर किया होगा कि इनमें से पहले वाक्य में 'गधा' का अर्थ 'पशु' है, किंतु यही शब्द दूसरे वाक्य में 'रमेश' नामक व्यक्ति पर लागू हो रहा है और वह इस अर्थ का बोध करा रहा है कि वह मूर्ख है। कहने का अभिप्राय यह है कि प्रथम वाक्य में 'गधा' का साधारण-प्रचलित अर्थ दिया गया है जबकि दूसरे वाक्य में 'गधा' शब्द का साधारण-प्रचलित अर्थ न लेकर भिन्न अर्थ लिया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शब्दों के अर्थ को पूर्ण वाक्य के द्वारा संदर्भ एवं प्रसंगों के अनुसार ही ग्रहण किया जाता है। शब्द के इसी अर्थबोधक व्यापार के मूल कारण को 'शब्द शक्ति' कहते हैं।

हिंदी में शब्द-शक्तियाँ तीन प्रकार की मानी जाती हैं। ये हैं – (क) अभिधा शब्द शक्ति; (ख) लक्षणा शब्द शक्ति; और (ग) व्यंजना शब्द शक्ति। इन्हीं तीन शब्द शक्तियों के अनुसार 'शब्द' भी तीन प्रकार के माने जाते हैं – (क) वाचक शब्द, (ख) लक्षक शब्द; और (3) व्यंजक शब्द। चूँकि शब्द और अर्थ का परस्पर संबंध है, अर्थ की अनुपस्थिति में शब्द निरर्थक होते हैं इसलिए शब्द शक्तियों के अनुसार शब्दों के इन तीनों प्रकारों के आधार पर 'अर्थ' की भी तीन कोटियाँ निर्धारित की जाती हैं। ये हैं – (क) वाच्यार्थ, (ख) लक्ष्यार्थ; और (ग) व्यंग्यार्थ। आइए, अब हम अभिधा, लक्षणा और व्यंजना नामक शब्द शक्तियों की कोटियों पर विचार करें।

(क) अभिधा शब्द शक्ति : अभिधा शाब्दिक अर्थ को दिखाने वाली शक्ति है। शब्द की जिस शक्ति के कारण किसी शब्द का मुख्य अर्थ समझा जाता है, वह 'अभिधा शब्द शक्ति' कहलाती है। किसी शब्द को सुनते या पढ़ते समय आम तौर पर पहले उसके प्रचलित कोशगत अर्थ का ही बोध होता है। जो शब्द उसके मुख्य अर्थ का बोध कराता है, उसे 'वाचक शब्द' तथा ज्ञात अर्थ को 'मुख्यार्थ' कहते हैं। उदाहरण के लिए 'मुझे तो एकमात्र ईश्वर का ही सहारा है।' वाक्य देखिए। इस वाक्य के अनुसार 'ईश्वर' शब्द का जो मुख्य अर्थ प्राप्त होता है, वह 'परमात्मा' अथवा 'भगवान' है। अतः 'ईश्वर' शब्द वाचक है और उससे ज्ञात अर्थ 'परमात्मा' अथवा 'भगवान' मुख्यार्थ है।

(ख) लक्षणा शब्द शक्ति : मुख्यार्थ में बाधा उत्पन्न होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के कारण जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से संबंध अन्य अर्थ प्रकट होता है, उसे 'लक्षणा शब्द शक्ति' कहते हैं। जो शब्द लक्षणा शक्ति तथा लक्ष्यार्थ का बोध कराता है, उसे 'लक्षक शब्द' कहते हैं तथा लक्षणा शक्ति द्वारा प्राप्त शब्दार्थ को 'लक्ष्यार्थ' कहते हैं।

लक्षणा शब्द शक्ति के जरिए लक्ष्यार्थ का बोध होता है। इस प्रकार के शब्द के भीतर एक अन्य अर्थ छिपा हुआ रहता है। उदाहरण के लिए 'साँप' शब्द का अभिधा से अर्थ है – 'एक ऐसा सरीसृप जो रेंगता है।' परंतु जब हम किसी व्यक्ति की धोखेबाजी, धूर्तता और चालाकी को बताने के लिए यह कहते हैं कि 'वह व्यक्ति साँप है।' तो यहाँ 'साँप' का अर्थ जमीन पर रेंगने वाला प्राणी न होकर धोखेबाज/धूर्त व्यक्ति है। ऐसा माना जाता है कि साँप को जितना भी दूध पिलाओ पर वह अपनी प्रकृति से बाज नहीं आता और अवसर पाते ही डस लेता है। इसलिए यदि कहें कि 'रमेश आदमी नहीं साँप है।' तो इसका अभिधापरक अर्थ ग्रहण न करके लाक्षणिक अर्थ ही ग्रहण किया जाना चाहिए।

ध्यान रखने की बात यह है कि इस प्रकार लक्षणा शब्द शक्ति संपन्न भाषा का प्रयोग करते समय मुख्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रस्तुत करने का या तो कोई विशेष प्रयोजन होता है या फिर इस प्रकार के भिन्न अर्थ को रूढ़ि या परंपरा के कारण प्रस्तुत किया जाता है। उक्त उदाहरण में 'साँप' का अर्थ सरीसृप प्राणी नहीं है क्योंकि व्यक्ति अपना रूप, रंग, आकार त्याग कर सरीसृप प्राणी नहीं बन सकता, किंतु जो दूसरा अर्थ धोखेबाज/धूर्त लिया गया है उसका संबंध साँप से है क्योंकि परंपरा के अनुसार साँप को धोखेबाज एवं धूर्त माना गया है। व्यक्ति मुख्यार्थ से भिन्न इसी अर्थ को ग्रहण भी करता है।

(ग) व्यंजना शब्द शक्ति : कभी-कभी अभिधा अथवा लक्षणा शब्द शक्ति से वाक्य का अभिप्रेत अर्थ पता नहीं चलता। ऐसी स्थिति में जिस शब्द शक्ति से अभिप्रेत अर्थ तक पहुँचा जाता है, उसे 'व्यंजना शब्द शक्ति' कहते हैं। व्यंजना शब्द शक्ति से प्राप्त अर्थ को 'व्यंग्यार्थ' तथा शब्द को 'व्यंजक शब्द' कहते हैं। व्यंजना शब्द शक्ति की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए हम एक उदाहरण लेते हैं। मान लीजिए कोई किसान हर रोज सूर्य उगने के समय खेतों में काम करने जाता है। एक दिन वह देर तक सोता रहा और उसे समय का ध्यान ही न रहा। यदि कोई व्यक्ति उसे कह दे कि 'सूरज सिर पर आ गया है।' तो इसका अभिधा में अर्थ होगा कि 'सिर के ठीक ऊपर सूरज आया हुआ है।' तथा लक्षणा में अर्थ होगा 'दोपहर हो गई है' किंतु व्यंग्यार्थ होगा कि 'सोना छोड़ो, उठो और खेतों में काम पर जाओ।'

7.8.2 शब्द शक्तियों की अनुवाद में भूमिका

कोई भी व्यक्ति शब्द शक्तियों के इन्हीं कार्य-व्यापारों तथा उनके नियामक हेतुओं का अध्ययन करके कुशल अनुवादक सिद्ध हो सकता है। इसलिए अनुवादक को शब्द शक्तियों का गहन बोध होना चाहिए और उन्हें ध्यान में रखते हुए अनुवाद करना चाहिए। अभिधामूलक वाक्यों का अनुवाद करते समय अनुवादक शब्दों के कोशगत अर्थ का प्रयोग करता है। यह कार्य अपेक्षाकृत अधिक सरलता से हो जाता है क्योंकि दोनों भाषाओं में सामान्य अर्थ एक-सा ही रहता है। उदाहरण के लिए, 'He is wise man.' का अनुवाद 'वह बुद्धिमान व्यक्ति है।' कर देना।

लेकिन लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति संपन्न वाक्यों में अभिधेय अर्थ बदला हुआ होता है। जैसे अगर हम यह कहें कि 'गंगा में कुटी है' तो गंगा में 'कुटी' नहीं हो सकती। इसलिए इस लक्षणा शब्द शक्ति संपन्न वाक्य का अर्थ है – 'गंगा तट पर कुटी है।' यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि यहाँ लक्षणा प्रसिद्ध अर्थ के परंपरा संबंध से स्पष्ट हो रही है। यानी पारंपरिक अर्थ बता रहा है कि कुटी गंगा के तट पर है। ऐसे में अनुवादक को लक्षणा द्वारा प्राप्त अर्थ को भली प्रकार से समझना और फिर उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना होता है। ऐसा करते समय उसे यह भी जानना चाहिए कि वाक्य में लक्षणा रूढ़ि के आधार पर है या फिर प्रयोजन के आधार पर।

जहाँ तक व्यंजना शब्द शक्ति का संबंध है, यह अप्रसिद्ध अर्थ के बोध पर आधारित होती है। अभिधा और लक्षणा परंपरा संबंध की सहायता से प्रसिद्ध अर्थ को स्पष्ट कर देती है, किंतु अप्रसिद्ध अर्थ का बोध कराने में ये दोनों समर्थ नहीं होतीं। उस स्थिति में व्यंजना का कार्य दुहरा होता है। यह दोनों प्रकार के अर्थों का बोध कराती है। इसलिए व्यंजना के द्वारा शब्द, अर्थ-व्यंजक बनते हैं। व्यंजना का अनुभव शब्द, शब्दार्थ, पद, वर्ण, रचना-स्वभाव आदि में हर जगह व्याप्त रहता है। इसलिए कुशल अनुवादक द्वारा व्यंजना की शक्ति को भली प्रकार से पहचानने और उसे लक्ष्य भाषा में सटीक ढंग से प्रस्तुत करने में चूक होने का खतरा रहता है।

वास्तव में, शब्द की शक्तियों का बोध तथा उनकी परख का सामर्थ्य भी भाषा के प्रयोक्ता एवं अनुवादक को होना चाहिए। ठीक वैसे ही, जैसे मुहावरे और लोकोक्तियों का अर्थ हम लक्षणा एवं व्यंजना शक्ति के रहस्य को जानने पर ही ग्रहण कर पाते हैं। कारण स्पष्ट है कि ऐसे लाक्षणिक एवं व्यंजनात्मक प्रयोगों में सीधा-सपाट अर्थ वांछित भी नहीं होता। जैसे 'घर का चिराग' प्रयुक्ति का अनुवाद हम 'Lamp of the family' नहीं कर सकते। ऐसे अनुवाद अर्थ का अनर्थ कर डालते हैं। ऐसे में हमें अभीष्टार्थ को समझते हुए शाब्दिक अथवा शब्द-प्रतिशब्द अनुवाद से बचना होता है और वांछित अर्थ का संप्रेष्य, बोधगम्य तथा संदर्भ-सापेक्ष अनुवाद ही करना होता है। इसलिए यदि हम 'घर का चिराग' का अनुवाद 'Hope of the family' करेंगे तो यह कहीं बेहतर तथा ग्राह्य अनुवाद होगा। तभी तो यह कहा जाता है कि अनुवादक को शब्द की शक्ति को समझकर ही उसकी परिव्याप्ति तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए।

वस्तुतः स्रोत भाषा के शब्दों के सही अर्थ को उनकी शक्ति के आलोक में समझने और उसे लक्ष्य भाषा में संप्रेषित करने में ही अनुवादक का दायित्व निहित है।

7.9 शब्द-संपदा और अनुवाद

शब्दों की विशेषताओं का अध्ययन करने के बाद आपके मन में सहज रूप से यह प्रश्न उठ सकता है कि शब्दों के निर्माण की आवश्यकता क्यों होती है? क्या भाषा के मौजूद शब्दों से ही हमारा काम क्यों नहीं चल सकता?

इस प्रश्न के उत्तर में हम कह सकते हैं कि मनुष्य जीवन निरंतर गतिशील है। सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी समय के अनुसार बदलती रहती हैं। नई संकल्पनाओं और विचारों का समावेश होता रहता है। व्यक्ति आवश्यकता के अनुसार अपनी मौजूदा वस्तुओं, स्थितियों, विचारों, भावनाओं और व्यवस्थाओं के विकास की अभिव्यक्ति तथा संचालन के लिए नए शब्दों के निर्माण में प्रवृत्त होता रहता है।

बहुत से शब्द ऐसे होते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं। वाक्य में प्रयुक्त किसी शब्द का उन अर्थों में से कौन-सा अर्थ लिया जाए, यह अनुवाद कला का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। यह जानने के लिए या तो प्रसंग देखना आवश्यक होता है या फिर यह देखना होता है कि उस शब्द का वाक्य के अन्य शब्दों के साथ क्या संबंध है। इसका अर्थ यह है कि अनुवादक को यह देखना होता है कि उस शब्द की निकटता किस शब्द के साथ है, उसका अन्य शब्दों के साथ कैसा संयोग या साहचर्य है, प्रसंग क्या है? देश-काल या स्थान और समय के अनुसार कहने वाले, लिखने या सुनने की दृष्टि, चेष्टा या ध्वनि कैसी है? साथ ही शब्द शक्तियों के कारण ही अनुवादक अभीष्ट अर्थ को ज्ञात करने में सक्षम हो सकता है। अभीष्ट अर्थ को समझने के लिए अनेक नियामक आधार होते हैं। अनुवादक को इन आधारों से भली-भाँति परिचित होना चाहिए। कुछ प्रमुख आधार हैं – संयोग, साहचर्य, प्रकरण, लिंग, अन्य शब्दों की सन्निधि, देश-काल, व्यक्ति, स्वर आदि। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित दो वाक्य देखिए:

(1) उसने अपने कुत्ते का नाम मोती रखा है।

(2) आजकल बाजार में मोती सस्ते मिलते हैं।

उक्त दोनों वाक्यों में से पहले वाक्य में मोती 'कुत्ते' का नाम है और दूसरे वाक्य में मोती 'बहुमूल्य रत्न' का द्योतक है। यहाँ 'मोती' शब्द के दो अर्थ वाक्यों में प्रयुक्त अन्य शब्दों के आधार पर जाने जाते हैं।

संसार में नए ज्ञान-विज्ञान, आविष्कार तथा सांस्कृतिक-व्यापारिक संपर्क के कारण मनुष्य नए शब्दों को गढ़ता है। यह उसके विकास की परम आवश्यकता भी है तथा उसकी विवशता भी। आज सारा विश्व एक वैश्विक ग्राम के रूप में बदल चुका है। उपभोक्तावाद एवं संस्कृतियों के संक्रमण के कारण विविध भाषा-परिवारों के शब्द आपस में घुल-मिल गए हैं और रहे हैं। यह किसी भी भाषा की शब्द-संपदा के विकास का सूचक है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि जिन भाषाओं ने केवल शुद्धतावादी रवैया ही अपनाया है, वे या तो समाप्त हो गई हैं या समाप्त होने के कगार पर हैं। शब्दों को गढ़ते रहने एवं दूसरी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करते रहने से भाषा को प्राण-वायु प्राप्त होती रहती है। शब्दों के निरंतर निर्माण से भाषा की शब्द-संपदा में अभिवृद्धि होती है तथा वह उसे नई अर्थ-छायाओं से युक्त करके अभिव्यक्ति के नए तेवर प्रदान करती है।

शब्द-संपदा की अभिवृद्धि में वैयक्तिक और सामूहिक प्रयास तो होते ही रहे हैं, साथ ही सरकारी प्रयास भी हो रहे हैं। शब्द-संपदा को बढ़ाने के लिए संविधान के अनुच्छेद 351 के अंतर्गत हिंदी भाषा की संपन्नता-समृद्धि को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (Commission for Scientific and Technical Terminology) की स्थापना भी की है। इस आयोग ने आवश्यकता के अनुसार अंगीकरण, अनुकूलन, नवनिर्माण तथा अनुवाद प्रक्रिया के आधार पर शब्दों का निर्माण किया है तथा कर रहा है। इस विषय में आप इस पाठ्यक्रम की अगली इकाइयों में और अधिक विस्तृत अध्ययन करेंगे।

अनुवाद में शब्द-संपदा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शब्द-संपदा के अभाव में अनुवादक को अनुवाद में बहुत कठिनाई आती है। यदि लक्ष्य भाषा में शब्दों की बहुलता या विविधता न हो तो उसका अनुवाद कार्य दुष्कर हो जाएगा। उदाहरण के लिए, हिंदी के निम्नलिखित वाक्य देखिए :

(1) यहाँ धूमपान की अनुमति नहीं है।

(2) यहाँ धूमपान करना मना है।

(3) यहाँ धूमपान वर्जित है।

ये सभी वाक्य एक ही अर्थ को व्यंजित कर रहे हैं, हालाँकि तीनों वाक्यों की संरचना भिन्न है। अतः लक्ष्य भाषा की शब्द संपदा की जानकारी के आधार पर अनुवादक उक्त तीनों वाक्यों का अंग्रेजी अनुवाद शब्दों की विविधता के साथ करेगा। इस आधार पर तीनों वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार होगा :

(1) यहाँ धूमपान की अनुमति नहीं है। Smoking is not permitted here.
(2) यहाँ धूमपान करना मना है। Smoking is not allowed here.
(3) यहाँ धूमपान वर्जित है। Smoking is prohibited here.

इस प्रकार हमने देखा कि 'अनुमति' के लिए 'permitted', 'मना' के लिए 'not allowed' तथा 'निषेध' के लिए 'prohibited' शब्दों का प्रयोग किया गया है। हालाँकि तीनों ही शब्द एक ही प्रकार के अर्थ को व्यक्त करते हैं, लेकिन शब्दों की यह विविधता भाषिक अभिव्यक्ति को नए-नए आयाम प्रदान करती है।

एक सफल अनुवादक से स्रोत भाषा के शब्दों तथा लक्ष्य भाषा के शब्दों की व्याकरणिक कोटियों के बारे में जानकारी की अपेक्षा की जाती है। शब्दों की इन विशेषताओं के बारे में बताने के लिए शब्दकोश ही एकमात्र विकल्प हैं। शब्दकोशों के आधार पर ही अनुवादक उसकी अर्थ-छायाओं और पर्यायों को जानकर उचित शब्द का निर्धारण कर सकता है। विशेष स्थितियों, संदर्भों और भाषा-प्रयुक्तियों (registers) में शब्दकोश आवश्यक ही नहीं, अपरिहार्य भी होते हैं। क्षेत्र-विशेष की शब्दावली अथवा उसके भाषा प्रयोग अपने आप में विशिष्ट होते हैं और उनके अनुवाद में सामान्य भाषा ज्ञान अथवा शब्द ज्ञान ही प्र्याप्त नहीं होते। इसलिए उनके अनुवाद की सटीकता अथवा परिशुद्धता के लिए प्रयुक्ति विशेष से संबंधित शब्दकोश देखना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए, 'लेखा', 'मुद्रास्फीति', 'निविदा', 'अवमूल्यन', 'तरलता', 'बट्टा', 'साख', 'आहरण' आदि वाणिज्य-व्यवसाय के क्षेत्र से संबंधित शब्द हैं। आम आदमी के दिन-प्रतिदिन के जीवनक्रम से संबद्ध बोलचाल की भाषा में इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग नहीं होता या फिर बहुत ही कम होता है। इसलिए इनके सटीक प्रतिशब्द तथा अनुवाद हेतु प्रयुक्ति विशेष से संबंधित शब्दकोश देखना आवश्यक होता है। जिस भाषाविद और अनुवादक का शब्दकोश, शब्द-स्मृति, शब्द-भंडार जितना संपन्न-समृद्ध होगा वह शब्दों का उतना ही आधिकारिक प्रयोक्ता बन सकेगा।

7.10 अनुवाद में शब्द-चयन का महत्त्व

भाषा वह साधन है जिसके जरिए हम अपने भावों-विचारों का परस्पर आदान-प्रदान करते हैं। अपने पारिभाषिक अर्थ में भाषा को यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीक व्यवस्था कहा जाता है। ये ध्वनि-प्रतीक वास्तव में स्वर-व्यंजन ही हैं, जिनके समूहन से शब्द बनते हैं। प्रत्येक भाषा की भाषिक संरचना की अपनी एक व्यवस्था होती है। भाषा की उस व्यवस्था के अनुकूल भाषिक प्रयोग किया जाए तो वह संगत और साभिप्राय सिद्ध होते हैं। भाषा के शब्द-प्रतीक यदि अपने अर्थ को संप्रेषित करने में सफल नहीं होते तो उनका अस्तित्व ही अमान्य हो जाता है। उदाहरण के लिए, 'कलम' एक ऐसा शब्द-प्रतीक है, जिसका अपना एक निश्चित तथा स्पष्ट अर्थ है और वह है – 'वह वस्तु जिससे लिखा जाता है।' किंतु यदि इस शब्द-प्रतीक के वर्णों की व्यवस्था को बदल कर 'लकम', 'मकल' या 'मलक' कर दिया जाए तो यह शब्द-प्रतीक निरर्थक बन जाता है। इसी प्रकार, यदि शब्द-प्रतीकों से निर्मित वाक्य उपयुक्त अर्थ नहीं देता तो वह वाक्य भी अर्थहीन और बेकार माना जाता है। इसीलिए यह कहा जा सकता है शब्द-प्रतीक का कथ्य की अभिव्यक्ति से अटूट संबंध है।

कथ्य और अभिव्यक्ति के साथ शब्दों के इस संबंध के आलोक में ही हमें शब्द-चयन की ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। कवि या लेखक अपनी सर्जनात्मक रचनाधर्मिता से शब्दों का जाल बुनता है, शब्द-भंडार में से सार्थक शब्दों का चयन करता है। मूल पाठ के लेखक की भाँति, अनुवादक को भी सार्थक शब्दों का चयन करना पड़ता है। लेकिन अनुवाद करते हुए अनुवादक के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती शब्द-संपदा भंडार में से सटीक शब्द चयन की ही होती है। शब्दों से ही भाषा की अर्थ-छवि या अर्थ-छटा बदलती है। कहीं देशज शब्द की गंध समस्या बनती है तो कहीं संस्कृतिनिष्ठ शब्द की संस्कृति। कहीं विदेशी शब्द चुनौती बनता है तो कहीं पारिभाषिक शब्द। इसी तरह से स्रोत और लक्ष्य भाषाओं के विशिष्ट मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ भी कठिनाई पैदा करते हैं। अनुवाद करते समय इस प्रकार की बारीकियों को समझना जरूरी है ताकि अनुवादक मूल पाठ के भाव को पाठक तक पहुँचाने में सर्वथा सफल सिद्ध हो सके।

इस तरह यह बात स्पष्ट रहनी चाहिए कि भाषा में ऐसा कोई भी शब्द नहीं है, जो पूरी तरह से दूसरे शब्द का पर्याय होता है। इन शब्दों में व्यावहारिक साम्य या निकट प्रतीत भले ही हो, परंतु यथावत, यथा-अर्थ समानता नहीं होती। हो भी नहीं सकती। यदि ऐसा हो तो समान या पर्याय कहलाने वाले शब्द की सत्ता पर ही प्रश्न-चिह्न

लग जाएगा। उदाहरण के तौर पर, यदि हम 'बुद्धि' शब्द के लिए 'कुशाग्र', 'प्रखर' एवं 'तीक्ष्ण' विशेषणों का प्रयोग करें तो ये शब्द भले ही 'बुद्धि' के पर्याय प्रतीत हों, किंतु अर्थ-छटा की दृष्टि से ये पूरी तरह भिन्न हैं। इसे ऐसे भी समझ सकते हैं कि 'जल' और 'पानी' कहने को तो पर्याय हैं, किंतु गंगा का 'जल' होता है, 'पानी' नहीं, नालों में 'पानी' बहता है, 'जल' नहीं। शिवलिंग पर 'जल' चढ़ाते हैं, 'पानी' नहीं। यही संदर्भ-सापेक्षता शब्दों की पहचान और प्रयोगधर्मिता को अलग करती है। इसीलिए भाषा में प्रयोग और संदर्भ-भेद से ही अर्थ-भेद पैदा होता है। अनुवादक भाषा में शब्दों की इन्हीं अर्थ-छटाओं तथा प्रयोगगत सूक्ष्म भेदों को पहचान कर ही अनुवाद की सही मंजिल तक पहुँच पाता है।

शब्दों का संसार बहुत बड़ा है। इसलिए अभ्यास और अनुभव से, अध्ययन और विश्लेषण से ही शब्दों के भीतर बैठी अर्थ-छटाओं को परत-दर-परत खोला-समझा जा सकता है। जैसे, 'misuse' यदि 'अनुचित प्रयोग' है तो 'misused stamps' 'गलती से प्रयोग की गई डाक-टिकट' है। 'pay' तथा 'salary' यदि 'वेतन' हैं तो 'honorarium' 'मानदेय' है। 'income' यदि 'आय/आमदनी' है तो 'earnings' 'कमाई' या 'उपार्जन'। 'fight' यदि 'लड़ाई ' है तो 'war' युद्ध एवं 'struggle' 'संघर्ष' है। 'inauguration' यदि 'उद्घाटन' है तो 'beginning' 'प्रारंभ' है।

सत्य तो यही है कि प्रत्येक शब्द का अपना एक इतिहास होता है, स्रोत होता है और उसकी अपनी एक यात्रा-राह होती है। शब्द ही 'हृदय' जीतने का मंत्र बनता है और शब्द ही 'महाभारत' का कारण भी बनता है। इसीलिए कहा जाता है कि भाषिक अधिकार के लिए भाषा-प्रयोक्ता को या अनुवादक को शब्दों की नब्ज पहचानना आना चाहिए; शब्दों का रक्तचाप समझना आना चाहिए। शब्दों की सीमाएँ और शब्दों की शक्तियाँ ही प्रयोक्ता को 'हीरो' या 'जीरो' बना देती है।

7.11 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने शब्द की अवधारणा और उसके आयामों के बारे में अध्ययन किया। इस अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया होगा कि भाषा में 'शब्द' की भूमिका 'ब्रह्मवत्' है। भाषा का प्रयोक्ता अपने प्रयोजन, पाठक एवं प्रयोग के कारणों को ध्यान में रखते हुए सटीक शब्द का चयन करता है। ठीक वैसे ही जैसे सड़क के चौराहे पर लगी लाल, हरी, पीली बत्ती का यातायात के नियमों का अनुपालन करते हुए यात्री अपेक्षा के अनुसार अर्थ ग्रहण करते हैं और लक्ष्य को साधते हैं। इसी तरह पाठक, श्रोता भाषा के शब्दों का अर्थ ग्रहण करता है। अर्थ के बिना शब्दों का कोई महत्त्व नहीं है। 'शब्द' की सत्ता वस्तुतः अर्थ से जुड़ी रहती है। 'शब्द' को शास्त्र ने 'शरीर' कहा है और अर्थ को 'आत्मा'। इसी कारण हम भाषा की परिभाषा देते हुए 'सार्थक वाक्-प्रतीकों की व्यवस्था' कह कर उसे स्पष्ट करते हैं। शब्द और अर्थ एक-दूसरे के पूरक हैं, ठीक वैसे ही जैसे शरीर और आत्मा। शरीर के बिना आत्मा निरर्थक जान पड़ती है और आत्मा के बिना तो शरीर व्यर्थ है ही। इसलिए भाषा में शब्द की सत्ता अर्थ-आधारित है। अर्थ प्रयोक्ता एवं समाज-सापेक्ष है। उसकी ग्राह्यता अथवा लोक-स्वीकृति महत्त्वपूर्ण होती है।

लेखक अथवा अनुवादक को शब्दों के समानार्थी, विलोम, समतुल्य, अनेकार्थक रूप, युग्म, पुनरुक्ति-भेद, पारिभाषिक स्वरूप, अर्ध-पारिभाषिकता, संक्षिप्तीकरण, शब्द-मैत्री, शब्द शक्ति, धातु-उपसर्ग-प्रत्यय या फिर संधि-समास की सहायता से शब्द निर्माण की प्रक्रिया, शब्द साहचर्य, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग, समरूपी भिन्नार्थक शब्द और इसी प्रकार देशज, विदेशी, तत्सम-तद्भव तथा संकर आदि शब्दों के संसार की पूरी एवं गहन जानकारी अर्जित करनी चाहिए।

कवि या लेखक अपनी रचनाधर्मिता से शब्दों के नए अर्थ भी उजागर करता है तथा पारंपरिक अर्थों को नई दिशा भी दे देता है। यह वस्तुतः प्रयोक्ता, रचनाकार की दृष्टि, अनुभव, कल्पना की सृजनशीलता पर भी निर्भर करता है। ऐसे में अनुवादक को यह भी देखना होता है कि स्रोत भाषा के प्रयोग का मूल मंतव्य क्या है। क्या शब्द सीधे-सीधे अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वाच्यार्थ ही लेखक या कवि का अभिप्रेत है अथवा लक्ष्यार्थ अथवा व्यंग्यार्थ।

मूल पाठ के लेखक की भाँति, अनुवादक को भी सार्थक शब्दों का चयन करना पड़ता है। उसके लिए शब्द-संपदा

भंडार में से सटीक शब्द चयन स्वयं में एक चुनौती होती है। शब्दों से भाषा की अर्थ-छटा में बदलाव आता है। देशज शब्द की गंध, संस्कृतिनिष्ठ शब्द की संस्कृति या फिर विदेशी शब्द की चुनौती भी कम नहीं होती है। ऐसे में शब्द-चयन के प्रति विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। इसलिए कहा जाता है कि अनुवाद में सार्थक शब्दों के चयन का विशेष महत्त्व है।

7.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. 'शब्द' से आप क्या समझते हैं? भाषा तथा समाज में शब्द का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।
2. भाषा के अर्थ एवं संबंध तत्त्व पर प्रकाश डालिए।
3. शब्दों के स्रोत और प्रकारों पर विचार व्यक्त कीजिए।
4. शब्द निर्माण प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।
5. शब्द शक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अनुवाद में इनके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
6. अनुवादक के लिए शब्द-संपदा का ज्ञान क्यों आवश्यक है? अनुवाद में शब्द-चयन का क्या महत्त्व है? स्पष्ट कीजिए।

7.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- तिवारी, भोलानाथ तिवारी, *शब्दों का अध्ययन,* दिल्ली, शब्दकार।
- रूवाली, केशवदत्त, 1990. *सामान्य हिंदी,* अल्मोड़ा, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो।
- टंडन, पूरनचंद, 1998. *अनुवाद साधना,* दिल्ली, अभिव्यक्ति प्रकाशन।

इकाई 8 पारिभाषिक शब्दावली : प्रकृति, प्रकार और अभिलक्षण

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ और परिभाषा

- 8.2.1 पारिभाषिक शब्द : व्युत्पत्तिमूलक अर्थ
- 8.2.2 पारिभाषिक शब्दावली : कुछ परिभाषाएँ

8.3 पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार

8.4 सामान्य एवं पारिभाषिक शब्द में अंतर

- 8.4.1 संरचनात्मक स्तर पर समानता-असमानता
- 8.4.2 अर्थ-संरचना के स्तर पर असमानता

8.5 पारिभाषिक शब्दावली के अभिलक्षण

- 8.5.1 असामान्यता
- 8.5.2 परिभाष्यता
- 8.5.3 विशिष्ट अथवा नियत अर्थ के संवाहक
- 8.5.4 अप्रतिस्थापना
- 8.5.5 दुरूहता
- 8.5.6 विषय-सापेक्ष अथवा संकल्पनानुरूप
- 8.5.7 अर्थ-रूढ़ि
- 8.5.8 अर्थ-सूक्ष्मता
- 8.5.9 अर्थ-भेदकता
- 8.5.10 कृत्रिम निर्माण एवं प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व
- 8.5.11 भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति के अनुकूल
- 8.5.12 विस्तारशीलता
- 8.5.13 प्रयोग में एकरूपता से शब्दावली का मानकीकरण संभव
- 8.5.14 तकनीकी शैली के विकास में सहायक

8.6 सारांश

8.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

8.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ और स्वरूप को जान सकेंगे;
- पारिभाषिक शब्दावली के विविध प्रकारों को जानने के बाद उनका वर्गीकरण कर सकेंगे;
- संरचनात्मक और अर्थ-संरचना के स्तर सामान्य एवं पारिभाषिक शब्द में समानता-असमानता के बारे में जान सकेंगे; और
- पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न अभिलक्षणों को समझ सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

पारिभाषिक शब्दावली के बारे में जानने से पूर्व सबसे पहले शब्द का तात्पर्य और शब्दों के स्रोत, प्रकार, आवश्यकता, उपादान, शब्द शक्तियाँ आदि अन्य आयामों के बारे में जानना जरूरी होता है। इसे ध्यान में रखते हुए पिछली इकाई में इन सभी पक्षों के आलोक में आप शब्द की अवधारणा और आयामों के बारे में जान चुके हैं। इस प्रक्रिया में आपको यह स्पष्ट हो चुका होगा कि अनुवाद में शब्द का क्या महत्त्व है? शब्दों के इन आयामों का बोध हो जाने के पश्चात यह समझना सरल हो जाएगा कि पारिभाषिक शब्दावली का क्या अर्थ है?

यह इकाई पारिभाषिक शब्दावली की प्रकृति, प्रकार और अभिलक्षणों से संबंधित है। इसमें सबसे पहले पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ और स्वरूप को स्पष्ट करते हुए यह बताया गया है कि संरचनात्मकता के स्तर पर सामान्य एवं पारिभाषिक शब्द में कोई भेद नहीं होता है। यह भी बताया गया है कि अर्थ-संरचना के स्तर इनमें किस प्रकार समानता-असमानता पाई जाती है। इस इकाई में पारिभाषिक शब्दावली के विविध प्रकारों के बारे में बताते हुए उनका वर्गीकरण किया गया है। पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप को तब तक समझना अधूरा ही है, जब तब कि हम इसके विभिन्न अभिलक्षणों को न समझ लें। इसलिए इस इकाई में इस पक्ष पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको यह बोध हो सकेगा कि पारिभाषिक शब्दावली का विकास, उससे संबंधित विचारधाराओं, सिद्धांतों, युक्तियों तथा अनुवाद में इनकी आवश्यकता जैसे पक्षों को जानने के लिए इसकी अवधारणा को समझना क्यों जरूरी है?

8.2 पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ और परिभाषा

भाषा संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। मानव अपने भावों-विचारों अथवा संकल्पनाओं को भाषा के द्वारा व्यक्त करता है। मनुष्य समाज में रहते हुए ही भाषा सीखता है और समाज में ही इसका प्रयोग करता है। वैसे, भाषा संप्रेषण का साध्य न होकर साधन मात्र होती है। भाषा, सार्थक शब्दों का समूह होती है और इसका कार्य अर्थ की प्रतीति कराना है। यह अर्थ-बोध उस भाषा को जानने वालों को होता है। शब्द जहाँ सांकेतिक अर्थ का बोध कराकर वाच्यार्थ को व्यक्त कराते हैं वहीं लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ के रूप में इससे भिन्न अर्थ का भी बोध कराते हैं। वे अलग-अलग संदर्भों में लक्ष्यार्थ की प्रतीति भी करा सकते हैं और व्यंग्यार्थ की भी। किंतु मूलतः वे 'वाचक' होते हैं। इसलिए शब्द में अर्थ-बोध कराने की शक्ति होती है। यह भाषा की अत्यधिक महत्त्वपूर्ण इकाई है। भाषा-विशेष में शब्दों की अधिकता, उतने ही अधिक अर्थ-क्षेत्रों को व्यक्त करने की क्षमता को सिद्ध करती है।

शब्द स्वयं में सामान्य और पारिभाषिक अर्थ को व्यक्त करते हैं। जिन शब्दों में कोई तकनीकी पक्ष समाहित नहीं होता, वे 'सामान्य शब्द' होते हैं। इनके विषय में कुछ भी स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं होती है। इनका यह वैशिष्ट्य कहा जा सकता है कि इन्हें सरलता से पहचाना जा सकता है। सामान्य शब्द, मूलतः मूर्त वस्तुओं, स्थितियों अथवा अवस्थाओं से संबंधित होते हैं और दैनंदिन के सामान्य कार्य-व्यवहार में इन्हें प्रयुक्त किया जाता है। 'विद्यालय', 'फल', 'बचपन', 'उबालना', 'घर', 'मीठा', 'कलम', 'ठोस', 'पुस्तक', 'सूँघना' आदि वस्तुओं, स्थानों, संबंधों या स्थिति आदि के वाचक सामान्य शब्द हैं। लेकिन, पारिभाषिक शब्द स्वयं में विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करने वाले होते हैं। इनपर विस्तार से विचार जरूरी है। आइए, सबसे पहले यह जानें कि 'पारिभाषिक शब्द' का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ क्या है?

8.2.1 पारिभाषिक शब्द : व्युत्पत्तिमूलक अर्थ

साहित्य-जगत (भले ही वह ज्ञानात्मक साहित्य से संबंधित हो अथवा आनंद के साहित्य से) में शब्दों के संदर्भ में प्रयुक्त होने वाला 'पारिभाषिक शब्द' अंग्रेजी भाषा के 'Technical Terms' शब्द के समतुल्य व्यवहृत होता है। शब्द 'पारिभाषिक' एक विशेषण है, जिसकी रचना 'परिभाषा' शब्द में 'इक' प्रत्यय से हुई है। इस तरह, 'पारिभाषिक' का अर्थ है – परिभाषा संबंधी (अर्थात् जिसकी परिभाषा की जा सके अथवा जिसकी परिभाषा देने की आवश्यकता हो)। जहाँ तक 'परिभाषा' शब्द का संबंध है, इसकी व्युत्पत्ति 'भाष्' धातु में 'परि' उपसर्ग जोड़कर हुई है। 'भाष्' धातु कथन का और 'परि' उपसर्ग विशिष्टता (अथवा विशेषार्थ) का द्योतक है। इस प्रकार 'परिभाषा' विशिष्ट भाष् अर्थात किसी पद, शब्द या कथन की पहचान के स्पष्टीकरण से संबंधित है। इस विशिष्ट कथन का संबंध किसी

भी विषय अथवा विषय-वस्तु, अर्थ, क्षेत्र अथवा संदर्भ से हो सकता है। इस प्रकार पारिभाषिक शब्द, विशिष्ट विचारों को व्यक्त करने वाला विशिष्ट शब्द है। परिभाषा या विशिष्ट संदर्भ से जुड़े पारिभाषिक शब्दों (अथवा पारिभाषिक शब्दावली) का प्रयोग किसी परिभाषा-युक्त कथन के सूत्र के रूप में किया जाता है। ये शब्द किसी भी भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियों अथवा प्रयोजनमूलक रूपों में विशिष्ट अवधारणाओं के अभिव्यंजक होते हैं और स्वयं में तत्संबंधी व्याख्या समाहित किए हुए होते हैं।

'पारिभाषिक' शब्द के पर्याय के रूप में 'तकनीकी' शब्द भी प्रयुक्त होता है। उदाहरण के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' (Commission for Scientific µ Technical Terminology) के नाम में शब्द 'तकनीकी' अंग्रेजी के 'Technical' शब्द के लिए प्रयुक्त होता है। जबकि आयोग के द्वारा निर्मित कोश 'Comprehensive Glossary of Technical Terms' का हिंदी रूपांतर है – 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह'। वैसे 'तकनीकी' शब्द 'Technical' के ध्वनि-साम्य के आधार पर निर्मित पर्याय है।

अंग्रेजी का 'Technical' शब्द, 'Technique' से बना है। यह मूल अंग्रेजी शब्द ग्रीक भाषा के 'Technika' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है – कला अथवा शिल्प। 'इक' का अर्थ है – इसका (इससे संबद्ध)। इस प्रकार 'टेक्नी' शब्द का अभिप्राय हुआ – कला अथवा शिल्प का अथवा उससे संबद्ध। ग्रीक में टेक्टोन (Teckton) का अर्थ है – बढ़ई अथवा निर्माता (Builder)। लैटिन में 'टेक्सीयर' (Texere) को 'बुनने' अथवा 'बनाने' अथवा 'निर्माण करने' के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। इस तरह, यह ग्रीक शब्द किसी चीज को बनाने अथवा तैयार करने की कला का वाचक है। अंग्रेजी के 'Technique' शब्द से भी यही अर्थ उजागर होता है। ये शब्द संसार में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न मानव-परिचित वस्तुओं आदि का बोध कराने वाले शब्दों से पृथक होते हैं।

शब्दकोश के अनुसार 'Technical' शब्द का शाब्दिक अभिप्राय है – 'of a particular art, science, craft or about art' अर्थात 'विशेष कला का अथवा विज्ञान का अथवा कला के बारे में'। स्पष्ट है कि 'Technical' (तकनीकी) शब्द 'बनाने', 'तैयार करने' के अर्थ का वहन करता है। इसके इस अर्थ को 'शब्द' (Term) के साथ प्रयोग करने पर अर्थात् 'Technical Term' (तकनीकी शब्द) लिखने पर इसमें तात्पर्य निहित हो जाता है कि यह मानव द्वारा निर्मित अथवा अभिकल्पित अथवा अन्वेषित भाव-विचार अथवा वस्तु को उजागर करने वाला शब्द है। वैसे यहाँ यह संकेत करना भी अनुचित न होगा कि अंग्रेजी के 'Technical' शब्द के स्थान पर 'Definitional' (डेफिनिशनल) शब्द ज्यादा सटीक है, क्योंकि 'Technical' शब्द का संबंध टेकनीक अथवा टेकनोलॉजी (प्रौद्योगिकी) से है।

8.2.2 पारिभाषिक शब्दावली : कुछ परिभाषाएँ

पारिभाषिक शब्दों के अर्थ-तत्त्व के बोध के लिए तत्संबंधी परिभाषा अथवा व्याख्या पर भी समुचित ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। रैंडम हाउस ने पारिभाषिक शब्द की परिभाषा इन शब्दों में दी है – विशिष्ट विषय जैसे विज्ञान अथवा कला विषय की तकनीकी अभिव्यक्ति के लिए निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त एक शब्द अधिकांशतः कला का शब्द। [A word of phrase used in definite or precise sense in some particular subject as a science or art a technical impression (more fully term of art).]

चैंबर्स टेक्निकल डिक्शनरी की भूमिका में पारिभाषिक शब्द के संबंध में कहा गया है कि 'यह प्रश्न किया जा सकता है कि पारिभाषिक शब्द क्या है? पारिभाषिक शब्द वह शब्द या अभिव्यक्ति है, जो मानव की विशिष्ट गतिविधियों या प्रकृति के किसी विशेष पहलू से संबंधित ज्ञान की शाखा के विद्वान या कुशल व्यक्ति के लिए विशेष महत्त्व का या मूल्यवान हो।' (What it may be asked is a technical term? It may be defined as a word of expression which has special significance and value to a person learned or dextrous in a branch of knowledge relating to some particular human activity or to some particular aspect of human nature.)

डॉ.रघुवीर ने डॉ. गार्गी गुप्त द्वारा संपादित पुस्तक 'पारिभाषिक शब्दावली की विकास-यात्रा' में पारिभाषिक शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है -'पारिभाषिक शब्द किसको कहते हैं? जिसकी परिभाषा की गई हो। पारिभाषिक शब्द का अर्थ है, जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हों। जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती है, वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती वे साधारण शब्द होते हैं।'(पृ.19)

पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में डॉ. गोपाल शर्मा ने 'अनुवाद कला : कुछ विचार' शीर्षक पुस्तक में लिखा है

कि 'पारिभाषिक शब्द वह शब्द है, जो किसी विशेष ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता हो तथा जिसका अर्थ एक परिभाषा द्वारा स्थिर किया गया हो।' (पृ.192)

डॉ भोलानाथ तिवारी ने 'पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ' पुस्तक (संपादित) में लिखा है कि 'पारिभाषिक शब्द' ऐसे शब्दों को कहते हैं, जो रसायन, भौतिकी, दर्शन, राजनीति आदि विभिन्न विज्ञानों या शास्त्रों के शब्द होते हैं तथा जो अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप से पारिभाषित होते हैं। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से पारिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते हैं।'(पृ.16) इसी पुस्तक में पारिभाषिक शब्दावली के संदर्भ में श्री महेंद्र चतुवेदी का कहना है कि 'पारिभाषिक शब्द के दो गुण होते हैं – (1) नियतार्थता; और (2) परस्पर अपवर्जितता (mutual exclusiveness)। पारिभाषिक शब्द का अर्थ नियत-निश्चित होना चाहिए और एक (प्रमुख) अर्थ को व्यक्त करने वाला केवल एक ही शब्द होना चाहिए।' (पृ. 188)

डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी द्वारा संपादित पुस्तक 'अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ' में 'पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद' शीर्षक लेख में श्री जीवन नायक ने लिखा है कि 'विशेष ज्ञान के क्षेत्र में जब कोई शब्द निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है तो उसे पारिभाषिक शब्द कहते हैं।' (पृ.131)

डॉ. पूरनचंद टंडन ने अपनी पुस्तक 'अनुवाद साधना' में पारिभाषिक शब्दावली को परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'पारिभाषिक शब्द अर्थपरक (भावपरक) अथवा वैचारिक शब्द (conceptual word) होते हैं अर्थात् वे उपयुक्त संदर्भ में किसी शब्द का अर्थ परिभाषित करते हैं, ताकि शब्द की संकल्पना मस्तिष्क में बन जाए।' (पृ.106)

डॉ. दंगल झाल्टे ने प्रयोजनमूलक हिंदी से संबंधित अपनी पुस्तक 'प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग' में पारिभाषिक शब्दावली को परिभाषित करते हुए लिखा है -'जो शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त न होकर ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विषय एवं संदर्भ के अनुरूप विशिष्ट किंतु निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं। इसे तकनीकी शब्दावली भी कह सकते हैं।' (पृ.100)

विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं से पता चलता है कि पारिभाषिक शब्द वे हैं, जिनका संबंध सामान्य भाषा-व्यवहार से न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से होता है और प्रत्येक क्षेत्र के लिए संकल्पनाओं को औपचारिक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए उनकी अर्थ-सीमा निश्चित रहती है, ताकि उन्हें ठीक-ठीक पारिभाषित किया जा सके। पारिभाषिक शब्द के अर्थ-तत्त्व को स्पष्ट करने वाली उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर **'उस शब्द को पारिभाषिक शब्द कहा जा सकता है, जो अर्थ एवं प्रयोग की दृष्टि से ज्ञान के किसी विशिष्ट क्षेत्र में रूढ़ होकर एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं और जो परिभाषा से युक्त हों।'** और जब हम यह कहते हैं कि 'परिभाषिक शब्दावली' तो इसका अर्थ है – 'परिभाषिक शब्दों का समग्र रूप'। इस प्रकार, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रशासन, कृषि, बैंकिंग-बीमा, वाणिज्य-व्यापार आदि सहित ज्ञान-विज्ञान की समस्त शाखाओं-प्रशाखाओं से संबंधित इस प्रकार की शब्दावली को 'पारिभाषिक शब्दावली' कहा जाता है। वैसे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं की शब्दावली को संक्षेप में 'वैज्ञानिक शब्दावली' भी कह दिया जाता है, जिसका अर्थ वस्तुतः 'पारिभाषिक शब्दावली' ही होता है।

पारिभाषिक शब्दावली संबंधी उक्त विचारों से यह स्पष्ट है कि पारिभाषिक शब्दों का संबंध विधा-विशेष, विज्ञान या कला से संबंधित विशिष्ट विषय से होता है और ये उनमें विशिष्ट अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे वाणिज्य-व्यापार, बैंक, कार्यालय, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि से संबंधित क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाले परिभाषेय शब्द। ये असामान्य शब्द होते हैं। इन शब्दों का प्रयोग सामान्य व्यवहार में न होकर केवल विषय-विशेष में ही निश्चित अर्थ में किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'अनुभाग', 'प्रभाग', 'अधिसूचना', 'कार्यालय आदेश', 'निविदा', 'संविदा', 'विज्ञप्ति' आदि शब्द कार्यालयी भाषा में प्रयुक्त होते हैं। इसी प्रकार 'संज्ञा', 'सर्वनाम', 'विशेषण', 'क्रिया-विशेषण', 'स्वर', 'व्यंजन', 'स्वनिम', 'रूपिम' आदि शब्द भाषाविज्ञान के क्षेत्र में व्यवहृत होते हैं।

पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ-स्वरूप को जानने के बाद आइए अब हम इसके प्रकारों पर विचार करें।

8.3 पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार

शब्द, भाषा की स्वतंत्र-सार्थक एवं अत्यधिक महत्त्वपूर्ण इकाई है। जीवन-व्यवहार के जितने अधिक क्षेत्रों में भाषा का प्रयोग होता है, उन्हीं के अनुकूल भाषा-विशेष की शब्दावली भी विकसित होती चलती है। हिंदी भाषा की शब्दावली विभिन्न शब्द-स्रोतों के माध्यम से समृद्ध हुई है। इसमें संस्कृत से सीधे आए तत्सम, हिंदी में नया रूप, उच्चारण एवं वर्तनी प्राप्त संस्कृत के तद्भव, हिंदी की बोलियों के देशज और विदेशी भाषाओं से प्राप्त विदेशी शब्द-स्रोत शामिल हैं। इनके बारे में पिछली इकाई संख्या 7 में चर्चा की जा चुकी है और आपको इनका बोध हो चुका है।

शब्दों की रचना-प्रक्रिया के आधार पर सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दावली में कोई अंतर नहीं होता है, किंतु प्रयोग की भिन्नता शब्दों में भिन्नता स्थापित करती है। पारिभाषिक शब्दों का कुछ विशिष्ट एवं भिन्न स्वरूप उन्हें सामान्य शब्दों की तुलना में वैशिष्ट्य प्रदान करते हैं। इसलिए विभिन्न विद्वानों ने उन्हें प्रयोग के आधार पर भिन्न-भिन्न वर्गों में विभाजित किया है।

पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में सांगोपांग विवेचन-विश्लेषण करने वाले प्रथम भारतीय चिंतक श्री राजेंद्र लाल मित्र ने 1877 में प्रकाशित 'A Scheme for the rendering of European Scientific Terminology into Vernaculars of India' शीर्षक अपनी पुस्तिका में पारिभाषिक शब्दों को जिन छह वर्गों में विभाजित किया है, वे हैं -- (1) सामान्य शब्द : जो कभी-कभी पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयुक्त होते हैं – जैसे सिर, पेड़, लोहा तथा ज्वर। (2) वे शब्द जो सामान्य शब्द के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं तथा पारिभाषिक शब्द के रूप में भी, किंतु मुख्यतः मानविकी के क्षेत्र में ये अर्धपारिभाषिक कहे जा सकते हैं – जैसे मांसपेशी, पंखुरी, रवा आदि। (3) इसमें योगरूढ़ शब्द आते हैं। निर्माण के समय ये शब्द वस्तुओं के विशिष्ट गुणों के द्योतक थे, किंतु अब इनका पुराना व्युत्पत्तिजनक अर्थ लुप्त हो गया है और अब ये मात्र नाम रह गए हैं – जैसे, कुनैन, आक्सीजन आदि। (4) वनस्पतिविज्ञान तथा प्राणिविज्ञान में प्रयुक्त द्विपदीय (binomical) नाम, जो मूलतः व्युत्पत्ति की दृष्टि से सार्थक थे, किंतु अब उनके दोनों शब्द केवल 'वंश' और 'जाति' को प्रकट करते हैं। (5) ये तकनीकी शब्द जो अब भी अपना व्युत्पत्तिजनक अर्थ देते हैं, जैसे, रवाकरण (क्रिस्टालाइजेशन), अंकुरण (जर्मिनेशन) आदि। (6) समस्तपदीय शब्द : इसमें एक या दोनों शब्द अपना व्युत्पत्तिपरक अर्थ देते हैं – जैसे सल्फ्यूरिक अम्ल। इस वर्ग के शब्द शरीर रचनाविज्ञान या रसायनशास्त्र के होते हैं। (पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ, संपा. डॉ. भोलानाथ तिवारी और महेंद्र चतुर्वेदी, पृ. 19 से उद्धृत)

सामाजिक विज्ञानों की शब्दावली को अपने शोध एवं समीक्षा का विषय बनाकर हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में संभवतः सर्वप्रथम पी-एच.डी. अध्ययन करने वाले डॉ. गोपाल शर्मा ने अपने शोध-प्रबंध में शब्द और पारिभाषिक शब्द पर विचार करते हुए लिखा है कि 'पारिभाषिक शब्द तीन प्रकार के होते हैं : (1) पूर्ण पारिभाषिक, (2) मध्यस्थ; तथा (3) सामान्य।' (सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षा अध्ययन, पृ.10)

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने स्रोत, रचना, प्रयोग, अर्थवत्ता, पदीय इकाइयों, विषय आदि विभिन्न आधारों पर पारिभाषिक शब्दों को वर्गीकृत किया है। उन्होंने शब्दों के प्रयोग के आधार पर उनके तीन प्रकारों (सामान्य, अर्ध-पारिभाषिक और पारिभाषिक) को पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण में से एक वर्ग माना है। उनके द्वारा संपादित पुस्तक 'पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ'(पृ. 18-20) में प्रस्तुत वर्गीकरण इस प्रकार है :

(क) स्रोत के आधार पर : (1) तत्सम, (2) तद्भव, (3) आगत (विदेशी), (4) देशज, (5) संकर (मिश्रित – जैसे ज़िलाधीश) अथवा (1) परंपरागत – अर्थात् अपनी भाषा-परंपरा में पहले से प्रयुक्त; (2) गृहीत – अर्थात् दूसरी भाषा से लिए गए; (3) नवनिर्मित अर्थात नए बनाए गए।

(ख) रचना के आधार पर : (1) मूल; (2) यौगिक (उपसर्गयुक्त, प्रत्ययुक्त, समस्तपद, उपसर्ग प्रत्ययुक्त, उपसर्ग-समस्तपद, प्रत्ययुक्त-समस्तपद, उपसर्ग प्रत्ययुक्त-समस्तपद)। अर्थ के आधार पर यौगिक के दो भेद हो सकते हैं : सामान्य और रूढ़। सामान्य शब्द तो अपना सामान्य अर्थ देते हैं, किंतु रूढ़ शब्द विशेष अर्थ में

रूढ़ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए 'भाषाविज्ञान' सामान्य शब्द है, किंतु 'कोश' रूढ़ हो गया है, क्योंकि 'कोश' का प्रयोग किसी भी वस्तु के भंडार, खजाने या समूह के लिए न होकर 'शब्दकोश' के लिए होता है।

(ग) प्रयोग के आधार पर : (1) पूर्ण पारिभाषिक – जो केवल पारिभाषिक हो, सामान्य भाषा में प्रयुक्त न हो। जैसे भाषाविज्ञान का पारिभाषिक शब्द 'स्वनिम' (फोनिम)। (2) अर्धपारिभाषिक – जो सामान्य भाषा में भी प्रयुक्त हो तथा पारिभाषिक रूप में भी प्रयुक्त हों। जैसे -'अक्षर' जो सामान्य भाषा में 'लेटर' या 'हर्फ' है तो भाषाविज्ञान में सिलेबल। सामान्य शब्द यदि कभी-कभी पारिभाषिक रूप में प्रयुक्त होता है तो उसे भी इसी वर्ग में रखना चाहिए। आवश्यकतानुसार प्रयोग के आधार पर अर्धपारिभाषिक के अल्पपारिभाषिक, अत्यल्पपारिभाषिक आदि भेदोपभेद भी किए जा सकते हैं।

(घ) अर्थ की सूक्ष्मता-स्थूलता के आधार पर : (1) संकल्पनाबोधक – जो सूक्ष्म संकल्पनाओं, प्रत्ययों या अवधारणाओं को व्यक्त करे : जैसे अद्वैतवाद, समीकरण, ऊर्जा। (2) वस्तुबोधक – जो वस्तुओं को बोधित करे : जैसे कैलशियम।

(ङ) शब्द में पदीय इकाइयों के आधार पर : इस आधार पर मुख्य प्रकार तीन हो सकते हैं : (1) एकपदीय – जिसमें एक पद हो : जैसे धमनी। (2) द्विपदीय – जिसमें दो पद हों। वनस्पतिविज्ञान तथा प्राणिविज्ञान में ऐसे नाम प्रायः मिलते हैं। जैसे 'आम' के लिए Mangifera indica या 'मोर' के लिए Povo cristatus। ऐसे नामों में पहला नाम वंश का तथा दूसरा जाति का होता है। दो शब्दों वाले पारिभाषिक शब्द अन्य विज्ञानों में भी हो सकते हैं, किंतु उन्हें प्रायः द्विपदीय नहीं कहते। जैसे गणित में 'चक्रवृद्धि ब्याज' या भाषाविज्ञान में 'निकटस्थ अवयव'। (3) त्रिपदीय – जिसमें तीन पद हों। ये दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे, जिनमें पहला शब्द वंश का, दूसरा जाति का तथा तीसरा प्रजाति का होता है। जैसे मनुष्य के सिर के जूँ के लिए Pediculus humanus capitis या शरीर के अन्य भागों के जूँ के लिए Pediculus humanus corporis अथवा आधुनिक मानव के लिए Homo sapiens sapines तथा एक प्राचीन मानव के लिए Homo sapiens neanderthelensis। दूसरे प्रकार के त्रिपदीय पारिभाषिक शब्दों में पहला नाम वंश का, दूसरा जाति का तथा तीसरा अन्वेषक का होता है। जैसे 'मोर' के लिए Pavo cristatus Linnaeus। तीन शब्दों वाले पारिभाषिक शब्द अन्य विज्ञानों के भी हो सकते हैं (जैसे भाषाविज्ञान – रूपांतरक प्रजनक व्याकरण) किंतु इन्हें प्रायः त्रिपदीय नहीं कहते।.....

(च) विषय के आधार पर : इस आधार पर हर विज्ञान या शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों को अलग-अलग वर्गों में रखा जा सकता है। जैसे दर्शन के, भाषाशास्त्र के, जीवविज्ञान के, रसायन के, आदि।

डॉ. विनोद गोदरे ने अपनी कृति 'प्रयोजनमूलक हिंदी' में पारिभाषिक शब्दों के वर्गीकरण के निश्चित आधार के अभाव को रेखांकित किया है और माना है कि 'वर्गीकरण आधारों तथा वर्गीकरण के भेद-प्रभेदों को अधिक विस्तारों की उलझनों से बचने के लिए पारिभाषिक शब्दावली को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है : (1) पूर्ण पारिभाषिक शब्दावली, जो विभिन्न अनुसंधानों में ज्ञान विज्ञान की शाखाओं में प्रयुक्त शब्दावली का स्थूलवाचक शब्दावली है। (2) अर्धपारिभाषिक शब्दावली, जिसमें सामान्य शब्द संदर्भ विशेष में पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं। चूँकि सामान्यतः ये पारिभाषिक शब्द नहीं होते किंतु कभी-कभार ही संदर्भ की आवश्यकता से पारिभाषिक बनते हैं, अतः इन्हें पारिभाषिकोन्मुख सामान्य शब्द कहा जा सकता है। इन्हें अर्धपारिभाषिक शब्द भी कहा जा सकता है।' (पृ.160)

अब तक की गई चर्चा से यह स्पष्ट है कि इसमें कोई दो राय नहीं कि पारिभाषिक शब्दावली को वर्गीकृत करने संबंधी किसी भी निश्चित आधार का अभाव है। उदाहरण के लिए, अगर स्रोत के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली का वर्गीकरण किया जाए तो आगत अथवा पाश्चात्य वर्ग के पारिभाषिक शब्दों के भी कई उपवर्ग बन जाएँगे। इसी प्रकार, विषय के आधार पर किया गया पारिभाषिक शब्दावली का वर्गीकरण भी कई शाखाओं-प्रशाखाओं में विभाजित नजर आएगा और उनमें भी परस्पर अतिक्रमण होगा। इसलिए पारिभाषिक शब्दावली के बारे में उनके प्रयोग अथवा व्यवहार का अवलंब लेना ही उपयुक्त प्रतीत होता है। इसी आधार पर पारिभाषिक शब्दावली को (1) अर्ध-पारिभाषिक शब्द; एवं (2) पारिभाषिक शब्द में वर्गीकृत करना ही सरल, स्पष्ट एवं तर्कसंगत प्रतीत होता है।

पारिभाषिक शब्द के अर्थ और स्वरूप पर इस इकाई के भाग 8.2 में विचार किया जा चुका है। वहाँ आपको यह स्पष्ट किया जा चुका है कि इन शब्दों का संबंध विधा-विशेष, विज्ञान या कला से संबंधित विशिष्ट विषय से होता

है और ये उनमें विशिष्ट अर्थों में प्रयुक्त होते हैं; ये असामान्य शब्द होते हैं और इनका प्रयोग सामान्य व्यवहार में न होकर केवल विषय-विशेष में ही निश्चित अर्थ में किया जाता है। इसलिए अब हम यहाँ पर केवल 'अर्ध-पारिभाषिक शब्द' के बारे में जानेंगे।

अर्ध-पारिभाषिक शब्द : अर्ध-पारिभाषिक, सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों के बीच की स्थिति में आने वाले शब्द होते हैं। इनका सामान्य जीवन-व्यवहार में तो इस्तेमाल होता ही है, किसी भी विशिष्ट ज्ञान-क्षेत्र के संदर्भ में भी इस्तेमाल किया जाता है। इन शब्दों का यह वैशिष्ट्य होता है कि इनका पारिभाषिक अर्थ व्याख्या, लोक-प्रयोग, अर्थ-विस्तार, अर्थादेश, अर्थ-संकोच द्वारा सिद्ध होता है। लोक-व्यवहार एवं शास्त्र/विज्ञान-विशेष में प्रयुक्त होने के स्तर पर शब्द के इस रूप में कोई परिवर्तन नहीं आता है, ये केवल नया अर्थ लिए हुए होते हैं। 'आवेश', 'भिन्न', 'दावा', 'संधि', 'रस', 'पुष्प', 'रेखा', 'ऋण', 'हस्ताक्षर', 'कार्य', 'दंड' 'सूजन', 'वृक्ष', 'वेदना', 'स्वीकृत', 'शक्ति', 'प्रणाली' आदि ऐसे ही शब्द हैं। इस प्रकार के शब्द अर्थांतरण गुण लिए हुए होते हैं अर्थात सामान्य अर्थ में तो इन्हें प्रयुक्त किया ही जाता है, यदि इन्हें स्पष्ट किया जाए तो इनमें ज्ञान-विशेष के क्षेत्र-विशेष संबंधी वैज्ञानिक-तकनीकी वैशिष्ट्य भी नजर आएगा।

8.4 सामान्य एवं पारिभाषिक शब्द में अंतर

'पारिभाषिक शब्द' कहने मात्र से इसका 'सामान्य शब्द' से पार्थक्य स्थापित हो जाता है। यहाँ सर्वप्रथम यह विचारणीय हो जाता है कि सामान्य शब्द एवं पारिभाषिक शब्द में समानता-असमानता का आधार क्या है?

होता यह है कि कभी-कभी एक ही शब्द अलग-अलग संदर्भों में पारिभाषिक रूप भी ग्रहण कर सकता है और सामान्य भी। उदाहरण के लिए, यदि बोलचाल में यह कहा जाए कि 'मुझे उसकी बात पर आपत्ति है' तो यहाँ 'आपत्ति' शब्द सामान्य प्रतीत होता है किंतु जब इसी शब्द को 'विधि' (Law) के संदर्भ में प्रयुक्त करते हुए कहें कि 'प्रतिवादी की आपत्ति' तो वहाँ 'आपत्ति' एक पारिभाषिक शब्द है। इस प्रकार, यदि शब्द को विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त किया जाए तो वह पारिभाषिक होता है अन्यथा सामान्य। अरस्तू ने अपने 'काव्यशास्त्र' में भी कहा है कि एक ही शब्द अलग-अलग संदर्भों-प्रकरणों में पारिभाषिक भी हो सकता है और सामान्य भी। सामान्य शब्द आम भाषा में परंपरागत अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं जबकि पारिभाषिक शब्द ज्ञान-विज्ञान अथवा शास्त्र में विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। वैसे, सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों के बीच समानता और असमानता को (1) शब्दों की संरचना; और (2) अर्थ के आयाम से रेखांकित किया जा सकता है।

8.4.1 संरचनात्मक स्तर पर समानता-असमानता

शब्द की संरचना के स्तर पर देखें तो यह आयाम शब्द-निर्माण की विधि से संबंधित है, शब्द-रचना से संबद्ध है। शब्द-निर्माण भाषिक नियमों के अनुसार होता है और व्याकरण पर आधारित होता है। यह व्याकरण सामान्य और पारिभाषिक शब्दों के लिए समान होता है। धातु, उपसर्ग और प्रत्यय के मेल से शब्दों की रचना की जाती है। सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों का निर्माण इन्हीं तीनों उपादानों से होता है। धातु के साथ उपसर्ग-प्रत्यय अथवा शब्द जोड़कर शब्दों की व्युत्पत्ति की जाती है। उपसर्ग-प्रत्यय के अतिरिक्त समास भी शब्द-रचना का तरीका है। इनके माध्यम से शब्द-निर्माण की प्रक्रिया में संधि की सहायता भी ली जा सकती है। भाषा में इनके विशिष्ट नियम होते हैं, जिनसे शब्दों की संरचना बनती है। 'विश्वास', 'अविश्वास', 'विश्वसनीय', 'विश्वनीयता'; 'सुंदर', 'असुंदर', 'सुंदरता'; 'कुशल', 'अकुशल', 'सकुशल', 'कुशलता' आदि शब्दों की रचना धातुओं में उपसर्ग-प्रत्यय लगने से हुई है। इसी भाँति धातुओं के आगे-पीछे उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर पारिभाषिक शब्दों का भी निर्माण किया जाता है, क्योंकि पारिभाषिक शब्दों का अपना कोई अलग से व्याकरण नहीं होता है। 'विधि', 'विधिक', 'विधिवेत्ता', 'विधिवत', 'वैध', 'अवैध', 'विधिहीन', 'विधान', 'वैधी', 'प्रविधि', 'विधायी', 'विधायक', 'विधेयक' आदि पारिभाषिक शब्दों की रचना भी संस्कृत की धातुओं में उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर हुई है। स्पष्ट है कि शब्दों के संरचनात्मक स्तर पर सामान्य शब्द एवं पारिभाषिक शब्द में कोई अंतर नहीं है।

वैसे इस तथ्य को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हो रहे विकास के साथ-साथ जो अनेक नए आविष्कार एवं उनसे संबद्ध संकल्पनाएँ विकसित हो रही हैं, उन्हें व्यक्त करने के

लिए नए शब्दों की माँग दिनोंदिन बढ़ रही है। जिस भाषा में इसका विकास होता है, उसमें नए शब्द बनते हैं और विकास को जो भाषाएँ ग्रहण करती हैं, वे उस शब्दावली के अंगीकरण, अनुकूलन, नव-निर्माण एवं अनुवाद के माध्यम से नए शब्दों का निर्माण-विकास करती हैं। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि इन्हें भाषा के मान्य व्याकरणिक विधानों के अंतर्गत ही निर्मित किया जाता है।

8.4.2 अर्थ-संरचना के स्तर पर असमानता

सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों के बीच मूल अंतर, वस्तुतः अर्थ-संरचना के स्तर पर ही होता है। भाषा में शब्द का अर्थ अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना शक्ति से संपन्न होता है। व्यक्ति प्रयोजन एवं दृष्टिकोण के अनुरूप अपनी भाषा में शब्द को इन अर्थों के संदर्भ में प्रयुक्त कर सकता है। विशेष तौर पर साहित्य में शब्दों का लाक्षणिक प्रयोग उसे वैशिष्ट्य प्रदान करता है। जबकि पारिभाषिक शब्द में यह गुण होता है कि विषय-विशेष के संदर्भ में अभिधार्थ एक ही अर्थ देता है, किसी अन्य स्थल पर हम उसका वही अर्थ ग्रहण नहीं कर पाते। साहित्यिक भाषा में 'आँसुओं की नदी बहाना' लाक्षणिक अर्थ-व्यंजक है, क्योंकि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है, जिसकी आँखें आँसुओं की नदियाँ बहा सकें। इस तरह देखा जाए तो यहाँ मूल अर्थ में विचलन लाते हुए अर्थ-विस्तार किया गया है। जबकि ज्ञान के संदर्भ में 'नदी' शब्द प्रयुक्त होने पर उसका मूल अर्थ स्थिर है। उसमें वस्तुनिष्ठता है। पारिभाषिक शब्द शास्त्र-सापेक्ष होते हैं, उनके द्वारा व्यंजित अर्थ में निश्चितता एवं सूक्ष्मता होती है। पारिभाषिक शब्दावली की इस प्रकार की विशिष्टता उन्हें अर्थ के स्तर पर सामान्य शब्द से पृथक पहचान देती है।

पारिभाषिक (तकनीकी) शब्द किसी व्यापार, प्रक्रिया अथवा विशिष्ट संकल्पना के अर्थ के अभिव्यंजक भी हो सकते हैं (जैसे 'गणित' विषय में 'दशमलव', 'बिंदु, 'समीकरण' आदि, 'भाषाविज्ञान' में 'ध्वनि', 'स्वन', 'स्वनिम', 'रूपिम' आदि, 'दर्शनशास्त्र' में 'माया', 'जगत', 'आत्मा', 'मोक्ष', 'प्राण', 'स्वर्ग', 'नरक', 'अजर', 'अमर' आदि) और ठोस वस्तुओं का बोधक तकनीकी शब्द भी (जैसे, रसायन विज्ञान में 'कैल्शियम', 'नाइट्रोजन', 'सोडियम', 'कार्बन' आदि; वनस्पतिशास्त्र में 'ज़ायलम', 'फ़्लोयम' आदि; प्राणिशास्त्र में 'कोशिका', 'धमनी', 'जीवद्रव्य' आदि)। पदार्थवाची शब्द विविध प्रकार की भौतिक वस्तुओं से संबंधित होते हैं। ऐसे शब्दों का बाहुल्य प्रायः प्राकृतिक विज्ञानों की परिधि में होता है, जबकि संकल्पनावाची शब्द अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और अमूर्तवाची होते हैं। इस प्रकार के शब्दों की परिभाषा देना आवश्यक होता है। इन्हें परिभाषित करने का मूल कारण यह है कि ऊपरी तौर वह शब्द-विशेष भले ही सामान्य अर्थ की प्रतीति कराए, किंतु वास्तव में उसका एक अन्य निश्चित अर्थ भी होता है। जैसे भौतिकी के क्षेत्र में 'घनत्व' (density) शब्द को भी लिया जा सकता है, जिसका सामान्य अर्थ घनापन अथवा गाढ़ापन है, जबकि विषय-विशेष में इसका प्रयोग 'किसी वस्तु के इकाई आयतन की मात्रा' के अर्थ में होता है।

8.5 पारिभाषिक शब्दावली के अभिलक्षण

पारिभाषिक शब्दों के अर्थ-तत्त्व को स्पष्ट करने के लिए जहाँ उसकी परिभाषा अथवा व्याख्या पर समुचित ध्यान दिया जाना अपेक्षित है, वहीं इनके अचूक अथवा सटीक प्रयोग करने के लिए उनके अभिलक्षणों के बारे में जानना-समझना आवश्यक है। विभिन्न विद्वानों ने पारिभाषिक शब्दों के अभिलक्षणों पर विचार किया है। समेकित रूप में पारिभाषिक शब्दावली के विशिष्ट अभिलक्षण इस प्रकार से हैं – (1) असामान्यता, (2) परिभाष्यता, (3) विशिष्ट अथवा नियत अर्थ के संवाहक, (4) अप्रतिस्थापना, (5) दुरूहता, (6) विषय-सापेक्ष अथवा संकल्पनानुरूप, (7) अर्थ-रूढ़ि, (8) अर्थ-सूक्ष्मता, (9) अर्थ-भेदकता, (10) कृत्रिम निर्माण एवं प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व, (11) भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति के अनुकूल, (12) विस्तारशीलता, (13) प्रयोग में एकरूपता से शब्दावली का मानकीकरण संभव; और (14) तकनीकी शैली के विकास में सहायक। आइए, अब इन पर क्रमशः विचार करें।

8.5.1 असामान्यता

'असामान्यता' पारिभाषिक शब्दावली का विशिष्ट अभिलक्षण है। असामान्यता का अर्थ है – पारिभाषिक शब्दों से संबद्ध भाव-विचार अथवा परिकल्पना आम तौर पर व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होती। इसलिए पारिभाषिक शब्द दैनिक

जीवन से काफी दूर होते हैं। दैनंदिन व्यवहार की भाषा के लिए पारिभाषिक शब्द असामान्य होते हैं। उदाहरण के तौर, पर 'इडा', 'पिंगला', 'बक-अंड न्याय', 'अधिसूचना', 'प्रतिभू', 'कर्षण', 'प्रव्रज्या', 'नाभिकीय' आदि पारिभाषिक शब्द ऐसे हैं, जो दैनंदिन व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त नहीं होते हैं।

8.5.2 परिभाष्यता

पारिभाषिक शब्दों की प्रमुख विशेषता अथवा अभिलक्षण है – उसका परिभाषित (defined) होना। कहने का तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्द परिभाषित होते हैं। उन्हें अधिकांशतः परिभाषा दिए बिना समझा नहीं जा सकता। पारिभाषिक शब्दों को उनकी संकल्पना के अनुरूप परिभाषा देते हुए अथवा संकल्पना की व्याख्या करते हुए समझा-समझाया जाता है। उदाहरण के लिए, 'ताप', 'गुणांक', 'ओम', 'वोल्ट', 'सॉफ्टवेयर', 'घनत्व', 'गुण-सूत्र' आदि पारिभाषिक शब्द देखे जो सकते हैं, जो परिभाष्य होते हैं।

8.5.3 विशिष्ट अथवा नियत अर्थ के संवाहक

किसी भी भाषा के शब्द विशिष्ट अर्थ को संवहण किए हुए होते हैं। वैसे, सामान्य तथा साहित्यिक शब्दों में अर्थ के विस्तार की संभावना रहती है, जबकि वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों में अर्थ का संकोच होता है। भाषाविज्ञान की शब्दावली में इसे 'अर्थ-संकोच' कहा जाता है। ज्ञान-विशेष के संदर्भ में ये 'एक संकल्पना अथवा अर्थ एक शब्द का सिद्धांत' पर आधारित होते हैं, अर्थात पारिभाषिक शब्द एक ही पारिभाषिक अर्थ को व्यक्त करता है। और यह अर्थ विषय-क्षेत्र विशेष के संदर्भ में सुनिश्चित होता है। इनके पर्यायवाची नहीं होते हैं। उल्लेखनीय है कि शब्द अपने सुनिश्चित अर्थ की सीमा का अतिक्रमण नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए 'पद' पारिभाषिक शब्द को लिया जा सकता है, जो प्रशासन के क्षेत्र में ओहदा या कार्यालय में व्यक्ति के स्तर (post) के लिए, काव्य के क्षेत्र में पद्य (verse) के लिए, समाजशास्त्र के क्षेत्र में सामाजिक प्रस्थिति (status) और व्याकरण में शब्दरूप (word) के लिए प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार, विज्ञान की एक शाखा 'शरीर विज्ञान' में प्रयुक्त होने वाले 'संधि' शब्द को लिया जा सकता है। शरीर विज्ञान में 'संधि' शब्द को अस्थियों के संयोग के लिए प्रयुक्त किया जाता है, जबकि सामाजिक विज्ञान की प्रशाखा 'राजनीति विज्ञान' में यही शब्द दो राज्यों के बीच समझौते के लिए प्रचलित है और 'व्याकरण' में यह दो निकटस्थ स्वरों के संयोग के लिए प्रयुक्त होता है। अगर हम अंग्रेजी के 'charge' शब्द को भी देखें तो वह क्षेत्र की भिन्नता के आधार पर भिन्न-भिन्न अर्थों की अभिव्यंजना करने वाला शब्द सिद्ध होता है। प्रशासन के क्षेत्र में वह 'कार्यभार' का सूचक है तो विज्ञान में 'आवेश' का, लेखा-विधि में 'व्यय' अथवा 'खर्च' का, वाणिज्य में 'उधार' का, विधि में 'आरोप' का और आम बोलचाल की सामान्य भाषा में 'दायित्व' अथवा 'जिम्मेदारी' के अर्थ की व्यंजना करता है।

यहाँ यह उल्लेख करना भी अनुचित न होगा कि अंग्रेजी भाषा में इस प्रकार के नियत अर्थ के संवाहक शब्दों का अभाव देखने को मिलता है। 'Degree', 'Bill', 'Balance' आदि ऐसे ही शब्द हैं जिनमें स्वतः संपूर्णता के अभाव को रेखांकित किया जा सकता है। शिक्षा जगत में 'Degree' शब्द 'उपाधि' का द्योतक है, जबकि विधि के क्षेत्र में यह 'विरुद्ध कार्रवाई का अधिकार' के अर्थ का। इसी प्रकार, 'Bill' शब्द लेखा के संदर्भ में 'बीजक' है, जबकि संसदीय शब्दावली में 'विधेयक' का और विज्ञान के क्षेत्र में यह शब्द 'संतुलन' का अर्थाभिव्यंजक है और लेखा-क्षेत्र में 'बकाया' अथवा 'शेष' अथवा 'बाकी' का।

8.5.4 अप्रतिस्थापना

अप्रतिस्थापना का अर्थ है – पर्याय द्वारा अपूरणीयता। अर्थात किसी ज्ञान-क्षेत्र विशेष के पारिभाषिक शब्द के लिए एक ही निश्चित पर्याय रखा जा सकता है। उसके लिए कोई भी दूसरा पर्याय प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। इसका यह अर्थ निकलता है कि विशिष्ट ज्ञान-क्षेत्र की संकल्पना-विशेष के लिए प्रयुक्त होने वाले विशिष्ट पारिभाषिक शब्द का स्थान कोई अन्य शब्द नहीं ले सकता। जैसे प्रशासनिक क्षेत्र में issue (जारी करना), विधि क्षेत्र में Proclamation, Nofication, अंतरिक्ष-क्षेत्र में INSAT, Satellite आदि। इसी भाँति गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान और अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में प्रयुक्त गुण-सूत्र, समीकरण, प्रतीक-चिह्न, द्विपदनाम, यौगिक नाम आदि के पर्याय पारिभाषिक शब्दों को व्यवहार में नहीं लाया जा सकता।

8.5.5 दुरूहता

कुछ पारिभाषिक शब्दों में दुरूहता परिव्याप्त होती है। उनका आशय गूढ़ होता है। 'दुरूहता' का तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्दावली में ऐसा आशय छिपा रहता है, जो शब्द के विश्लेषण से स्पष्ट नहीं हो पाता। उसे जानने के बावजूद समझा नहीं जा पाता। ऐसे शब्द को परपंरा एवं प्रयोग द्वारा समझा जा सकता है। काव्यशास्त्र का 'चित्र-तुरग न्याय', नीतिशास्त्र का 'बक-अंड न्याय' और दर्शनशास्त्र के 'अद्वैत', 'कुंडलिनी', 'माया' एवं 'ब्रह्म' आदि पारिभाषिक शब्दों के आशय में गूढ़ता के कारण उनमें दुरूहता व्याप्त रहती है।

8.5.6 विषय-सापेक्ष अथवा संकल्पनानुरूप

प्रत्येक विषय के विकास के लिए उसके अनुकूल ऐसी तकनीकी शब्दावली के विकास की जरूरत पड़ती है, जिसमें विचारों-भावों को पूरी क्षमता के साथ अभिव्यक्त किया जा सके। इस कारण प्रत्येक तकनीकी शब्द किसी न किसी विषय-क्षेत्र से संबद्ध होता है और उसी से अपना तकनीकी अर्थ एवं परिभाषा प्राप्त करता है। प्रत्येक तकनीकी अथवा पारिभाषिक शब्द में कुछ निश्चित भाव-संकल्पनाएँ एवं अर्थ निहित होते हैं। वैसे यह संभव है कि किसी एक विषय का पारिभाषिक शब्द दूसरे विषय-क्षेत्र में भिन्न तकनीकी अर्थ को अभिव्यक्त करे। किंतु यह संभव नहीं है कि एक ही विषय-क्षेत्र में एक ही तकनीकी शब्द दो भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हो। उसका अर्थ, विषय-विशेष के संदर्भ में सुनिश्चित होता है और वह उसी अर्थ में व्यवहृत होता है। उदाहरण के लिए बैंकिंग क्षेत्र में 'रेखित चेक', 'ओवरड्राफ्ट', 'मियादी जमा', 'बचत खाता', 'चालू खाता' आदि शब्दों के अभीष्ट अर्थ बैंकिंग व्यवहार क्षेत्र में स्पष्ट होते हैं। 'रेखित चेक' शब्द सामान्य रूप से यह अर्थ की व्यंजना करता है कि 'एक ऐसा चेक, जिस पर रेखा खींची गई हो'। जबकि बैंकिंग व्यवहार-क्षेत्र में इसका पारिभाषिक अर्थ है – 'एक ऐसा चेक, जिसके ऊपर बाईं ओर दो समानांतर रेखाएँ खिंची हों और उसमें उल्लिखित राशि उसी व्यक्ति के खाते में जमा हो पाती है, जिसके नाम चेक कटा हो, किसी अन्य व्यक्ति को नहीं।'

पारिभाषिक शब्दों को समझने के लिए विषय-विशेष का आधारभूत ज्ञान एवं जानकारी आवश्यक होती है। जो व्यक्ति विषय का जानकार है, जिसने विषय का अध्ययन किया हो और उससे संबंधित कार्यकलाप में संलग्न है, उसके लिए विषय-विशेष की शब्दावली का प्रयोग सहज है। इस जानकारी के अभाव में आम आदमी विषय को समझ नहीं सकता। चूँकि संकल्पना से संबंधित तकनीकी शब्द अमूर्त होते हैं, इस कारण उसकी परिभाषा देना जरूरी हो जाता है, ताकि उनकी अर्थ-व्याप्ति को समझा जा सके। computer virus, programming, software, hardware, floppy, hard disk आदि शब्द तकनीकी रूप लिए हुए हैं और इन शब्दों को अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की एक शाखा अर्थात कंप्यूटर विज्ञान के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्द विषय-सापेक्ष होते हैं।

8.5.7 अर्थ-रूढ़ि

पारिभाषिक शब्द जहाँ विशिष्ट अर्थ के संवाहक होते हैं, वहीं वे उस विशिष्ट अर्थ में रूढ़ भी होते हैं। पारिभाषिक शब्द और उस शब्द-विशेष के अर्थ के बीच का संबंध धीरे-धीरे सतत प्रयोग एवं व्यवहार से रूढ़ हो जाता है। यदि पारिभाषिक शब्द अथवा उसके किसी अंश का प्रतिस्थापन करते हुए उसके स्थान पर पर्याय को व्यवहार में लाया जाए तो वह अनुवाद को विकृत कर देता है। उदाहरण के लिए भौतिकी में Sound के लिए 'ध्वनि' शब्द प्रयुक्त होता है। किंतु इसके स्थान पर उसके समतुल्य पर्याय 'स्वन' शब्द को इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। कभी-कभी पारिभाषिक शब्द से जो सामान्य अर्थ (वाच्यार्थ) प्रकट होता है, वह उसके तकनीकी अर्थ से भिन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए कंप्यूटर प्रौद्योगिकी में 'mouse' उपकरण इस्तेमाल होता है, जिसकी सहायता से कंप्यूटर स्क्रीन पर रेखाएँ आदि खींची जाती हैं। यह चूहे की भाँति छोटा-सा उपकरण है और इसे मेज पर रखी एक प्लेट पर इधर-उधर घुमाकर इसका वांछित प्रयोग किया जाता है। जबकि इस पारिभाषिक शब्द का अंग्रेजी में शास्त्रीय (मूल) अर्थ यह नहीं है। शास्त्रीय अर्थ से अनभिज्ञ अनुवादक इसे 'चूहा' अनूदित कर सकता है। इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण है – Labour pain शब्द। अनुवादक इसका सामान्य अर्थ लेते हुए इसे 'श्रमजन्य पीड़ा' अनूदित कर सकता है, जबकि चिकित्साशास्त्र में यह शब्द 'प्रसव पीड़ा' के लिए रूढ़ है।

8.5.8 अर्थ-सूक्ष्मता

सामान्य शब्दों का अर्थ, अधिक व्यापक और विस्तृत होता है। इसे भाषाविज्ञान की शैली में यों कहा जा सकता है कि सामान्य शब्द की अर्थ-व्याप्ति अधिक व्यापक होती है। इनमें मुख्य अर्थ के अतिरिक्त कई गौण अर्थ भी निहित होते हैं और इनका लाक्षणिक प्रयोग भी संभव है। इस तरह, सामान्य शब्दों में अर्थ की बहुत अधिक व्यापक संभावनाएँ होती हैं, जबकि पारिभाषिक शब्दों का अर्थ अत्यंत सूक्ष्म, गहन एवं विस्तृत होता है। वह न केवल किसी विषय-क्षेत्र विशेष के संदर्भ में अर्थ को व्यक्त करता है अपितु वह उस अर्थ-विशेष के भी सूक्ष्म अंश का अर्थ उद्घाटित करता है। उदाहरण के लिए, सामान्य शब्द 'किरण' का लाक्षणिक प्रयोग करते हुए उसे 'आशा की किरण' के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है, जबकि विज्ञान शब्दावली में ray के लिए 'किरण', radition के लिए 'विकिरण' हो जाता है और beam 'किरण पुंज' है। आम आदमी इस प्रकार के सूक्ष्म अंतर को नहीं जान पता है, जबकि ज्ञान-विज्ञान में दो विचारों अथवा संकल्पनाओं में इसी प्रकार पृथक-पृथक पारिभाषिक शब्दों के माध्यम से सूक्ष्मातिसूक्ष्म विभेद को उद्घाटित किया जाता है। इस तरह के सूक्ष्म अंतर को दर्शाने वाला अन्य पारिभाषिक शब्द है – चाल (speed) और वेग (velocity) या फिर ताप (heat) और तापमान (temperature)।

हालाँकि अधिकांश पारिभाषिक शब्द लोक-व्यवहार में सामान्य अर्थों में प्रचलित सामान्य शब्द भंडार से ही आते हैं, किंतु जब वे विभिन्न विषय-क्षेत्रों में व्यवहृत होते हैं तो उनमें विशेष तकनीकी अर्थों का आरोपण हो जाता है अथवा कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, 'जन' और 'संख्या' से मिलकर बना 'जनसंख्या' अंग्रेजी के 'population' पारिभाषिक शब्द के लिए प्रयुक्त होता है, जोकि विशिष्ट अर्थ का द्योतक है।

पारिभाषिक शब्दावली की अर्थ-सूक्ष्मता का एक पक्ष यह भी है कि वैज्ञानिक-प्रौद्योगिकी सोच एवं संकल्पनाओं में परिमार्जन के साथ-साथ जो नई मौलिक उद्भावनाएँ सामने आती जाती हैं, वैसे-वैसे पारिभाषिक शब्द का अर्थ भी सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता चलता है। जैसे अंग्रेजी भाषा के सामान्य शब्द Programme और Memory, कंप्यूटर विज्ञान में विशिष्ट एवं सीमित अर्थ के अभिव्यंजक हो चुके हैं।

8.5.9 अर्थ-भेदकता

पारिभाषिक शब्दों से अर्थ में भेदकता आती है। पारिभाषिक शब्दों से न केवल एक अर्थ की अभिव्यंजना होती है, अपितु उसके भी सूक्ष्म अंश के अर्थ-बोध के प्रकटन से अर्थ में सूक्ष्मता आती है। वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी विषयक संकल्पनाओं के परिमार्जन से तकनीकी शब्दों के अर्थों के भेदोपभेद विकसित होते चलते हैं। ये शब्द भले ही सजातीय प्रतीत हों, किंतु इन भेदोपभेदों में सूक्ष्म अर्थ-भेद विद्यमान होता है। अलग-अलग पारिभाषिक शब्दों का निर्धारण करके इन्हें जहाँ तकनीकी रूप दिया जाता है, वहीं इनके बीच के अर्थ-भेद को सुरक्षित भी रखा जाता है। गैर-तकनीकी क्षेत्र में अथवा सामान्य व्यवहार में भले ही ये सूक्ष्म भेद महत्त्व न रखें, किंतु विज्ञान अथवा तकनीकी संदर्भ में इन भेदोपभेदों का अपना महत्त्व होता है। 'epidemic' के लिए 'महामारी, 'pandemic' के लिए 'विश्वमारी' और 'endemic' के लिए 'लघुमारी' शब्द सूक्ष्म अर्थ-भेद के व्यंजक शब्द हैं। इसी भाँति 'development' के लिए 'परिवर्द्धन', 'growth' के लिए 'वृद्धि' एवं 'evolution' के लिए 'विकास' शब्द सूक्ष्म अर्थ प्रकट करने वाले भिन्न-भिन्न पारिभाषिक शब्द हैं।

अनुवादक द्वारा इस प्रकार के अर्थ-भेदों को अनूदित पाठ में बनाए रखना महत्त्वपूर्ण होता है। इसके लिए उसे चाहिए कि वह सटीक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करते हुए इनके अर्थ-भेद को बनाए रखे। उदाहरण के लिए 'salary' और 'income' शब्द सामान्य संदर्भ में एक ही अर्थ के व्यंजक हैं, जबकि आयकर के संदर्भ में ये दोनों पृथक-पृथक पारिभाषिक अवधारणाएँ (अर्थात 'वेतन' और 'आय') हैं।

8.5.10 कृत्रिम निर्माण एवं प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व

अधिकांश पारिभाषिक शब्दों का कृत्रिम ढंग से निर्माण किया जाता है। ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में नितनूतन खोजों, अधुनातन विकास एवं नवीन वस्तुओं के निर्माण के कारण उनकी अभिव्यक्ति, नवीन विषय-वस्तु निरूपण या नई संकल्पनाओं को स्पष्ट करने के लिए उनके अनुरूप नए शब्दों का निर्माण आवश्यक हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि विषय, स्थिति एवं संदर्भ के अनुरूप शब्दों का निर्माण किया जाता है। यह शब्द-निर्माण कृत्रिम होता है। इसके अतिरिक्त, कभी-कभी आविष्कारों, आविष्कारकर्ता वैज्ञानिकों, सिद्धांत-प्रतिपादकों अथवा

प्रतीकों के आधार पर भी कृत्रिम पारिभाषिक शब्दों को गढ़ लिया जाता है। जूल, म्यू, लेम्बडा, पई, डार्विनिज़्म (डार्विनवाद), गांधिज़्म (गांधीवाद), मार्क्सिज़्म (मार्क्सवाद), फासिस्ट (फासीवादी). गेल्वेनाइजेशन (गेल्वनीकरण) आदि शब्द ऐसे ही हैं जिन्हें खोजकर्ता, सिद्धांत-प्रतिपादक अथवा प्रतीकों के आधार पर निर्मित किया गया है।

8.5.11 भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति के अनुकूल

पारिभाषिक शब्दों का संरचनात्मक स्वरूप भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति के अनुकूल होना चाहिए, ताकि उनके व्यवहार में कोई कठिनाई न हो। पारिभाषिक शब्द को जब उच्चरित किया जाए तो उसमें निहित संकल्पना का बोध होने की क्षमता से युक्त होना चाहिए। भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति की अनुकूलता की बात को किसी अन्य भाषा से लिए गए शब्द के संदर्भ में विशेष तौर पर ध्यान देने की होती है। पारिभाषिक शब्दों के बारे में देखा यह गया है कि जो शब्द हिंदी भाषा में चल पड़े हैं, वे उसकी प्रकृति के अथवा उच्चारण-सुकरता के अनुकूल ढल गए हैं। उदाहरण के लिए 'Ministry' शब्द का समतुल्य हिंदी पारिभाषिक शब्द 'मंत्रालय' है, जबकि भाषा संबंधी शुद्धता की दृष्टि से यह 'मंत्र्यालय' (अर्थात मंत्री + आलय) होना चाहिए था।

वैसे जो पारिभाषिक शब्द बहुत अधिक प्रयोग में नहीं आए हैं या फिर जिनकी अक्सर आवश्यकता नहीं पड़ती है उन्हें अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूल ढाल लेना सरल होता है। उदाहरण के लिए, 'Computerisation' के लिए 'कंप्यूटरीकरण' शब्द-रचना के स्तर पर और 'Tragedy' के लिए 'त्रासदी' शब्द निर्माण उच्चारण के स्तर पर अनुकूलन का प्रमाण है। वैसे पारिभाषिक शब्द की सहजता-सरलता एवं शुद्धता में से प्राथमिकता शुद्धता को ही दी जानी चाहिए।

8.5.12 विस्तारशीलता

विस्तारशीलता, पारिभाषिक शब्दावली का विशिष्ट अभिलक्षण है। यहाँ विस्तारशीलता का अर्थ है – पारिभाषिक शब्दावली में विस्तार की संभावना होनी चाहिए, अर्थात पारिभाषिक शब्द ऐसा हो, जिससे संबंधित विषय, क्षेत्र, सिद्धांत अथवा अवधारणा के अन्य पक्षों को प्रकट करने वाले अन्य अभीष्ट पारिभाषिक शब्द भी गढ़े जा सकें। भाषा में ऐसी विस्तार की संभावना रहती है। अंग्रेजी भाषा इस गुण से युक्त है, जबकि हिंदी भाषा में इस गुण के अभाव का तथाकथित आक्षेप किया जाता है। जबकि वास्तविकता यह है कि हिंदी भाषा शब्दावली-विस्तार की संभावना के गुण से संपन्न है। उदाहरण के तौर पर 'विधि' पारिभाषिक शब्द को देखा जा सकता है, जिसमें उपसर्ग-प्रत्यय आदि जोड़कर 'विधिं', 'विधिक', 'विधिवेत्ता', 'विधिवत', 'वैध', 'अवैध', 'विधिहीन', 'विधान', 'विधायी', 'विधायक', 'विधेयक' आदि पारिभाषिक शब्द निर्मित किए गए हैं। महान कोशकार डॉ. रघुवीर ने हिंदी की इस विस्तारशीलता को पहचाना एवं कोश-निर्माण कार्य में इसका विशेष ध्यान रखा। उन्होंने अंग्रेजी के 'Television', 'Telephone', 'Teleprinter', 'Telescope' आदि शब्दों के मूल में 'Tele' शब्द के लिए हिंदी में 'दूर' शब्द निर्धारित किया और इसके आधार पर क्रमशः 'दूरदर्शन', 'दूरभाष', 'दूरमुद्रक', 'दूरदर्शक' आदि शब्द गढ़े।

8.5.13 प्रयोग में एकरूपता से शब्दावली का मानकीकरण संभव

प्रयोग में एकरूपता से पारिभाषिक शब्दावली का मानकीकरण संभव होता है। एकरूपता और मानकीकरण पारिभाषिक शब्दावली की अनिवार्यता है। किसी भी भाषा में अनुवाद के माध्यम से विकसित होने वाली पारिभाषिक शब्दावली के संदर्भ में इस एकरूपता की नितांत आवश्यकता होती है, क्योंकि स्रोत भाषा के किसी तकनीकी शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में अलग-अलग तकनीकी पर्यायों के प्रयोग से पाठकों को अर्थ-बोध में भ्रम, अनुवाद में अव्यवस्था और शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता की स्थिति बन जाएगी। हिंदी भाषा में कई अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के लिए दो अथवा उससे अधिक हिंदी पर्याय प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञान संबंधी 'generation' के लिए 'प्रजनन', 'उत्पादन' और 'उत्पत्ति' शब्द। इसी प्रकार, भौतिकी के 'pressure' के लिए 'दबाव' या 'बल' और 'heat' के लिए 'गर्मी' अथवा 'उष्णता' पर्यायों की उपलब्धता। यह स्थिति केवल विज्ञान विषयक शब्दावली में नहीं बनी हुई है, अपितु मानविकी-सामाजिक विज्ञान विषयों एवं प्रशासन के क्षेत्र आदि में भी है। जैसे प्रशासन के क्षेत्र में 'Manager' के लिए 'प्रबंधक' या 'व्यवस्थापक', 'Collector' के लिए 'जिलाधीश', 'जिलाधिकारी', 'कलक्टर', 'संग्राहक', 'समाहर्ता' और 'Sub-Divisional Officer' के लिए 'अनुमंडलाधिकारी', 'उपमंडलाधिकारी', 'परगना अधिकारी', 'उपप्रभागीय अधिकारी' पर्यायों की उपलब्धता अथवा चलन।

इस प्रकार के तकनीकी पर्यायों के प्रयोग से शब्दावली को मानक रूप देने की प्रक्रिया बाधित होती है। वैसे इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्षों से प्रयोग में एकरूपता के कारण आज हिंदी भाषा में अनेक पारिभाषिक शब्द मानक रूप धारण कर चुके हैं। उदाहरण के तौर पर, 'सौर ऊर्जा' (solar energy), 'विद्युत' (electricity), 'अवमूल्यन' (devaluation), 'परियोजना' (project), 'पर्यावरण' (ecology), 'प्रदूषण' (pollution), 'संयंत्र' (plant), 'परिसर' (complex), 'अंतरिक्ष' (space), 'प्रेक्षपास्त्र' (missile), 'उपग्रह' (satellite), 'विश्वविद्यालय' (university), 'आयोग' (Commission) आदि। किंतु अभी और अधिक शब्दावली को मानकीकृत किया जाना अपेक्षित है।

कुछ के संदर्भ में स्थिति विपरीत है। यानि कुछ पारिभाषिक शब्दों में दो या अधिक तकनीकी पर्यायों के चलन के कारण एकरूपता का अभाव परिलक्षित होता है। अर्थात अंग्रेजी के दो अथवा उससे अधिक शब्दों के लिए हिंदी में एक ही पर्याय का प्रयोग। उदाहरण के लिए, 'President', 'Speaker', 'Head', 'Chief' और 'Chairman' के लिए 'अध्यक्ष' शब्द प्रयुक्त होना।

वैसे, इसमें कोई संदेह नहीं कि पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग में एकरूपता से जहाँ शब्दावली का मानकीकरण संभव हो पाता है, वहीं तद्विषयक लेखन और अनुवाद कार्य में सुकरता आती है। वस्तुतः तकनीकी शब्दों के प्रयोग में एकरूपता पारिभाषिक शब्दावली की अनिवार्यता है।

8.5.14 तकनीकी शैली के विकास में सहायक

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकीपरक संकल्पना को अभिव्यंजित करने के लिए प्रचलित भाषा को ही व्यवहृत किया जाता है। उसकी कोई अलग से अपनी भाषा नहीं होती। इस प्रकार की सामग्री के लेखक को किसी नई अथवा भिन्न भाषा की आवश्यकता नहीं होती। किंतु दूसरी ओर, वह अभिव्यक्ति के भाषाई स्वरूप और कथ्य में सामंजस्य स्थापित करते हुए चलता है। इसकी अभिव्यक्ति की शैली अभिलाक्षणिक प्रवृत्ति का प्रभाव लिए रहती है और इसका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक है – तकनीकी शब्दावली। तकनीकी शब्दों में इतनी ढेर सारी जानकारी छिपी होती है कि उसकी व्याख्या करनी पड़े तो वह कई पृष्ठों में उजागर हो पाएगी। वहीं, तकनीकी शब्दों के समावेश से वाक्य-विन्यास में कसाव आता है और भाषा परिपक्व प्रतीत होती है। तकनीकी शब्दों के प्रयोग में एकरूपता पारिभाषिक शब्दावली की अनिवार्यता है, इनके सतत प्रयोग से भाषा-विशेष में उसकी एक विशिष्ट तकनीकी शैली में विकसित हो जाती है।

वैज्ञानिक-प्रौद्योगिकी साहित्य लेखन और अनुवाद में ऐसी तकनीकी शब्दावली की आवश्यकता होती है, जिसमें विचारों-भावों को उद्घाटित करने की पूर्ण क्षमता हो और हर प्रकार की अभिव्यक्ति की क्षमता हो। इसमें वैज्ञानिक-तकनीकी अवधारणाओं और सिद्धांतों को यथातथ्य शब्दों के द्वारा अभिव्यंजित किया जाता है, जो केवल एक ही अर्थ को सही-सही उद्घाटित करे। स्पष्टता एवं यथातथ्यता की दृष्टि से जरूरी है कि विज्ञान-प्रौद्योगिकीविदों के विचार शब्दावली के माध्यम से पूरी तरह सुस्पष्ट हों। ये शब्द अपने प्रयोग के लिए एक विशेष प्रकार की अभिव्यक्ति-शैली की अपेक्षा करते हैं। विज्ञान की तथ्यपरकता एवं यथार्थमूलकता को बनाए रखने के लिए विज्ञान-प्रौद्योगिकी सर्जक प्रसंगहीन और भ्रामक अभिव्यक्तियों से बचते चलते हैं। इससे बाह्य भाषा कलेवर में व्यावसायिक परिपक्वता एवं कसाव का समावेश हो जाता है, जिसके आधार पर अभिव्यक्ति की विशिष्ट शैली उजागर हो जाती है। इस विशिष्ट तकनीकी शैली से ज्ञान की प्रस्तुति के लिए प्रयुक्त शब्दों का संक्षेपण हो जाता है और भाषा में बानगी आती है। इससे जहाँ भाषा समृद्ध एवं विस्तारशील होती है, वहीं उसमें एक विशिष्ट तकनीकी शैली रूप भी विकसित होती है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्यों में भाषिक कसाव देखते ही बनता है :

> प्रकृति में रेडियोऐक्टिव तत्त्वों से भी विकिरण होता है। ये एक विशेष गति से अन्य तत्त्वों में विघटित एवं विखंडित होते हैं। अपने ही द्वारा जनित अन्य तत्त्वों में विघटित होते समय भी इनसे विकिरण होता है जिनसे अल्प, बीटा तथा गामा में से कोई न कोई विकिरण अवश्य पैदा होता है। इन विकिरणों को क्रमशः अल्फामीटर, बीटामीटर और सिंटेलोमीटर से संकलित किया जा सकता है। प्रत्येक रेडियोऐक्टिव तत्त्व या उसके द्वारा जनित दूसरे विघटित तत्त्व निश्चित अर्द्ध-आयु (हाफ लाइफ) से विघटित होते-होते अंततः स्थायी लेड के समस्थानिक में परिवर्तित हो जाते हैं।

8.6 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया होगा पारिभाषिक शब्द सामान्य भाषा-व्यवहार से संबंधित न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित होते हैं। शब्द का विशिष्ट-सुनिश्चित अर्थ में प्रयोग ही उसे पारिभाषिक बना देता है। ये विषय-विशेष में विशिष्ट अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं और उनका यह वैशिष्ट्य ही उनके स्वरूप में भिन्नता ला देता है। अर्थ की स्पष्टता, विषय-सापेक्षता अथवा संकल्पनानुरूपता, अर्थ-रूढ़ि, अर्थ-सूक्ष्मता, अर्थ-भेदकता, प्रयोग में एकरूपता से शब्दावली का मानकीकरण, तकनीकी शैली के विकास में सहायक आदि वे विभिन्न अभिलक्षण हैं, जिन्हें ध्यान में रखकर पारिभाषिक शब्दावली को सही परिप्रेक्ष्य में देखा-समझा जा सकता है। भाषिक संरचना की दृष्टि से हालाँकि सामान्य एवं तकनीकी शब्दों में कोई अंतर नहीं होता है, लेकिन अर्थ-संरचना के स्तर पर दोनों प्रकार के शब्दों में अंतर स्थापित होता है। ये स्वयं में पूर्ण-पारिभाषिक एवं अर्ध-पारिभाषिक स्वरूप वाले होते हैं। इसलिए इन्हें अर्ध-पारिभाषिक और पारिभाषिक शब्द में वर्गीकृत किया जाता है।

पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा को जानने के बाद आपके मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि इनके विकास की प्रक्रिया क्या है? भारत में इनके निर्माण की कैसी विकास-यात्रा रही है और उसमें इनकी क्या भूमिका रही है? इसके मानकीकरण के लिए क्या प्रयास किए गए हैं? इन सभी के संदर्भ में हम अगली इकाई 'पारिभाषिक शब्दावली का विकास और मानकीकरण' पर विचार करेंगे।

8.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. 'पारिभाषिक शब्द' का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ स्पष्ट कीजिए और विभिन्न विद्वानों के मतों के आलोक में इसे पारिभाषित कीजिए।
2. पारिभाषिक शब्दों का वर्गीकरण कीजिए।
3. संरचनात्मक-स्तर और अर्थ-संरचना के स्तर पर शब्द और पारिभाषिक शब्द में समानता और असमानता पर प्रकाश डालिए?
4. पारिभाषिक शब्द के प्रमुख अभिलक्षणों की सोदाहरण चर्चा कीजिए।

8.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- गुप्त, गार्गी, (संपा.), 1992. *पारिभाषिक शब्दावली की विकास-यात्रा,* नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।
- तिवारी, भोलानाथ, 1978. *पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ,* दिल्ली, शब्दकार।
- कुमार, सुरेश (संपा.), 1997. *पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद,* आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान।
- शर्मा, गोपाल, 1968. *सामाजिक विज्ञानों की परिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन,* दिल्ली, एस. चाँद एंड कपनी।
- खेमाणी, आनंद प्रकाश एवं वेदप्रकाश (संपा.), 1964. *अनुवाद कला : कुछ विचार,* दिल्ली, एस. चाँद एंड कपनी।
- टंडन, पूरनचंद एवं सेठी, हरीश कुमार, 1998. *अनुवाद के विविध आयाम,* नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- नगेंद्र (संपा.), 1993. *अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं अनुप्रयोग,* हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (संपा.), 1985. *अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ,* दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- झाल्टे, दंगल, 2002. *प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- गोदरे, विनोद, 1991. *प्रयोजनमूलक हिंदी,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।

इकाई 9 पारिभाषिक शब्दावली का विकास और मानकीकरण

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 पारिभाषिक शब्दावली की विकास-प्रक्रिया

9.2.1 सहज विकास-प्रक्रिया

9.2.2 नियोजित विकास-प्रक्रिया

9.2.3 सहज और नियोजित विकास-प्रक्रिया में अंतर

9.3 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा

9.3.1 स्वतंत्रता-पूर्व शब्दावली निर्माण के प्रयास

9.3.2 स्वतंत्रता के पश्चात शब्दावली निर्माण के प्रयास

9.4 पारिभाषिक शब्दावली का मानकीकरण : प्रयास और समस्याएँ

9.5 सारांश

9.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

9.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य है :

- पारिभाषिक शब्दावली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय देना;
- शब्दावली-निर्माण में सहज विकास-प्रक्रिया के महत्त्व को रेखांकित करना;
- पारिभाषिक शब्दावली-निर्माण में हुए व्यक्तिगत तथा संस्थागत प्रयासों से अवगत कराना;
- पारिभाषिक शब्दावली-निर्माण में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के योगदान से परिचित करवाना; और
- पारिभाषिक शब्दावली के मानकीकरण के महत्त्व को रेखांकित करना।

9.1 प्रस्तावना

अनुवाद के संदर्भ में पारिभाषिक शब्दावली का स्थान केंद्रीय माना जा सकता है, क्योंकि वैज्ञानिक अनुवाद की प्रामाणिकता उचित पारिभाषिक शब्द के चयन पर निर्भर है। प्रस्तुत इकाई में यह बताया जा रहा है कि हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का विकास किस प्रकार हुआ है और वह किस तरह की विकास-प्रक्रियाओं से गुजरी है? पारिभाषिक शब्दावली के विकास की दो विशेषताएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं – (1) 'सहज विकास-प्रक्रिया'; और (2) 'नियोजित विकास-प्रक्रिया'। सहज विकास-प्रक्रिया में वैज्ञानिक लेखन को शामिल किया जाता है तथा नियोजित विकास-प्रक्रिया में शब्दावली-निर्माण को।

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में व्यक्तिगत प्रयास भी किए गए हैं और संस्थागत प्रयास भी। इसलिए पारिभाषिक शब्दावली के विकास की चर्चा में इन दोनों प्रकार के प्रयासों को भी अनिवार्यतः शामिल किया जाता है। इसी पृष्ठभूमि के साथ पारिभाषिक शब्दावली के विकास पर आगे प्रकाश डाला जा रहा है। इस पर विचार करते समय शब्दावली निर्माण संबंधी आजादी से पहले और आजादी के बाद किए गए प्रयासों की चर्चा की जा रही है। इकाई के अंत में पारिभाषिक शब्दावली के मानकीकरण के लिए किए गए प्रयासों और इस संदर्भ में अनुभव की गई समस्याओं

को विवेचन का विषय बनाया गया है। आइए, सबसे पहले हम पारिभाषिक शब्दावली की विकास-प्रक्रिया पर विचार करें।

9.2 पारिभाषिक शब्दावली की विकास-प्रक्रिया

इकाई 8 में पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ और स्वरूप का अध्ययन करके आपको यह बोध हो चुका होगा कि ज्ञान की किसी भी शाखा में अर्थात विभिन्न अनुशासनों में विशेष अर्थ में प्रयोग किए जाने वाले शब्द को 'पारिभाषिक शब्द' कहा जाता है तथा ऐसे पारिभाषिक शब्दों को समग्र रूप में 'पारिभाषिक शब्दावली' कहते हैं। स्वाभाविक है कि विभिन्न अनुशासनों के अपने-अपने पारिभाषिक शब्द होते हैं और कभी-कभी एक ही शब्द अलग-अलग अनुशासनों में अलग-अलग अर्थ वाले पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयोग में आता है। विषय की स्पष्टता तथा अर्थ की एकरूपता को बनाए रखने के लिए किसी भी अनुशासन में रचित होने वाले वाङ्मय में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग अनिवार्यतः होता ही है। प्राचीनतम काल से ही सहज और स्वाभाविक रूप से ऐसा होता आ रहा है। इसलिए यदि ऐसा स्वाभाविक रूप से घटित हो रहा हो तो पारिभाषिक शब्दावली का होना अपने आप में कोई विशेष बात नहीं है।

भारतीय भाषाओं और अनुवाद के संदर्भ में जब हम पारिभाषिक शब्दावली के प्रश्न पर विचार करने लगते हैं तो सबसे पहले हमारा ध्यान विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शब्दावली की ओर चला जाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शब्दावली का संबंध आधुनिक काल में हुई प्रगति से है, जो मुख्य रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित है। इसीलिए पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण का काम जिस विभाग को भारत सरकार द्वारा सौंपा गया है, उसे 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' नाम दिया गया है। यह आयोग विधि की शब्दावली को छोड़ कर अन्य सभी प्रकार के पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का कार्य करता है, जिनमें कृषि, आयुर्विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी की शब्दावली भी शामिल है। इन सभी प्रकार की शब्दावलियों को संक्षेप में 'पारिभाषिक शब्दावली' तथा विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की शब्दावली को 'वैज्ञानिक शब्दावली' कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, अधिक व्यापक अर्थ में सभी प्रकार की शब्दावलियों को 'पारिभाषिक शब्दावली' कह दिया जाता है।

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली की विकास-यात्रा तथा विकास-प्रक्रिया पर विचार करते समय सबसे पहले हमारा ध्यान इस बात की ओर चला जाता है कि आधुनिक काल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित प्रगति में पश्चिमी देशों की अग्रणी भूमिका रही है। इस मामले में हमारा देश, अधिकांशतः पश्चिम का अनुगामी रहा है। पश्चिमी देशों की भाषाओं में वैज्ञानिक साहित्य लगातार रचा जाता रहा है और उन भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण सहज रूप से होता आ रहा है। स्पष्टतः ऐसी स्थिति में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण की समस्या ही पैदा नहीं होती है। सहज विकास-प्रक्रिया की इस स्थिति में पारिभाषिक शब्दावली अपने आप बनती चलती है। किंतु हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं की स्थिति पश्चिमी देशों की भाषाओं से भिन्न रही है, उसका कारण यह है कि पश्चिमी देशों का वैज्ञानिक साहित्य हमारे यहाँ अंग्रेज शासकों और उनकी भाषा अंग्रेजी के माध्यम से पहुँचा है और धीरे-धीरे हमारे यहाँ अंग्रेजी ही हावी होती चली गई है। स्वाभाविक है कि ऐसी स्थिति में अंग्रेजी में उपलब्ध विपुल वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करने के लिए पारिभाषिक शब्दों को गढ़ने की आवश्यकता शुरू से ही पैदा हो गई थी, जो अभी तक लगातार बनी हुई है।

भारतीय भाषाओं के मामले में विडंबनापूर्ण स्थिति यह है कि संस्कृत में समृद्ध शास्त्रीय परंपरा होते हुए भी आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली को लेकर हमारी भाषाएँ समय के साथ चलने में लगभग असमर्थ ही रहीं। इसका एक कारण तो यह है कि हमारी अपनी भाषाओं में वैज्ञानिक साहित्य के लेखन की परंपरा विकसित नहीं हो पाई है। यदि हमारी भाषाओं में वैज्ञानिक साहित्य के लेखन की परंपरा विकसित हुई होती तो पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण भी सहज रूप से हो गया होता।

इसी से जुड़ा हुआ दूसरा कारण यह है कि 19वीं शताब्दी तक यूरोप में विज्ञान का जो विकास हुआ था, भारत उससे लगभग अपरिचित ही रह गया था। न्यूटन, कॉपरनिक्स, बॉयल, डार्विन आदि अनेक वैज्ञानिकों की खोजों और आविष्कारों से हमारा परिचय बहुत अधिक विलंब से हुआ। भौतिकी, रसायन विज्ञान, शिल्प, आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में पश्चिमी देशों में हुई प्रगति के बारे में हमें कुछ भी पता न था।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अतिरिक्त हमारी वर्तमान विधि-व्यवस्था भी अंग्रेज शासकों के द्वारा स्थापित की गई थी तथा उसमें मुख्य रूप से अंग्रेजी और इसके अलावा फारसी भाषा की ही पारिभाषिक शब्दावली चलती है। सारे अधिनियमों, दंड संहिता आदि का अनुवाद करते समय भी कानून की पारिभाषिक शब्दावली और विधि क्षेत्र की विशेष शैली की ओर ध्यान चला जाना स्वाभाविक बात है।

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली की विकास-प्रक्रिया को इसी पृष्ठभूमि में समझा जा सकता है। उक्त पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली की विकास-प्रक्रिया को यहाँ पर दो भागों में बाँट कर प्रस्तुत किया जा रहा है – सहज विकास-प्रक्रिया; और नियोजित विकास-प्रक्रिया।

9.2.1 सहज विकास-प्रक्रिया

पारिभाषिक शब्दावली का सहज विकास मौलिक लेखन तथा अनुसंधान के साथ-साथ होता चलता है। ऐसा तब होता है, जब किसी नई संकल्पना, उपकरण आदि का नामकरण, उसके प्रवर्तक या आविष्कर्ता वैज्ञानिक अथवा तकनीकी विशेषज्ञ द्वारा स्वयं ही किया जाता है। इस प्रकार किसी वैज्ञानिक या विशेषज्ञ द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला पारिभाषिक शब्द आरंभ में ही अपनी जड़ें जमा लेता है और प्रयोग के द्वारा उसे अपने आप ही स्वीकृति मिल जाती है। इस प्रकार स्वीकृति मिल जाने के बाद नई संकल्पना, उपकरण आदि के प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्द उन शब्दकोशों में स्थान पा लेते हैं। अर्थात नए पारिभाषिक शब्द का पहले प्रयोग किया जाता है और बाद में उसे शब्दकोश में स्थान मिलता है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के पूर्व-अध्यक्ष प्रो. सूरजभान सिंह ने शब्दावली की इस सहज विकास प्रक्रिया को उद्घाटित करते हुए 'अनुवाद शतक' (भाग 1) में प्रकाशित अपने आलेख 'पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद प्रक्रिया' में लिखा है कि 'पारिभाषिक शब्दों का विकास उन स्थितियों में होता है जहाँ नई संकल्पनाओं को जन्म देने वाला व्यक्ति ही उनका नामकरण करता है। ये नाम या शब्द लेखों, पुस्तकों और व्याख्यानों के माध्यम से प्रयोक्ताओं तक पहुँचते हैं। कुछ समय तक वे समाज की प्रयोगशाला में एक प्रकार के परिवीक्षा-काल से गुजरते हैं और यदि इस दौरान वे प्रचलन में बने रहें तो उन्हें सामाजिक स्वीकृति मिल जाती है और वे भाषा तथा शब्दकोश के अंग बन जाते हैं। जो शब्द इस दौरान प्रयोग में अपने को जीवित नहीं रख पाते उनका स्वतः लोप हो जाता है।' (पृ.165) पारिभाषिक शब्दों के निर्माण तथा प्रचलन की यही सबसे सहज विधि है। पूर्व सोवियत संघ के तत्कालीन राष्ट्रपति गोर्बाचोव द्वारा प्रयुक्त 'ग्लास्नोस्त' और 'पेरेस्त्रोइका' नामक पारिभाषिक शब्द अपने विशिष्ट अर्थ-संदर्भ में संचार माध्यमों के जरिए विश्व में रातोंरात प्रचलित हुए। यह शब्दावली के सहज विकास प्रक्रिया का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण के इतिहास पर विचार करते समय शब्दावली-निर्माण की सहज विकास-प्रक्रिया के रूप में वैज्ञानिक लेखन की ओर ध्यान चला जाना स्वाभाविक है, जो कि शब्दावली-निर्माण का व्यावहारिक पक्ष है। दूसरे शब्दों में, शब्दावली-निर्माण की सहज विकास-प्रक्रिया मौलिक लेखन के रूप में ही सामने आती है। इस दिशा में उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तथा बीसवीं शताब्दी के आरंभ में कुछ प्रगति हुई थी, जिसका उल्लेख श्रीनारायण चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक *'आधुनिक हिंदी साहित्य का आदिकाल'* में किया है। उन्होंने ऐसी पुस्तकों की सूची दी है जिनका प्रकाशन 1857-1908 के बीच हुआ था। उनके द्वारा दी गई इस सूची को उमा भट्ट ने भी अपने लेख *'अक्षांश दर्पण'* की पारिभाषिक शब्दावली' में अंशतः उद्धृत किया है (भट्ट 2006, पृ. 224)। इनके अतिरिक्त हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा डॉ. सत्यप्रकाश तथा बलभद्र प्रसाद मिश्र के 1971 में प्रकाशित 'मानक अंग्रेजी-हिंदी कोश' की भूमिका में (विशेष रूप से पृ. 40-45 तक) इस तरह की कुछ जानकारी दी गई है। इन्हीं स्रोतों के आधार पर इस काल में प्रकाशित वैज्ञानिक पुस्तकों के कुछ उदाहरण आगे दिए जा रहे हैं।

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में हिंदी ही शिक्षा का माध्यम थी, इसलिए वहाँ के अध्यापकों ने विज्ञान की पुस्तकें लिखीं। प्रोफेसर रामशरणदास ने वैश्लेषिक रसायन की पुस्तकें लिखीं। प्रो. महेशचरण सिंह ने रसायन और विद्युतशास्त्र की पुस्तकें लिखीं। लक्ष्मीशंकर मिश्र ने *सरल त्रिकोणमिति* पुस्तक लिखी। सुधाकर द्विवेदी ने गणित की तीन पुस्तकें प्रकाशित कीं – *चलन-कलन* (1886), *चलराशि-कलन* तथा *समीकरण-मीमांसा*।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में प्रकाशित कुछ अन्य पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं – *कृषि कौमुदी* – लाल प्रतापसिंह (1856), *गति विद्या* – लक्ष्मीशंकर मिश्र (1857), *खगोल विद्या* – कुंज बिहारी लाल (1857), *रसायन संग्रह* – विश्वंभरनाथ (1868), *बीज गणित* – आदित्य राम महाचार्य (1874), *पदार्थ विज्ञान* – लक्ष्मीशंकर मिश्र (1875), *व्यक्त गणित* – बापूदेव शास्त्री (1876), *दौत बिजली* – मोहन लाल (1878), *क्षेत्र संहिता* – प्रतापसिंह (1880), *निर्माण विद्या* – नवीन चद्र राय (1882), *क्षेत्रमाप प्रकाशिका* – ज़काउल्ला (1885), *भूतत्व प्रकाश* – राम प्रकाश लाल (1885, पटना), *शिल्प संग्रह* – रामचरण पाठक (1886), *प्रश्नोत्तर जड़तत्व विज्ञान* – मथुरा दास (1887), *जीवजंतु* – लक्ष्मीनाथ सिंह (1890), *पशु चिकित्सा* – शिवचंद्र मौलि (1896), *ढोरों का इलाज* – लक्ष्मणसिंह (1900), *रसायनशास्त्र* – महेश चरण सिंह (1909) आदि।

इनके अतिरिक्त एक अन्य उल्लेखनीय पुस्तक है – *अक्षांश दर्पण*। पंडित नैन सिंह रावत इस पुस्तक के लेखक हैं। 25 पृष्ठों की इस पुस्तक का प्रकाशन 1871 में आगरा से हुआ था। यह पुस्तक तारीख और अक्षांश जानने के विषय में है। नैन सिंह की पुरानी डायरियों के साथ इस पुस्तक का अभी कुछ वर्ष पूर्व ही पुनर्प्रकाशन किया गया है। इकाई के भाग 9.6 में इस पुस्तक का उल्लेख किया गया है। *अक्षांश दर्पण* की पारिभाषिक शब्दावली का विस्तृत विश्लेषण उमा भट्ट ने प्रस्तुत किया है। उमा भट्ट लिखती हैं कि पंडित नैन सिंह ने हिंदी, अंग्रेजी और फारसी तीनों ही भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं – 'नलिका वंधन यंत्र' जिसे फारसी में रुवा कहते हैं; कोण अर्थात इर्तफा; दो मैरीडियन याने निस्फउन्निहार अर्थात निहायत छोटी और निहायत बड़ी ऊँचाई में; डिक्लाइनेशन अर्थात झुकाव आदि। पण्डित नैन सिंह रावत की भाषा का एक नमूना आगे दिया जा रहा है :

> 'यह यंत्र इस ढब का बना रहता है कि एक वृत्तपाद की परिधि के 90 समअंश किए हुए रहते हैं और उस वृत्तपाद के केंद्र में एक छेद रहता है और उस छेद में एक बारीक तागा देकर तागे के एक छोर पर शीशे की एक गोली लटकी हुई रहती है।'

स्पष्ट है कि उन्नीसवीं शताब्दी में ही हिंदी में वैज्ञानिक लेखन शुरू हो गया था और विद्यार्थियों के लिए गणित, भौतिकी, रसायन, संख्या शास्त्र, निर्माण विद्या, सर्वेइंग, खगोल विद्या, भूगर्भ, गतिविद्या, प्राणिशास्त्र, पशुचिकित्सा आदि विविध विषयों की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं। इस सूची में और भी कई पुस्तकें संभवतः शामिल की जा सकती हैं, जिनके विषय में पूरी जानकारी अभी उपलब्ध नहीं है। इसलिए हम कह सकते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी में हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास सहज रूप से हो रहा था। यह पारिभाषिक शब्दावली संस्कृत पर आधारित थी। कुछ पुस्तकों में फारसी का भी प्रभाव था, जो उस काल में प्रशासन तथा शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी की अपेक्षा अधिक प्रचलित थी। हिंदी को विज्ञान के क्षेत्र में सशक्त बनाने के लिए ही विभिन्न वैज्ञानिक विषयों की पुस्तकें लिखी गई थीं, जिनमें से कुछ की सूची ऊपर दी गई है। परंतु इस प्रकार के लेखन को प्रयोग या प्रयास ही कहा गया है, जो किसी सुस्थापित लेखन परंपरा का अंग नहीं बन पाया (विज्ञान गरिमा सिंधु, पृ. 148-149)।

पारिभाषिक शब्दावली की सहज विकास-प्रक्रिया बीसवीं शताब्दी में और उसके बाद भी जारी रही है। शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी का वास्तविक प्रयोग सीमित होता चला गया। इसलिए मौलिक वैज्ञानिक लेखन में भी अपेक्षित प्रगति नहीं हो पाई। कुल मिलाकर देखा जाए तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि पारिभाषिक शब्दावली की जो सहज विकास-प्रक्रिया उन्नीसवीं शताब्दी में तथा बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में शुरू हुई थी, वह लगातार बाधित होती गई है।

9.2.2 नियोजित विकास-प्रक्रिया

पारिभाषिक शब्दावली की नियोजित विकास-प्रक्रिया भाषा-नियोजन का अंग है। आप इस इकाई के भाग 9.2.1 में यह पढ़ चुके हैं कि पारिभाषिक शब्दावली का सहज विकास मौलिक लेखन तथा अनुसंधान के साथ-साथ होता चलता है और यह तब होता है जब किसी नई संकल्पना, उपकरण आदि का नामकरण, उसके प्रवर्तक या आविष्कर्ता वैज्ञानिक अथवा तकनीकी विशेषज्ञ द्वारा स्वयं ही किया जाता है। वहीं, नियोजित विकास-प्रक्रिया इससे भिन्न है।

पारिभाषिक शब्दावली के विकास से संबंधित नियोजित प्रक्रिया के अंतर्गत किसी अन्य भाषा में निर्मित और व्यवहृत पारिभाषिक शब्द को अपनी भाषा में इस्तेमाल में लाने के नियोजित प्रयास करना होता है। पारिभाषिक शब्दावली के विकास इस नियोजित प्रक्रिया पर विचार व्यक्त करते हुए प्रो. महेंद्र सिंह राणा का कहना है कि 'सायास या नियोजित विकास-प्रक्रिया का अभिप्राय है किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा व्यवहार में लाए जाने वाली मूल भाषा के तकनीकी रूपों के आधार पर स्व-भाषा में नवीन भाषा-रूपों को विकसित करने का प्रयास करना। यह प्रयास मूल/स्रोत भाषा के समान सहज या प्राकृतिक न होकर एक प्रकार की कृत्रिमता लिए होता है क्योंकि यह गृहीता भाषा की सहज या प्राकृतिक विकास-प्रक्रिया नहीं होती। इस प्रकार के विकास को नियोजित करना पड़ता है ताकि नवीन भाषा-रूपों के विकास को सही दिशा दी जा सके।' (पृ.366)

यदि कोई देश अपने यहाँ सहज रूप से पारिभाषिक शब्दावली विकसित करने में पिछड़ जाता है तो उसे नियोजित विकास-प्रक्रिया का ही मार्ग अपनाना पड़ता है। आप भाग 9.2.1 में पढ़ चुके हैं कि हमारे देश में उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तथा बीसवीं शताब्दी के आरंभ में कुछ प्रगति हुई थी, लेकिन वह लगातार बाधित भी हुई। इसलिए पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की सहज विकास की कोई सुदीर्घ परंपरा नहीं कही जा सकती। पारिभाषिक शब्दावली विकसित करने में पिछड़ जाने के कारण हमारे देश में इस संदर्भ में नियोजित विकास-प्रक्रिया के मार्ग को अपनाना गया। इस इकाई के अगले भाग 9.3 में शब्दावली निर्माण के जिस ऐतिहासिक विकासक्रम को दर्शाया जा रहा है, वह वास्तव में भारत में पारिभाषिक शब्दावली के विकास की नियोजित विकास-प्रक्रिया का ही अंग है।

9.2.3 सहज और नियोजित विकास-प्रक्रिया में अंतर

नियोजित विकास प्रक्रिया का सहज विकास-प्रक्रिया से सबसे बड़ा अंतर यह है कि पहले तो, मुख्यतः, अनुवाद-पद्धति के द्वारा पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया जाता है, उनके कोश और शब्द-संग्रह बनाए जाते हैं और फिर उनका प्रयोग करने का प्रयास किया जाता है। प्रयोग के द्वारा उनकी स्वीकृति अथवा अस्वीकृति का पता चलता है और तब ऐसी नियोजित पारिभाषिक शब्दावली में संशोधन की आवश्यकता पड़ती है। नियोजित विकास-प्रक्रिया की मुख्य विशेषता, या कहें, सबसे बड़ी कमी यह है कि इसमें वैज्ञानिक संकल्पना तथा पारिभाषिक शब्द के बीच में कोई मध्यस्थ भाषा रहती है और पारिभाषिक शब्दों का निर्माण इसी मध्यस्थ भाषा के आधार पर किया जाता है। इसलिए ऐसे पारिभाषिक शब्द कभी-कभी सटीक भी नहीं होते हैं और उनमें कृत्रिमता भी होती है। परंतु यह बात भी स्वीकार करनी ही होगी कि यदि कोई देश अपनी पारिभाषिक शब्दावली को विकसित करने में पिछड़ गया है तो उसे नियोजित विकास-प्रक्रिया का ही मार्ग अपनाना पड़ता है। हमारे देश की भी स्थिति ऐसी ही है।

9.3 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा पर विचार करने पर हम पाते हैं कि लगभग डेढ़-दो सौ साल पहले से ही हिंदी में पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करने के प्रयास शुरू हो गए थे। ये प्रयास निजी और आधिकारिक/ सरकारी दोनों ही स्तरों पर किए जाते रहे हैं। इसके अलावा, इस दिशा में आजादी के बाद सरकारी स्तर पर भी प्रयास किए गए हैं। आइए इन प्रयासों के संदर्भ में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा पर विचार करें।

9.3.1 स्वतंत्रता-पूर्व शब्दावली निर्माण के प्रयास

अंग्रेजों के आगमन से पहले हिंदी की वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का इतिहास शिवाजी महाराज के शासन-काल (1664-1680) में आरंभ हुआ माना जाता है। शिवाजी महाराज के आग्रह पर रघुनाथ पंत ने तकनीकी शब्दों के निर्माण का काम किया था। तकनीकी शब्दों का संकलन कर्णपूर और दलपति राय ने भी तैयार किया था। शिवाजी महाराज ने मराठी में *'राज्यव्यवहार कोश'* तथा *'मराठी शब्दों का विश्वकोश'* भी तैयार करवाया था।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ से भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली पर काम आरंभ हो गया था। जैसा कि भाग 9.2.1 में यह उल्लेख किया ही जा चुका है, सत्यप्रकाश तथा बलभद्र प्रसाद मिश्र द्वारा संपादित और हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 1971 में प्रकाशित *'मानक अंग्रेज़ी-हिंदी कोश'* की भूमिका में (विशेष रूप से पृ. 40-45 तक) इसका वर्णन मिलता है। उसी के आधार पर उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रकाशित हुए कुछ शब्दकोशों की सूची आगे दी जा रही है:

- Dictionary of Mohammadan Law, Bengal Revenue Terms, Hindoo and Other Words, Used in East Indies, with Applications. यह शब्दकोश 1805 में लंदन से प्रकाशित हुआ था। इसमें रोमन और अरबी लिपियों का प्रयोग किया गया था।
- An English and Hindustani Naval Dictionary of Technical Terms and Sea-Phrases. – इस शब्दकोश के रचयिता थे जॉसेफ टेलर।
- A Dictionary of Commercial Terms, with Their Synonyms in Various Languages - 1850 में प्रकाशित इस शब्दकोश के संपादक थे अलेक्ज़ेण्डर फॉकनर।
- Kachahari Technicalities and Vocabulary of Law Terms - 1853 में प्रकाशित इस शब्दकोश के संपादक थे पैट्रिक कार्नेगी।
- English Hindustani Law and Commercial Dictionary of Words and Phrases used in Civil and Criminal Revenue and Commercial Affairs - 1858 में प्रकाशित इस शब्दकोश के संपादक थे एस.डब्ल्यू फ़ेलन।
- A Vocabulary of English-Hindustani for the Use of Military Students।

अंग्रेजों के शासन-काल में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण के लिए सन् 1871 में एक समिति गठित की गई थी। इस समिति को वैज्ञानिक और विधि शब्दावली के सिद्धांत निर्धारित करने का काम सौंपा गया था। इस समिति के एक प्रमुख सदस्य थे – राजेंद्रलाल मित्र, जिन्होंने समिति के निर्णयों को सन् 1877 में प्रकाशित किया था। 'A Scheme for the Rendering of European Scientific Terminology into the Vernaculars of India' शीर्षक उनका वह अभिलेख भारतीय भाषाओं में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की दिशा में पहला महत्त्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। जैसा कि इस अभिलेख के शीर्षक से भी स्पष्ट है, आधुनिक पारिभाषिक शब्दावली से तात्पर्य है – यूरोपीय वैज्ञानिक शब्दावली (European Scientific Terminology)। इस प्रयास का क्या परिणाम निकला – इस विषय में कुछ कह सकना संभव नहीं है।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत से भारत की शिक्षा संस्थाओं में विज्ञान की शिक्षा का प्रसार होने लगा था और तब ऐसे शब्दकोशों की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ गई थी। बंगीय साहित्य परिषद द्वारा अंग्रेजी-बांग्ला तथा बंबई प्रेसिडेंसी द्वारा अंग्रेजी-मराठी के पारिभाषिक कोश बनाने की दिशा में काम शुरू हो गया था।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना (16 जुलाई 1893) के आरंभिक वर्षों में ही सात विषयों की पारिभाषिक शब्दावली बनाने का काम शुरू किया। इसके संपादकों में थे – माधव राव सप्रे, महावीर प्रसाद द्विवेदी, सुधाकर द्विवेदी, श्यामसुंदरदास और ठाकुर प्रसाद खत्री। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने सन् 1901 में गणित (संपादक श्यामसुंदरदास), 1902 में दर्शन (महावीर प्रसाद द्विवेदी) और भौतिकी (संपादक ठाकुर प्रसाद खत्री) के कोश प्रकाशित किए। बाद में भूगोल, रसायन तथा अन्य विषयों की शब्दावली को सम्मिलित करके एक संपूर्ण कोश भी सभा ने प्रकाशित किया। सन् 1912 में ठाकुर प्रसाद खत्री का बनाया *'व्यापारिक पदार्थ कोश'* प्रकाशित हुआ। नागरी प्रचारिणी सभा ने हिंदी की *'कृषि शब्दावली'* भी प्रकाशित की जिसे प्रोफ़ेसर प्यारेलाल गर्ग ने तैयार किया था।

इन प्रयासों से शब्दावली-निर्माण को गति मिली तथा और भी कई कोश प्रकाशित हुए। प्रयाग स्थित विज्ञान परिषद (स्थापना वर्ष 1913) ने सन् 1930 में *'वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली'* प्रकाशित की। सुख संपत राय भंडारी ने सन् 1926 में एक बृहत् पारिभाषिक कोश का काम आरंभ किया जो *The Twentieth Century English-Hindi Dictionary* नाम से छह खंडों में प्रकाशित हुआ। बाद में भारतीय हिंदी परिषद् ने *'अंग्रेजी-हिंदी वैज्ञानिक कोश'* (संपादक सत्यप्रकाश और सहकारी संपादक निहालकरण सेठी, फूलदेव सहाय वर्मा, ब्रजमोहन, महावीर प्रसाद श्रीवास्तव आदि) के दो भाग प्रकाशित किए। यह काम अधूरा ही रह गया, क्योंकि बाद में केंद्रीय सरकार ने यह काम बड़े पैमाने पर शुरू कर दिया था। भारतीय हिंदी परिषद् में शुरू किए अपने कार्य के आधार पर बाद में निहालकरण सेठी ने *'भौतिकी* की शब्दावली' (प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन, उत्तर प्रदेश) प्रकाशित की तथा ब्रजमोहन ने *'गणितीय कोश'* (चौखंबा संस्कृत सीरीज़, बनारस, 1954) प्रकाशित किया।

बीसवीं शताब्दी के मध्य में प्रकाशित कुछ अन्य कोशों का विवरण इस प्रकार है :

- राहुल सांकृत्यायन और ए.सी. सेनगुप्त के संपादन में *'प्रत्यक्षशारीर कोश'*, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1951;
- *'भूतत्वविज्ञान कोश'*, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1953;
- *'चिकित्साविज्ञान कोश'*, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1955;
- ब्रजकिशोर मालवीय का *'जीवरसायन कोश'*, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, संवत् 2009 (सन् 1952);
- केशव प्रसाद मिश्र कृत *'वैद्युत शब्दावली'*।

लगभग इसी काल में महेश्वर सिंह सूद का *'जंतुविज्ञान कोश'* भी प्रकाशित हुआ। कामिल बुल्के कृत *A TECHNICAL-HINDI GLOSSARY* का प्रकाशन सन् 1955 में हुआ।

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मानविकी-सामाजिक विज्ञान के भी कई कोश प्रकाशित हुए जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं : *'व्यापारिक कोश'* – सं. ब्रजवल्लभ, 1908; *'राजनीति शब्दावली'* – भगवानदास केला, 1927; *'अर्थशास्त्र शब्दावली'* – भगवानदास केला, 1932; *'अर्थशास्त्र शब्दावली'* (पुनर्प्रकाशित) – भगवानदास केला, दयाशंकर दुबे, 1949 आदि।

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रकाशित शासन और विधि से संबंधित कुछ प्रमुख कोशों के नाम इस प्रकार हैं : *'सयाजीराव शासनकल्पतरु'* – बड़ौदा रियासत द्वारा 1932 में प्रकाशित; *'शासन-शब्दसंग्रह'* – *हरिहर निवास द्विवेदी, 1940; 'न्यायालय-शब्दकोश'* – हिंदी सभा, सीतापुर, 1948; *न्यायालय-शब्दसंग्रह* – जगदीश शरण अग्रवाल, बरेली, 1948; *'शासन-शब्दकोश'* – राहुल सांकृत्यायन, विद्यानिवास मिश्र, प्रभाकर माचवे, हिंदी साहित्य सम्मेलन, संवत् 2005 (सन् 1948); *'आरक्षिक (पुलिस) शब्दावली'* – रामचंद्र वर्मा तथा गोपालचंद्र सिंह, संवत् 2005 (सन् 1948) आदि।

पारिभाषिक शब्दावली संबंधी कोश निर्माण में डॉ. रघुवीर का नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय है। डॉ. रघुवीर का मानना था कि पारिभाषिक शब्दावली बनाने के लिए संस्कृत की धातुओं और उपसर्गों तथा प्रत्ययों को आधार बनाया जाना चाहिए। उनका कहना था कि संस्कृत की प्रचलित 520 धातुओं के साथ 20 उपसर्ग और 80 प्रत्यय जोड़ कर लाखों शब्द बनाए जा सकते हैं। मात्र 'गम्' धातु से 180 शब्द सहज ही बन जाते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं – 'प्रगति', 'परागति', 'परिगति', 'प्रतिगति', 'गतक', 'अनुगति', 'अधिगति', 'अपगति', 'अतिगति', 'आगति', 'अवगति', 'उपगति', 'उद्गति', 'सुगति', 'संगति', 'निगति', 'निर्गति', 'विगति', 'दुर्गति', 'अवगति', 'अतिगति', 'गति', 'गंतव्य', 'आगमन', दुर्गम', दुर्गम्य', 'दुर्गनीय', 'गम्य', 'गमनीय', 'गमक', 'निगम', 'जंगम', 'निगमित, 'निर्गमन', 'गम्यमान', 'गत्वर', 'गमनिका' आदि।

अपनी सैद्धांतिक अवधारणा को व्यावहारिक रूप देते हुए डॉ. रघुवीर ने विभिन्न विद्वानों के सहयोग से जिस शब्दकोश का निर्माण किया, उसका नाम था – *A Comprehensive English-Hindi Dictionary of Governmental and Educational Words and Phrases*। 1931 में आरंभ हुआ उनका यह कार्य 1943 में जाकर प्रकाशित हुआ था। बाद में इसी शब्दकोश का संशोधित संस्करण 1955 में प्रकाशित हुआ। पारिभाषिक शब्दों का आंग्ल-हिंदी कोश *Consolidated Great Indian Dictionary of Technical Terms* नाम से प्रकाशित हुआ, जो डॉ. रघुवीर का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है। डॉ. रघुवीर का कोश-कार्य उनके द्वारा स्थापित संस्था 'सरस्वती विहार' के तत्वावधान में किया गया था। 'सरस्वती विहार' की स्थापना लाहौर (वर्तमान पाकिस्तान में) में हुई थी, जिसे भारत-विभाजन के बाद पहले नागपुर में और फिर दिल्ली में स्थानांतरित करना पड़ा था। डॉ. रघुवीर का यह कोश-कार्य अपने आप में असाधारण था, परंतु पूरी तरह संस्कृत पर आश्रित होने के कारण उसकी बहुत अधिक आलोचना हुई। आलोचना करने वालों में विशेषज्ञों के साथ-साथ राजनीतिक लोग भी शामिल थे। इसलिए पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में डॉ. रघुवीर के योगदान का सही मूल्यांकन नहीं हो सका है। आजकल प्रचलन में आ चुके 'दूरदर्शन', 'दूरभाष', 'पंजीकरण' जैसे शब्द डॉ. रघुवीर की ही देन हैं।

9.3.2 स्वतंत्रता के पश्चात शब्दावली निर्माण के प्रयास

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारत सरकार का ध्यान शब्दावली-निर्माण की ओर भी गया। इसके पीछे एक मुख्य प्रेरणा यह रही होगी कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी को पर्याप्त समर्थन प्राप्त था और इसलिए हिंदी को विज्ञान की भाषा के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण की आवश्यकता को महसूस करते हुए भारत सरकार ने वर्ष 1950 में 'वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड' की स्थापना की। समय-समय पर कई बार नाम बदलते रहने के बाद शब्दावली-निर्माण का काम करने वाले इस सरकारी विभाग को अब 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' नाम से जाना जाता है, जिसकी स्थापना औपचारिक रूप से 1 अक्तूबर 1961 को हुई थी। आयोग को अन्य कार्यों के साथ-साथ हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्द निर्माण करने का दायित्व सौंपा गया। आयोग हिंदी की तकनीकी शब्दावली के संकलन, निर्माण, समन्वय, प्रशिक्षण आदि की शीर्ष संस्था के रूप में प्रतिष्ठित है।

आयोग ने सबसे पहले 1955 में प्रशासन शब्दावली तथा पदनाम शब्दावली को अनंतिम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया था। बाद में, 1962 में इसका संशोधित/परिवर्धित संस्करण निकाला। उसके बाद से अब तक इसके कई संशोधित/परिवर्धित संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। अब यह 'प्रशासनिक शब्दावली' (Glossary of Administrative Terms) के नाम से उपलब्ध है। इसके अलावा, आयोग ने मानक शब्दावली तैयार करने के लिए ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं से संबंधित अनेक विषयवार शब्दावलियाँ, परिभाषा कोश आदि प्रकाशित किए हैं। इसके अतिरिक्त आयोग ने शब्द-संग्रह भी प्रकाशित किए हैं। आयोग ने 1973 में दो-दो खंडों में विज्ञान और मानविकी के बृहत पारिभाषिक शब्द-संग्रह प्रकाशित किए, जिसे तब तक प्रकाशित शब्दावलियों को एक-साथ संकलित, समन्वित करके संपादित किया था। आज आयोग विभिन्न विषय-क्षेत्रों के लगभग पाँच लाख पारिभाषिक शब्द विकसित कर चुका है और ये प्रयास आज भी जारी हैं।

9.4 पारिभाषिक शब्दावली का मानकीकरण : प्रयास और समस्याएँ

पारिभाषिक शब्दावली का मानकीकरण भी शब्दावली-निर्माण का ही एक अंग कहा जा सकता है। संस्थागत तथा व्यक्तिगत प्रयासों के फलस्वरूप जो पारिभाषिक शब्दावली हिंदी में बनी है और लगातार बनती जा रही है, उसमें कहीं-कहीं पर एकरूपता का अभाव है और कहीं एक ही संकल्पना के लिए एक से अधिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जबकि पारिभाषिक शब्दों में अर्थ की स्पष्टता तथा एकरूपता होना वांछनीय ही नहीं अनिवार्य भी होती है। इसी को दूसरे शब्दों में पारिभाषिक शब्दावली का मानकीकरण कहा जाता है। इस समस्या की ओर विशेषज्ञों ने पर्याप्त ध्यान दिया है। समय-समय पर केंद्रीय सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा भी इस संबंध में आदेश निकाला जाता है कि 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' द्वारा बनाई गई पारिभाषिक शब्दावली को मानक शब्दावली मानते हुए इसका प्रयोग सभी प्रकार के वैज्ञानिक साहित्य में किया जाना चाहिए। यहाँ तक कि उच्चतम न्यायालय ने भी अपने एक निर्णय में यही बात कही है। न्यायालय द्वारा दिया गया आदेश इस प्रकार है :

> 'It is clear from the Resolution (under which the Commission was set up) that the object of setting up the Commission was to evolve a uniform technical terminology for Hindi and other Indian languages. That uniformity is necessary in the use of technical terms cannot be doubted....Therefore as long as the Commission operates, it is directed that the technical terminology evolved by the Commission be adopted in connection with the text-books being produced by the NCERT and other such bodies under the Union of India.'
>
> (प्रशासनिक शब्दावली (Glossary of Administrative Terms)
> वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, 2008, 'प्रस्तावना' से उद्धृत)

पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता को समाप्त करने एवं ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों में एक जैसी मानक शब्दावली प्रयुक्त करने की दृष्टि से उच्चतम न्यायालय के उपर्युक्त आदेश का विशेष महत्त्व है।

परंतु वस्तुस्थिति इससे भिन्न है। इसीलिए पारिभाषिक शब्दावली के मानकीकरण की अपने आप में एक अलग समस्या है। उसके मानकीकरण के प्रयास भी निरंतर किए जा रहे हैं।

पारिभाषिक शब्दावली का मानकीकरण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी किया जाता है। यह काम यूनेस्को, अंतर्राष्ट्रीय मानक संस्था (आई.एस.ओ.) तथा अन्य कई संगठन करते हैं। इस मानकीकरण के दो चरण होते हैं – पहले व्याख्या और परिभाषा के द्वारा किसी संकल्पना का अर्थ-निर्धारण किया जाता है और फिर उसे कोई नाम दिया जाता है, जिस तरह आविष्कार पहले होता है और उसका नामकरण बाद में। इस तरह निर्धारित नाम पूरी तरह सटीक हो – ऐसा हमेशा संभव नहीं है। परंतु एक ही संकल्पना के लिए एक ही स्वीकृत नाम का होना अत्यंत आवश्यक है। पारिभाषिक शब्दावली के मानकीकरण की यही मुख्य विशेषता है।

पारिभाषिक शब्दावली के मानकीकरण की समस्या के मुख्य रूप से दो पहलू माने जा सकते हैं। एक पहलू तो यह है कि अंग्रेजी के एक ही पारिभाषिक शब्द के लिए एक ही अर्थ में हिंदी में एक से अधिक समानकों का होना। उदाहरण के लिए:

- aviation विमानन, उड्डयन
- cavity कोटर, गुहिका, गुहा
- pathology रोगविज्ञान, विकृतिविज्ञान

इस तरह के शब्दों का मानक रूप अभी स्थिर नहीं हुआ है।

दूसरा पहलू यह है कि अंग्रेजी की मिलती-जुलती संकल्पनाओं के लिए हिंदी में उनके समानार्थी किसी भी शब्द का स्वच्छंद रूप से प्रयोग। उदाहरण के लिए रक्षा शब्दावली के अंतर्गत आने वाले इन शब्दों को लिया जा सकता है – assault, attack, charge, invasion। हिंदी में इनके लिए *'आक्रमण', 'हमला', 'धावा', 'चढ़ाई'* शब्दों का प्रयोग स्वच्छंद रूप से किया जाता है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने इनके लिए जो समानक निर्धारित किए हैं, वे इस प्रकार हैं :

- assault प्रहार
- attack आक्रमण
- charge धावा
- invasion चढ़ाई

एक अन्य उदाहरण भौतिकी के शब्दों motion, speed, velocity का लिया जा सकता है, जिनके लिए सामान्य भाषा में *'गति', 'चाल', 'वेग'* शब्दों का प्रयोग बदल-बदल कर किया जाता है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने इनके लिए जो समानक निर्धारित किए हैं, वे इस प्रकार हैं :

- motion गति
- speed चाल
- velocity वेग

इस तरह वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा पारिभाषिक शब्दावली का मानकीकरण किया जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि इस शब्दावली को अधिक-से-अधिक स्वीकृति मिले तथा उसका प्रयोग होता रहे। तभी इस शब्दावली में स्थिरता आ सकेगी। संक्षेप में पारिभाषिक शब्दावली के मानकीकरण की यही मुख्य समस्याएँ हैं।

9.5 सारांश

पारिभाषिक शब्दावली का विकास दो प्रकार से होता है – (1) सहज विकास-प्रक्रिया द्वारा; तथा (2) नियोजित विकास-प्रक्रिया द्वारा। सहज विकास-प्रक्रिया में वैज्ञानिक लेखन को शामिल किया जाता है तथा नियोजित विकास-प्रक्रिया में शब्दावली-निर्माण को। पश्चिमी देशों की भाषाओं में वैज्ञानिक साहित्य लगातार रचा जाता रहा है और उन भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण सहज रूप से होता आ रहा है। ऐसी स्थिति में वैज्ञानिक

शब्दावली के निर्माण की समस्या पैदा नहीं होती है। भारतीय भाषाओं के मामले में विडंबनापूर्ण स्थिति यह है कि संस्कृत में समृद्ध शास्त्रीय परंपरा होते हुए भी आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली को लेकर हमारी भाषाएँ समय के साथ चलने में लगभग असमर्थ ही रह गई हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारी अपनी भाषाओं में वैज्ञानिक साहित्य के लेखन की परंपरा विकसित नहीं हो पाई है। वैसे, सहज विकास-प्रक्रिया के रूप में हिंदी में वैज्ञानिक लेखन उन्नीसवीं शताब्दी में आरंभ हो गया था।

नियोजित विकास-प्रक्रिया के रूप में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण का काम बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में शुरू हुआ और आगे चल कर उसमें गति आती गई। शुरू में नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) और हिंदी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) ने यह काम अपने हाथों में लिया। व्यक्तिगत रूप से सुख संपत राय भंडारी और डॉ. रघुवीर ने शब्दावली-निर्माण में भारी योगदान किया। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत सरकार द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गई और उसके बाद से यह काम व्यापक स्तर पर किया जाने लगा। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का ध्यान पारिभाषिक शब्दावली के मानकीकरण की ओर भी गया है।

9.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की आवश्यकता पर ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकाश डालिए।
2. पारिभाषिक शब्दावली की सहज और नियोजित विकास-प्रक्रिया का अर्थ और अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. अंग्रेजों के आगमन से पहले हिंदी की वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का इतिहास क्या था?
4. पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण तथा कोशों के प्रकाशन में नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) के योगदान का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
5. पारिभाषिक शब्दावली के विषय में डॉ. रघुवीर के विचारों का संक्षेप में परिचय दीजिए।
6. 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत कीजिए।
7. पारिभाषिक शब्दावली के मानकीकरण से क्या तात्पर्य है तथा इस प्रकार के प्रयास की मुख्य विशेषता क्या है?

9.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- भट्ट, उमा 2006. 'अक्षांश दर्पण' की पारिभाषिक शब्दावली', *एशिया की पीठ पर : जीवन, अन्वेषण तथा लेखन* – पंडित नैन सिंह रावत, भाग – 2, संपा. – उमा भट्ट और शेखर पाठक, पहाड़, परिक्रमा, तल्ला डांडा, तल्लीताल, नैनीताल (उत्तराखंड)।
- राणा, महेंद्र सिंह 2003. *प्रयोजनमूलक हिंदी के आधुनिक आयाम,* आगरा, हर्षा प्रकाशन।
- *विज्ञान गरिमा सिंधु* 2000 : शब्दावली विशेषांक, अंक 32, नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा शब्दावली आयोग, भारत सरकार।
- मिश्र, सत्यप्रकाश तथा बलभद्र प्रसाद, 1971. *मानक अंग्रेजी-हिंदी कोश,* प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन।
- गुप्ता, नीता (संपा.), 2001. अनुवाद-शतक (खंड 1), नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।